30वाँ पुष्प
वि. सं. 2045
महावीर जन्म वांचना दिवस
भादवा सुदी 1 सोमवार, दिनांक 12 सितम्बर, 1988

मणिभद्र

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ
का मुखपत्र
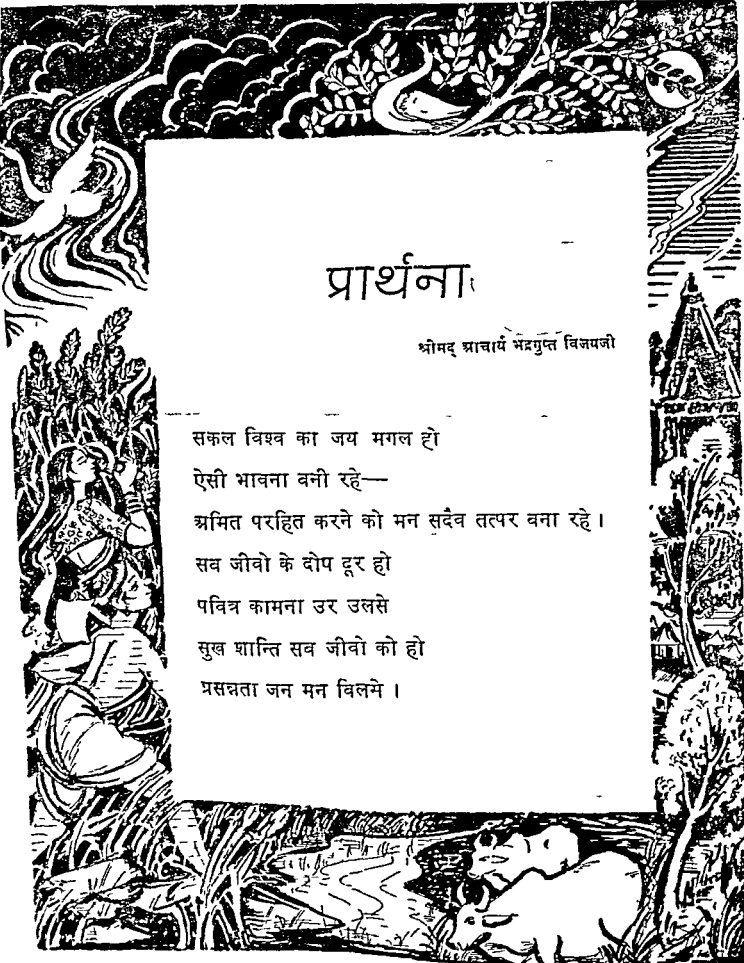
कार्यालय
श्री आत्मानन्द सभा भवन
घीवालों का रास्ता, जयपुर
फोन : 48540

प्रार्थना

श्रीमद् आचार्य भद्रगुप्त विजयजी

सकल विश्व का जय मगल हो
ऐसी भावना बनी रहे—
अमित परहित करने को मन सदैव तत्पर बना रहे ।
सब जीवो के दोप दूर हो
पवित्र कामना उर उलसे
सुख शान्ति सब जीवो को हो
प्रसन्नता जन मन विलसे ।

॥ सम्पादकीय ॥
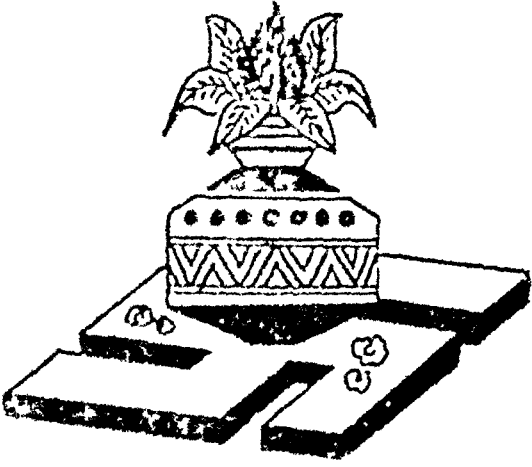
मणिभद्र
एक निरन्तर बहने वाला भक्ति प्रवाह

श्री जैन श्वे० तपागच्छ संघ जयपुर के वार्षिक मुख पत्र का 30वां पुष्प सब आदरणीय गुरुदेवों एवं प्रबुद्ध भाइयों एवं बहिनों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए अतीव आनन्द अनुभव हो रहा है।

गत वर्ष परम आदरणीय आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय सद्गुण सूरीश्वरजी महाराज साहब आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में चातुर्मास का लाभ मिला। आपकी मधुर वाणी से आचार्य हेमचन्द्राचार्य रचित योगशास्त्र एवं जैन रामायण के प्रेरणादायी उपदेश श्रवण का लाभ प्राप्त हुआ। जयपुर में प्रथम बार आचार्य महाराज द्वारा सूरि मंत्र के जाप की साधना में श्रीसंघ को तत्पर रहने का अवसर प्राप्त हुआ जो निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इसमें विभिन्न भाइयों ने अच्छा लाभ लिया।
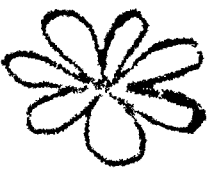
इस वर्ष संघ के परम सौभाग्य से परम विदुषी साध्वी जी आर्यारत्ना श्री चन्द्रकला श्री जी आदि ठाणा 6 के प्रेरणादायी चातुर्मास का लाभ मिल रहा है। इस चातुर्मास का लाभ प्राप्त होने का श्रेय आप श्री के समुदाय की पूज्या साध्वी श्री भद्रपूर्णा श्री जी महाराज को है जिन्होंने [illegible] में किशनगढ़ से मंदसौर जाते समय में यहां विराजमान रहने पर उनके गुणों से प्रभावित होकर पूज्या गुरुणी श्री चन्द्रकला श्री जी के चातुर्मास की इच्छा प्रकट कर दी। इसी बीच राजस्थान में विचरण करने वाले आचार्य महाराज एवं पन्यास जी की भी स्वीकृति की उज्ज्वल संभावनाएं थी। परन्तु ऐसा कहा जाता है कि [illegible] प्रबल है। [illegible] गुरुदेवों की जयपुर [illegible] है। [illegible] द्वारा जयपुर श्री संघ [illegible] है।

आदरणीया साध्वी साहब के जयपुर आगमन से ही सघ में भक्तिमय वातावरण की सौरभ फैल रही है। महाचमत्कारिक भक्तामर के श्रवण का एव अन्य अनुष्ठानो की जो महिमा जाग्रत की है वह अवर्णनीय है।

'मणिभद्र' हमारे सघ का एक सबल माध्यम है। सफल प्रवक्ता है। इसकी लोकप्रियता इसी से आंकी जा सकती है कि सभी क्षेत्रो में विचरित आचार्य महाराज एव साधु साध्वी साहब 'मणिभद्र' की प्रतीक्षा करते हैं।

इसकी लोकप्रियता का आधार इसकी भक्तिमय एव चिन्तनशील लेखन सामग्री है जो विद्वान् आचार्य, साधु साध्वीगण एव अन्य विद्वानों, विचारको एव समाज सेवको द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। जिनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना हम सब अपना पुनीत कर्तव्य समझते हैं। हमारा प्रयास रहता है कि लेखक के विचारो के प्रकटीकरण के एव पाठको के बीच में हम न आवें। तथापि कोई सामग्री विवादग्रस्त न हो, इस बात की सावधानी रखने का पूरा प्रयास किया जाता है।

इन सबका उद्देश्य आध्यात्मिक एव भक्तिमय वातावरण प्रस्तुत कर आत्मबोध के विचारकण प्रस्तुत करना है ताकि सबका आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो, तथा सघ में सगठन की अभिवृद्धि हो सके।

लेखो मे प्रकाशित विचार सघ मर्यादा में है तथापि व्यक्तिगत है अत सम्पादक मण्डल उसके लिए जवाबदेह नही है। इस अक में दक्षिण के प्रमुख तीर्थ कुलपाकजी के मूलनायक श्री आदीश्वर भगवान् का सुन्दर चित्ताकर्षक दर्शनीय चित्र प्रकाशित किया गया है।

सम्पादक मण्डल इस अक के प्रकाशन में विज्ञापनदाताओ के आर्थिक सहयोग एव उनकी शुभ कामनाओं, विज्ञापन प्राप्त करने में सहयोगियो का आभार प्रदर्शित करता है। आशा है वे सदैव इसके लिए उदारमना बने रहगे।

प्रकाशन कार्य में फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स धन्यवाद के पात्र हैं। प्रूफ रीडिंग में श्री राजमलजी सिंघी का सहयोग सराहनीय है।

यह अक सभी 'जीव करु शासन रसि' की भावना वृद्धि में सहायक हो—एव विश्व के सब जीवो का कल्याण हो—इसी भावना के साथ। जय मणिभद्र।

दिनाक 12-9-88, सोमवार
आत्मानन्द सभा भवन, जयपुर

सम्पादक मण्डल

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,
जयपुर

स्थायी प्रवृत्तियाँ

१. श्री सुमतिनाथ जिन मन्दिर : सम्वत् १७८४ में प्रतिष्ठापित २५६ वर्षीय सर्वाधिक प्राचीन मन्दिर जिसमें मूलनायक भगवान श्री सुमतिनाथ जी एवं ऊपर के कक्ष में मनोहारी कायोत्सर्ग महावीर स्वामी की मूर्ति आठ सौ वर्ष पुरानी विभिन्न प्राचीन प्रतिमाओं सहित ३१ पाषाण प्रतिमायें पंच परमेष्ठी के चरण व नवपद जी का पाषाण पट्ट, अधिष्ठायक देव परम प्रभावक चतुर्थ [illegible] मणिभद्र जी, श्री गौतम स्वामी, आचार्य विजय हीर सूरीश्वर आ० श्री विजयानन्द सूरीश्वर म० की पाषाण प्रतिमायें शासन देवी एवं चक्रेश्वरी देवी की अति प्राचीन एवं भव्य प्रतिमाओं सहित स्वर्ण अंकित [illegible] शिखर, शत्रुंजय, [illegible] तीर्थ, गिरनार, [illegible] [illegible] एवं [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] पट्ट

विद्यमान है। इसकी बनावट सुन्दर एवं मनोहारी है। ध्वज दण्ड जीर्ण होने के कारण इस वर्ष पन्यास जी श्री नित्यानन्द विजय जी के सान्निध्य मे ध्वज दण्ड पुनः अनुष्ठान पूर्ण वातावरण में प्रतिष्ठापित किया गया है।

२. भगवान् श्री ऋषभदेव स्वामी का मन्दिर, बरखेड़ा तीर्थ : जयपुर टोंक रोड पर जयपुर से ३० किलो मीटर दूर एवं शिवदासपुरा से २ कि. मी. पर बांयी ओर स्थित बरखेड़ा ग्राम मे यह प्राचीन मन्दिर स्थित है। इसका इतिहास लगभग तीन सौ वर्ष पुराना बताया जाता है। प्रति वर्ष श्री संघ के तत्वावधान में फाल्गुन माह में आयोजित वार्षिकोत्सव में प्रातःकालीन सेवा पूजा, दिन में प्रभु पूजन एवं मध्याह्न में साधर्मी वात्सल्य का आयोजन श्री संघ की ओर से सम्पन्न होता है। जिसमें श्वे० समाज के सब आम्नाय के भाई-बहिन भाग लेते हैं। जिनेश्वर भगवान् आदीश्वर की प्रतिमा अत्यन्त भव्य और दर्शनीय है। तीर्थ स्थल सुरम्य सरोवर के किनारे स्थित होने से रमणीक तो है ही आगन्तुको के लिए शांत वातावरण है जहां अपूर्व शांति मिलती है। इस बार गांव के सब घरों में मिठाई वितरित की गई तथा पशुओं के लिए चारा वितरित किया गया। काम मे लिए गए वस्त्रों का वितरण किया गया।

३. भगवान् श्री शांतिनाथ स्वामी का मन्दिर, चन्दलाई : यह मन्दिर भी शिवदासपुरा से २ कि. मी. दाहिनी ओर चन्दलाई कस्बे मे स्थित है। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा सम्वत् १७०७ में होना ज्ञातव्य है। लगभग साठ हजार की लागत से मन्दिरजी का जीर्णोद्धार व मूल गम्भारे का नव निर्माण करवा कर मार्गशीर्ष वदी ५ सं. २०३६ को आ. श्रीमद् विजय मनोहर सूरीश्वर म. सा. की निश्रा मे पुनः प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। प्रतिवर्ष मार्ग-माह में [illegible] पूजा एवं साधर्मी वात्सल्य होता है।

दस हजार की लागत के साथ ही बरामदे एव कमरे का निर्माण कराया गया।

४ भगवान् श्री सीमधर स्वामी का मन्दिर, जनता कॉलोनी, जयपुर इस मन्दिर की स्थापना डॉ भागचन्दजी छाजेड द्वारा सन् १९५७ मे की और सन् १९७५ मे यह मन्दिर श्री सघ को सुपुर्द किया गया। यहाँ पर श्री सीमन्धर स्वामी के शिखर बन्द भव्य मन्दिर का निर्माण कार्य सन् १९८२ मे प्रारम्भ किया गया था, उसका भव्य अजनशाला का प्रतिष्ठा महोत्सव सन् १९८५ में परम उपकारी आचार्य भगवत श्रीमद् कलापूर्ण सूरीश्वरजी के हाथो कराया गया था और कार्य तीव्र गति से जारी रखने की भावना है ताकि ये कार्य शीघ्र पूरा हो सके एव आराधना का प्रमुख केन्द्र बन जाये। परन्तु सोमपुरा की लापरवाही के कारण इसमें देर होने से क्षमाप्रार्थी हैं, अब काम शीघ्र कराने की व्यवस्था करली गई है। दानदाताओ का आर्थिक सहयोग प्रार्थनीय है।

५ श्री जैन कला चित्र दीर्घा भारतवर्ष के प्रमुख तीर्थ स्थानो मे प्रतिष्ठित जिनेश्वर भगवानो एव जिनालयो के भव्य एव अलौकिक चित्र, जैन सस्कृति की महान् विरासत का अपूर्व मनोहारी प्रेरणादायी सकलन है।

६ भगवान् महावीर का जीवन परिचय भित्ति चित्रों मे स्वर्ण मडित विभिन्न रगो मे कलाकार की अनूठी कला का भव्य प्रदर्शन, अल्प पठन एव दर्शन मात्र से भगवान् के जीवन मे घटित घटनाओ की पूर्ण जानकारी सहित अत्यन्त कलात्मक भित्ती चित्रो के दर्शन का अलभ्य अवसर।

७ आत्मानन्द सभा भवन विशाल उपाश्रय एव आराधना स्थल जिसमे शासन प्रभावक विभिन्न आचार्य भगवन्तों मुनिवृन्दो एव सघ के अगेवानो एव समाज सेवको के चित्रो का अद्वितीय सग्रह एव आराधना का शात एव प्रेरणादायी मनोरम स्थल। अभी हाल ही मे यहाँ शत्रुजय पट्ट भी लग गया है जो दर्शनीय है।

८ श्री वर्धमान आयम्बिल शाला परम पूज्य उपाध्याय श्री धर्मसागर जी महाराज की सद् प्रेरणा से सम्वत् २०१२ मे स्थापित आयम्बिल शाला मे प्रतिदिन आयम्बिल की समुचित व्यवस्था के साथ गर्म जल की सदैव पृथक् मे व्यवस्था उपलब्ध है, सब सघो को आयम्बिल का लाभ लेने का सौभाग्य यहाँ प्राप्त होता है।

९ वर्धमान आयम्बिल शाला के हॉल का पुनर्निर्माण कराया गया है। स्वय अथवा परिजना मे से किसी का भी फोटो लगाने का ११११) रु नकरा। इसमे योगदान कर्ताओ के नाम भी पट्ट पर अकित किये जाते हैं। स्मृति को स्थायी रखने सहित आयम्बिल शाला मे योगदान दो तरफा लाभ।

१० श्री आत्मानन्द जैन धार्मिक पाठशाला चरित्र निर्माण एव धार्मिक शिक्षा की सायकालीन व्यवस्था जिसमे सुयोग्य प्रशिक्षक महोदय द्वारा प्रशिक्षण की व्यवस्था। इस वर्ष सुयोग्य प्रशिक्षक जी की उपलब्धि के कारण सौभाग्य से इसे पूर्ण उत्साह से प्रारम्भ किया गया।

११ श्री जैन श्वे भोजनशाला जयपुर से बाहर से पधारे सार्धमिक भाई बहिनो के लिए एव स्थानीय सार्धमिक भाई-बहिनो के लिये निर्दोष आहार हेतु सार्धमिक सेवा योजना के तहत आचार्य कला पूर्ण सूरीश्वर के सद्उपदेश से धनतेरस '८६ को स्थापित भोजनशाला जिसमे अब तक ४,००० भाई-बहिन लाभ ले चुके हैं। इस भोजनशाला के प्रारम्भ होने से बाहर से पधारने वाले राजकाज, मेडिकल कार्य एव विद्यार्थियो को निर्दोष आहार की व्यवस्था उपलब्ध है।

१२. **श्री जैन श्वे. मित्र मण्डल पुस्तकालय एवं वाचनालय :** श्रीमान् रतनचन्दजी कोचर के सद् प्रयत्नों से सन् १६३२ में स्थापित पुस्तकालय। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक जैन-अजैन समाचार पत्रों सहित धार्मिक पुस्तकों का विशाल संग्रह। प्रतिदिन काफी संख्या में पाठक लाभ लेते हैं।

१३. **श्री सुमति ज्ञान भण्डार :** पं० भगवान दास जी जैन द्वारा प्रदत्त एवं दुर्लभ अन्य ग्रन्थों का संग्रहालय।

१४. **उद्योगशाला :** जैन व अजैन महिलाओं के स्वावलम्बन हेतु बुनाई प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था। जिसमें प्रतिवर्ष काफी बहिनें लाभ लेती हैं।

१५. **साधर्मी भक्ति :** साधर्मी भाई-बहिनों को गुप्त रूप से सहायता पहुँचाने का सुलभ साधन। जरूरतमन्द साधर्मी भाई-बहिनों के भरणपोषण में सहायक बनने, जीविकोपार्जन में सहयोग देने, शिक्षा एवं चिकित्सा हेतु सहायता देने और लेने का अद्वितीय संगम साधर्मी भक्ति की कामना रखने वाले भाई-बहिनों के लिए इस संस्था के माध्यम से गुप्त दान का अपूर्व क्षेत्र। इस योजना को प्रभावशाली बनाने के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग अपेक्षित है ताकि समाज का कोई भाई-बहिन अर्थाभाव के कारण धर्मभावना से वंचित न रहे।

१६. **मणिभद्र :** इस संस्था की निःशुल्क वार्षिक स्मारिका जिसमें आचार्य भगवन्तों, साधु-साध्वियों, विद्वानों, विचारकों के सारगर्भित एवं पठनीय लेखों सहित संस्था की वार्षिक विभिन्न गतिविधियों का विवरण, संस्था का वार्षिक आय-व्यय का विवरण, कलात्मक चित्रों सहित विभिन्न प्रकार की हमेशा संग्रह योग्य सामग्री का प्रकाशन।

१७. **मणिभद्र उपकरण भण्डार :** इस भण्डार की स्थापना आराधना में काम आने वाले केसर, वरक, आसन, माला, वरास वासक्षेप, चंदन तेल, धूपबत्ती, अगरबत्ती, पूजा की जोड़, आदि की विशुद्ध उपलब्धि के लिए की गई थी। इसकी ख्याति एवं गुडविल काफी अच्छी फैल गई है। सामग्री की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाता है।

□ □ □

भारत में बूचड़खाने बन्द दिनों का विवरण

1. राजस्थान :
सरकार का औ. पो. नम्बर
F-11 (1609) LSG/49
14-1-1950
दि 14-1-50 राजस्थान राजपत्र
में प्रकाशित

1. गणेश चतुर्थी, 2. ऋषि पंचमी, 3. अनन्त चतुर्दशी, 4. गांधी जयंती, 5. गांधी निर्वाण दिन, 6. महाशिवरात्रि, 7. श्रीराम नवमी, 8. बुद्ध जयन्ती, 9. महावीर जयन्ती, 10. श्री कृष्णाष्टमी, 11. गणतन्त्र दिवस, 12. स्वतन्त्रता दिवस, 13. दीपावली, 14. कार्तिक पूर्णिमा, 15. कार्तिक बद चतुर्दशी, 16. कार्तिक बद प्रतिपदा।

2 मध्यप्रदेश जी ओ सख्या 1317-5653/18-1 दिनाक 3-3-1971	1 गणतन्त्र दिवस, 2 गाधी निर्वाण दिन, 3 महावीर जयन्ती, 4 बुद्ध जयन्ती, 5 स्वतन्त्रता दिवस, 6 गांधी जयन्ती 7 श्रीराम नवमी, 8 डोल ग्यारस, 9 पयुषण पर्व का पहिला दिन, 10 गणेश चतुर्थी 11 अनन्त चतुर्दशी, 12 महावीर निर्वाण दिन, 13 तारक तरक जयन्ती, 14 घासीराम जयन्ती।
3 कर्नाटक जी ओ सख्या H 4 D 65 GGL 78 दिनाक 8-1-1979	1 बुद्ध जयन्ती, 2 गाधी जयन्ती, 3 गाधी निर्वाण दिन, 4 महावीर जयन्ती, 5 श्री कृष्णाष्टमी, 6 गणेश चतुर्थी, 7 श्रीराम नवमी, 8 डॉ अम्बेडकर जयन्ती, 9 सक्राति, 10 महाशिवरात्रि, 11 श्रीराम लिंग आदि कलार निर्माण दिन।
4 आध्र प्रदेश मेमो सख्या 229/F-I/82-16 दि 6-7-1986	1 महाशिवरात्रि, 2 गाधी जयन्ती, 3 बुद्ध जयन्ती, 4 महावीर जयन्ती, 5 गांधी निर्वाण दिन, 6 श्रीराम नवमी, 7 श्री कृष्णाष्टमी।
5 महाराष्ट्र	1 गणतन्त्र दिवस, 2 स्वतन्त्रता दिवस, 3 गाधी जयन्ती, 4 श्रीराम नवमी, 5 महावीर जयन्ती, 6 सवत्सरी महापर्व।
6 तमिलनाडु जी ओ सख्या 45 RD and L A Dt 16-1-76 जी ओ सख्या 122 RD and L A Dt 23-1-80	1 महावीर निर्वाण दिन, 2 तिरुवल्लुवर जन्म दिन, 3 वडलूर राम लिगार नैनाईवुनाल, 4 महावीर जयन्ती।

आध्र प्रदेश मे हर शनिवार के दिन और पजाब मे हर मगलवार के दिन मास व मछली की दुकानें बद रखने का राज्य सरकारो ने आदेश जारी किया है। तमिलनाडु मे हर हफ्ते एक दिन सिर्फ मास की दुकानें बद रखने का आदेश है। जयपुर मे हर शुक्रवार के दिन कतलखाने बन्द रखे जाते हैं।

• □ •

❊ अनुक्रमणिका ❊

परम विदुषी साध्वी आर्यारत्ना श्री चन्दना श्रीजी

।। श्री सुमतिनाथाय नमः ।।

प० पू० श्री चन्द्रकलाश्री जी मा० सा० का

✻ जीवन परिचय ✻

जिस समय प्रकृति अपनी सुरम्य छटाओं से सुशोभित थी, नील गगन में काले और सफेद बादल छाये हुए थे, रिमझिम वर्षा की बूंदें गिर रही थीं, वातावरण बड़ा सुहावना था, ऐसी सुमधुर बेला में झीलों की नगरी उदयपुर में ओसवाल परिवार के सेठ श्री मोहनलाल सा. की धर्मपत्नी सुगनदेवी गन्ना की कुक्षि से श्रावण शु. 8 वि. सं. 1999 को पुत्रीरत्न का जन्म हुआ। उनका नाम चन्द्रा रखा, उनकी बड़ी बहन का नाम अम्बा था। माता-पिता ने दोनों बालिकाओं में धर्म संस्कारों की नीव डाली। बालिकाएं बाल्यवय में ही बड़ी प्रतिभा सम्पन्न एवं गुणों की मूर्ति थी। सभी बड़े आनन्द से रहते थे। अचानक रंग में भंग हो गया। पिताश्री को काल ने ग्रसित कर लिया। सभी शोकातुर हो गये। सद्गुरुओं की वाणी माता के कर्ण-पटलों को स्पर्श कर गई। ज्ञान की ज्योति प्रकट हुई। यह संसार असार है, जिसमें प्रतिपल द्वन्द्व, हर्ष-विषाद, जन्म-मृत्यु होते ही रहते हैं। संसार से उद्वेग हुआ। तीनों ने संकल्प किया कि हमें संयम स्वीकारना है।

"संयम पंथ सोहामणो', महाभिनिष्क्रमण—संयम लेने की तीव्र जिज्ञासा हुई तथा सांसारिक भोग-सुखों से घृणाभाव पैदा हुआ। सभी ने धार्मिक अध्ययन किया और वि. सं. 2008 में प. पू. आ. देव श्री रामसूरि जी डेहला वालों की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी प. पू. दीर्घसंयमी विमल श्री जी म. सा. गुरुवर्या की सान्निध्यता में संयम स्वीकार किया। तीनों के नाम क्रमशः प. पू. सुदर्शनाश्री जी, कल्पलता श्री जी व चन्द्रकला श्री जी म. सा. रखा गया। पू. चन्द्रकला श्री जी म. सा. ने 8 वर्ष की बाल्यवय में ही दीक्षा ली तथा दर्शनशास्त्र, न्याय व्याकरण, संस्कृत, कम्मपयडि—कर्मग्रन्थ आदि विषयों का गहन चिन्तन एवं अध्ययन किया। सभी विषयों में आपने वर्चस्वता प्राप्त की है। आपकी बाल ब्रह्मचारिणी पन्द्रह शिष्या एवं प्रशिष्याएं हैं जिन्हे आपने गहन अध्ययन कराया है। काफी वर्षों से आप अपनी वक्तृत्व कला का संघों को लाभ दे रही हैं। आपने अपने जीवन को विविध तपानुष्ठानों से सुवासित किया है। वर्षीतप, बीस स्थानक आदि तपस्या आप कर चुकी हैं।

साहित्य संपादन—आपके कर कमलों से शशि सुधा, मनीषा का मधु, विमलजिन गुणमाला, विमल सुदर्शन स्वाध्याय माला, कल्पसूत्र आदि का सम्पादन हुआ है।

विहार क्षेत्र—आपका विहार उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, सौराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बंगाल आदि राज्यों में हुआ है। आप पू. आचार्य राम सूरिजी म. की निश्रा में दो बार [illegible] सहित शिखर जी की यात्रा कर चुकी हैं। कलकत्ता में तीन बाल कुमारिकाओं की आचार्य भगवन्त की निश्रा में दीक्षा सम्पन्न कर मंगलचन्द दूगड़ द्वारा आयोजित शिखर जी के संघ में सम्मिलित होकर संघ को अपनी अमृतमयी वाणी से उद्बोधित किया। आ. प. पू. [illegible] सूरि जी म. सा. के सान्निध्य में सूरत से [illegible] तक निकले [illegible] संघ में भी आप पधारी।

आपके द्वारा शासनोन्नति के अनेक कार्य हुए। मदसौर मे, प्रतापगढ मे वहीं आदि स्थलो मे आप ही के सदुपदेश से आराधना भवन बने तथा बन रहे हैं। पूज्य श्री की बहन कल्पलता श्री जी म सा भी लेकसिटी मे अपनी वाणी द्वारा सघ को लाभान्वित कर रही हैं।

धन्य है ऐसी माता को जिन्होने अपनी पुत्री का पथ उज्ज्वल किया। पू चन्द्रकला श्री जी म सा बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। जीवन के हरेक पहलुओं पर आप समन्वयात्मक दृष्टि से विचार करती हैं। पूज्य गुरुवर्या यशस्वी बनी रहे तथा शासन प्रभावना के कार्यों मे सघ को प्रेरित करती रहें। हम गुरु का गुणगान जितना भी करें कम है।

यही शुभेच्छा।

आत्मानन्द सभा भवन
तपागच्छ सघ का उपाश्रय
दिनाक 6-8 88, जयपुर

☐ सा० शीलकान्ता श्री

विदेशो में बूचडखाने बन्द दिनो का विवरण

विदेश का नाम	बूचडखाने बन्द रहने के दिन
1 जापान	हर रविवार
2 इण्डोनेशिया	हर रविवार
3 सीरिया (अरब)	हर शुक्रवार
4 आस्ट्रिया	प्रत्येक शनिवार और रविवार
5 आयरलैण्ड	प्रत्येक रविवार, गुडफ्राइडे व सार्वजनिक छुट्टियो मे। नियम भग करने वाले को पहले एक पौण्ड, फिर दो पौण्ड प्रतिदिन की सजा।
6 फ्रान्स	प्रत्येक रविवार
7 पोलैण्ड	प्रत्येक रविवार और सार्वजनिक छुट्टियो मे।
8 लका	प्रतिपदा, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णमासी तथा धार्मिक एव राष्ट्रीय पर्व दिनो मे। नियम भग करने वाले को रु 50) जुर्माना अथवा तीन महीने की कैद।
9 जर्मनी	प्रत्येक शनिवार और रविवार।
10 पाकिस्तान	प्रत्येक मगलवार और बुधवार।

गुणानुराग

☐ आचार्य इन्द्रदिन्न सूरिजी
हस्तिनापुर

कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्यजी ने श्रावकों के लिए जिन उदात्त पैंतीस मार्गानुसारी गुणों का विधान किया है। उनमें इक्कीसवां गुण 'पक्षपाति गुणेषु च' कहा है।

इसी गुणपक्षपाती शब्द को और व्यावहारिक रूप देकर उसे गुणानुरागी कह सकते हैं। गुणों का पक्षपात करना या गुणों का अनुरागी होना एक ही पहलू के दो पक्ष हैं। श्रावक को गुणों का अनुरागी बनना चाहिए।

मानव को जो मानवता प्रदान करे, मनुष्य को जो मनुष्यत्व प्रदान करे, व्यक्ति को जो व्यक्तित्व प्रदान करे और श्रावक को जो श्रावकत्व प्रदान करे उसे गुण कहा जाता है। जिसमें गुण होते हैं उसे गुणवान कहा जाता है। संसार में गुण अनेक प्रकार के हैं। उनकी व्याख्या भी भिन्न-भिन्न है। व्यवहार में जिन गुणों की प्रशंसा होती है वे हैं कुलीनता, सत्यवादिता, न्यायप्रियता, इन्द्रिय संयम, कृतज्ञता, मितभाषिता, सत्यप्रियता, उदारता, धीरता, मिष्टवादिता, अनालस्य, सज्जनता, धर्मप्रियता, आस्तिकता आदि अनेक गुण गिनाये जा सकते हैं।

व्यक्ति का मूल्य तभी बढ़ता है जब उसमें कोई गुण हो, गुणहीन मनुष्य पशु के समान है। फूल में सुगन्ध होती है तो भौंरे अपने आप आ जाते हैं। फूल कभी भौंरों को बुलाने नहीं जाता। वह स्वयं को विकसित कर सुगन्ध हवा में फैलाता है। फूल सुगन्ध का दान करता है। ऐसा ही व्यक्ति के विषय में भी कहा जा सकता है। जब व्यक्ति अपने स्वार्थ की क्षुद्र सीमा को लांघ कर ऊपर उठ जाता है और स्वयं में बसी मानवता रूपी सुगन्ध को फैलाता है तो उसके आसपास का वातावरण महक उठता है। उसका नाम लोगों के हृदयों में अंकित हो जाता है। ऐसा तभी होता है जब वह विशिष्ट मानवीय गुणों से युक्त होता है।
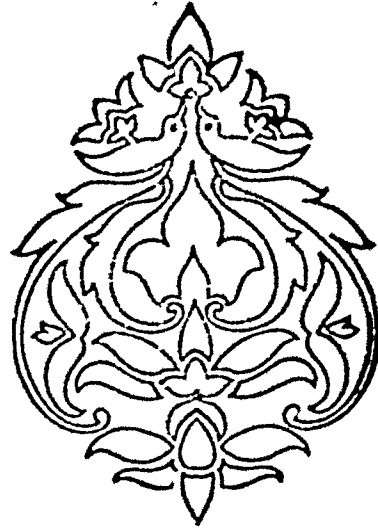
केवल गुणपक्षपाती बनकर ही नहीं रुकना है, पर गुणग्राहक भी बनना है। उन विशिष्ट मानवीय गुणों से स्वयं को अलंकृत करना ही गुणपक्षपाती या गुणानुरागी बनने का फल है। मात्र भोजन की प्रशंसा से पेट नहीं भरता। भूख मिटाने के लिए भोजन को पकाना और चबाना पड़ेगा तभी वह मिटेगी। वैसे ही गुण-गुण रटने से गुणवान नहीं बना जा सकता। उसे धीरे-धीरे अभ्यास और अध्यवसाय के द्वारा जीवन में क्रियान्वित करना पड़ेगा।

दो प्रकार के गुण हैं : (1) सद्गुण और (2) दुर्गुण। जिससे जीवन प्रशंसनीय हो, जो दूसरों को आनन्द प्रदान करे वे सद्गुण हैं।

जो जीवन को दूषित बनाएं, जिससे दूसरों को कष्ट हो वे दुर्गुण हैं।

विलियम शेक्सपियर ने अपनी भाषा में पाँच सद्गुणों का वर्णन किया है :

(1) [illegible] (2) [illegible] (3) [illegible] (4) [illegible] (5) [illegible]।

जेन	सदाचारी होना।
चुन ज़ू	अच्छा व्यवहार, हृदय मे दया, करुणा एव प्रेम रखना।
ली	सद्ज्ञान और विवेकशील होना, आत्म-विश्वास से जो ठीक लगे वह कार्य करना।
ते	नैतिक साहस ईमानदारी, सच्चाई और उदार रहना।
बेन	गुणो पर डटे रहना।

ये समस्त गुण कैसे नष्ट होते हैं ? इनके नष्ट होने के क्या-क्या कारण हैं ? इस विषय मे स्थानाग सूत्र मे कहा गया है कि चार कारणों से जीव विद्यमान गुणों का नाश करता है

1 क्रोध से।
2 गुण सहन न होने से।
3 अकृतज्ञता से।
4 मिथ्या धारणा के कारण।

क्रोध सद्गुणों का सब से बडा शत्रु है। क्रोध से व्यक्ति अन्धा हो जाता है। और अन्धा व्यक्ति कुछ नही देख सकता, वह भूल जाता है कि क्या करणीय है और क्या अकरणीय है। क्रोध से समस्त सद्गुणों का नाश होता है इसलिए उसे सर्वप्रथम रखा गया है। जिसे सद्गुणो की रक्षा करनी हो, उसे क्रोध से सदा ही दूर रहना पडेगा। वर्ना क्रोध की दावाग्नि मे पडकर समग्र सद्गुण राख हो जायेंगे।

कई व्यक्तियो को दूसरो के गुण-सद्गुण सहन नही होते। और सहन नहीं होते इसका कारण है ईर्ष्या। ईर्ष्या मनुष्य की सबसे बडी दुर्बलता है। वह सद्गुणो को रोकती है। ईर्ष्या व्यक्ति को सतत जलाती है, वह कहीं शाति नही पाने देती। दूसरो के गुणो को सहन करने के लिए भी उदारता और वीरता की आवश्यकता होती है।

उपकारी के प्रति कृतज्ञता रखनी चाहिए, ऐसा एक मानवीय गुण है। अपने उपकारी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की भी उदारता मनुष्य मे न हो तो अन्य गुण आने के द्वार ही बन्द हो जाते हैं अत सद्गुणों को नष्ट करने का तीसरा कारण है कृतघ्न होना।

मनुष्य अनेक मिथ्या, असत्य धारणाएँ, कल्पनाएँ कर लेता है। सत्यपरक, तथ्यपरक और मर्मपरक मनुष्य मिथ्या धारणाओ से दूर रहता है।

इस प्रकार जिसे गुणपक्षपाती या गुणानुरागी बनना हो उसे इन चार बातो से सदा दूर रहना चाहिए। इन बातो या कारणो से दूर रहने वाला श्रावक ही आदर्श श्रावक वीतराग का सच्चा उपासक बन पाता है।

☐ **जब आत्मा इन्द्रियों की सहायता के बिना देखती है, तो ज्ञानदर्शन अनन्त सीमा का हो जाता है।**

☐ **ध्यान के अध्यवसाय मे मन के विचारों को स्थिर करना जरूरी है।**

सहस्र किरणों से सुशोभित भगवान् भास्कर एवं माँ चंडी के चरणों में काव्य की प्रसादी का थाल प्रस्तुत कर कवि बाण एवं मयूर जनसमूह के दिल में यश प्रतिष्ठा की चिरस्थायी स्थापना करके भावविभोर हो रहे थे। बाह्य चमक-दमक के प्रभाव से आकृष्ट जनसमूह द्वारा काव्य एवं मंत्र-शक्ति की मुक्तकंठ से प्रशंसा करने पर ऐसा माहौल बना कि इन दो महाकवियो के बिना कोई दूसरा चमत्कारी काव्य निर्माता ही नही है।

जैन शासन के महान् ज्योतिर्धर पूज्य आचार्य श्री मानतुंग सूरीश्वरजी म. के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण को धारण करने वाले भावुकवर्ग के दिल में खलबली मची। अरे! तेजपुंज के धनी दिव्य दिवाकर एवं पूर्ण शशि के आगे तारा तथा नक्षत्रों की चमक कैसे बढ़ रही है?

भक्ति की भागीरथी में स्नान करने वाले जनमानस ने नगर के अधिपति के समक्ष छोटे मुंह से बड़ी बात कही।

अरे राजाजी! आपने हमारे परम तारक निर्ग्रंथ सूरिपुरंदर महामनीषी पू. आचार्य श्री मानतुंगसूरि म. का प्रभाव एवं काव्यशक्ति का आस्वादन ही नहीं किया है। यदि आप पूज्यश्री के श्रीचरणों में प्रार्थना करेंगे तो आपके दिल एवं दिमाग को मुग्ध करने वाले अनेक काव्यो की रचना श्रवण का आदर्श लाभ प्राप्त होगा।

काव्य की चमत्कृति एवं मंत्रशक्ति के अद्भुत-पूर्व आकर्षण के कारण राजा ने पूज्यश्री को आमंत्रण देकर राज्यसभा मे निमंत्रित किया।

यश एवं प्रतिष्ठा की कामना के त्यागी महा-मना पूज्य आचार्यश्री ने राजा की प्रस्तुत प्रार्थना पर ध्यान दिये बिना इन्कार कर दिया कि हम हमारी साधना की नाप दिखाने की वस्तु नहीं बनाना चाहते हैं। उच्चकोटि की साधना का
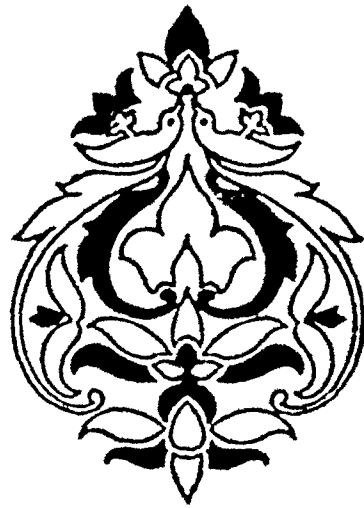
संघर्ष से सृजन

☐ मालव केशरी पूज्य आचार्य श्री विजय जयदेव सूरीश्वरजी म० श्री के शिष्य मुनि यतीन्द्रविजयजी

स्थान मुनिजनों के पावनतम मनमंदिर में ही होता है। अन्य स्थानों पर कभी नहीं।

सत्ता एवं सिंहासन के अधिष्ठाता राजा ने अपनी सार्वभौम आज्ञा की अवमानना से दिल में क्रुद्ध बन पूज्यश्री की पावन देह के प्रत्येक अवयवों (चोटी के पाट) पर लोहे की भयंकर जंजीरों से नागचूड़ सा बंधन डालकर घोर अन्धकार की कोटड़ी मे कैद कर दिया।

बसन्त की सहेली कोकिला मकरंद रस के भ्रमर एवं शशि का साथी चकोर सी मनोवृत्ति को धारण करने वाले पूज्यश्री ने अन्धकारपूर्ण कारागृहो की दीवारो के हर परमाणु मे युगादि देव श्री आदीश्वर भगवान् के पुनीत परम स्मरण की अमिट छाप को अंकित देखकर भीतर की चेतना को मुक्त मन से पावन परमात्मा के श्री चरणों की अनुपम महिमा को गाने के लिए जागृत की।

लोहे की जंजीरों की जकड़न से आबद्ध [illegible] सूरिपुरंदर

के दिल की दिलरबा से प्रभुभक्ति के मधुर स्वरों का गुंजन हो उठा।

शब्द नहीं किन्तु-शक्ति के पुंज रूप श्लोकों की रचना के साथ कच्चे धागे सी जंजीरों की कडी टूटने लगी। भक्त एवं भगवान् के बीच भक्ति की कडी जुडने से सेवकभाव की भेदरेखा मिट जाने पर अद्भुत भक्ति की महिमा का प्रगटीकरण करती श्लोक की कडी से पूज्यश्री का रोम-रोम गा उठा कि—

भक्तामर–प्रणत–मौलि–मणि–प्रभाणाम्

प्रभु तेरे श्रीचरणों के आलम्बन द्वारा तेरा भक्त अमर होगा यह स्वाभाविक है। अपार घोर अंधकार में प्रकाश की तेज रेखा प्राप्त होगी। अथाह जलराशि में डूबता भावुक दिल आदर्श आधार प्राप्त कर—

तं मानतुंग मवशा समुपैति लक्ष्मी

सहसा एकाएक भक्ति का अमृतपान कर मुक्ति कन्या के सगाथी होने का आत्मश्रेय प्राप्त होगा। यह दृढ विश्वास अपूर्व भक्ति एवं मधुर स्रोत के सर्जन की महिमा मुखरित होती राजा के कर्णपट पर टकराई।

अहं की घोर निद्रा में डूबे राजा ने वास्तविक स्थिति को पहचानने पर भावविभोर बन सन्मान पूज्यश्री के पुनीत श्रीचरणों में सिर झुकाकर क्षमा प्रार्थना की।

मेरु जैसे धीर, सागर जैसे गम्भीर एवं शशि से सौम्य प्रकृति के धनी पूज्यश्री के कमल नयन से अभी वर्षा हो रही थी। उस आशीर्वाद के अमृतपान के पश्चात् भावपूर्वक श्री भक्तामर महा-स्तोत्र की शाश्वत प्रतिष्ठा स्थापित की।

पूज्यश्री का राजा के साथ संघर्ष वाद की स्थिति से ऐसा जादू फैला कि घर-घर में भक्तामर महास्तोत्र की महिमा फैल गई।

संघर्ष के पश्चात् सर्जन के आनन्द में लीन धर्मप्राण जनता ने दिव्यस्तोत्र के सर्जन के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण के सच्चे मोती बिखेर कर सौन्दर्य की गरिमा में चार चाँद लगाये।

आज भी यह पवित्र स्तोत्र एवं उनकी महिमा से मंडित जनसमूह भाव-विभोर होकर प्रभु के गुणगान में लीन बन रहा है।

सुमधुर छंदों के कल्लोलों से उछलते भक्ता-मर महास्तोत्र की भागीरथी में स्नान कर तन-मन को पावन बनावें।

धन्य हो ज्योतिर्धर महामना पूज्य सूरि सम्राट आचार्य श्री मानतुंग सूरीश्वरजी महाराज धन्य हो।

संघर्ष में से सर्जन के सृष्टा पूज्यश्री के प्रति संसार अहोभाव से लाख लाख वंदन करता है।

—आचार्य श्री विजय सुरेन्द्रसूरीश्वरजी
-जैन स्वाध्याय मन्दिर
नई आबादी, मन्दसौर
श्रावण सुदी ८ रविवार
(श्री पार्श्वनाथ प्रभु का निर्वाण कल्याणक दिन)

○ ○ ○

अध्यवसायी धारणा पर कर्म का फल आधारित है।

राजनगर–अहमदाबाद में सम्मिलित सं. 2044 का श्रमण सम्मेलन और उसमें लिये गये निर्णयों की भूमिका

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक तपागच्छीय श्री संघ से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण बातों के बारे में, हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न मत-मतांतर प्रचलित है। ऐसे महत्त्वपूर्ण विषयों में विसंवादिता मिटे और एक वाक्यता स्थापित हो तो श्री संघ को ठीक तरह से एक समान मार्गदर्शन प्राप्त हो, ऐसे शुभ आशय से प्रेरित होकर आचार्य महाराज श्री विजय भद्रंकर सूरीश्वर जी महाराज के हृदय में श्रमण भगवंतों का मिलन हो ऐसी भावना जागृत हुई।

उनकी इस छोटी-सी भावना को तपागच्छ के अठारह समुदायों के अंदाजन अस्सी से भी अधिक आचार्य महाराजों की संमति मिलते ही वह सम्मेलन में परिवर्तित हो गई और चैत्र सुदी 10 के दिन प्रातः 8.30 बजे राजनगर के श्री संघ ने पूज्य गुरुभगवंतो का भव्य स्वागत किया। स्वागत जुलूस पंकज सोसायटी में बनाये गये विशाल मंडप में पहुँचा। वहां चतुर्विध श्री संघ की उपस्थिति में पूज्य आचार्य महाराज श्री विजय रामसूरीश्वर जी महाराज के मंगलाचरण से सम्मेलन का प्रारम्भ हुआ। प्रत्येक समुदाय के पूज्य गुरुभगवंतो ने इस प्रसंग को हृदय की उमंग से सम्मानित किया और सम्मेलन सफल हो, ऐसी शुभकामना व्यक्त की। श्रावक संघ की ओर से सेठ श्री श्रेणिकभाई कस्तूरभाई ने भी इस प्रसंग पर अपार हर्ष व्यक्त किया और गुरुभगवंतों को श्री संघ को योग्य मार्गदर्शन देने की प्रार्थना की।

तदश्चात् पंकज सोसायटी में सम्मेलन की मंगल भूमिका बनी और उसमें सम्मेलन में चर्चा योग्य विषय के विचार-विमर्श हेतु गुरुदेव मुनिराजों की एक विषय विचारिणी समिति नियुक्त की गई। और अलग-अलग स्थानों पर पूज्य गुरुभगवंतों की निश्रा में शाश्वती ओली की आराधना जारी होने के कारण सम्मेलन की नियमित कार्यवाही के लिए चैत्र वदी द्वितीया का दिन निश्चित किया गया।

चैत्र वदी द्वितीया सोमवार, दिनांक 4-4-88 के दिन सुबह 9.00 बजे विद्यान संस्था में उपस्थित पूज्य श्रमण भगवंतों के सम्मेलन की कार्यवाही शुरु हुई। हर रोज सुबह 9.00 बजे से 11.00 बजे तक तथा दोपहर 3.00 बजे से 5.00 बजे तक इस प्रकार दो बैठकों में मिलना तय हुआ। सम्मेलन की इन बैठकों में विषयविचारिणी समिति के मुनिराजों द्वारा सूचित विषयों तथा बुजुर्ग पूज्य आचार्य भगवंतों के मत लिये विषयों पर विचार-विमर्श करना प्रारंभ हुआ। चैत्र वदी द्वितीया से चैत्र वदी अमावस्या तक इस सम्मेलन में—

1 सामुदायिक वाचना,

2 मुनि जीवन का प्रारभिक पाठ्यक्रम,

3 मुमुक्षु भाई बहनो के लिए विद्यापीठो की योजना,

4 पाठशाला के सर्वांगीण विकास की चर्चा,

5 स्थडिल-मात्रु परठने के लिए व्यवस्था,

6 वृद्ध और ग्लान साधु-साध्वी जी के स्थिरवास की व्यवस्था,

7 विहार क्षेत्रो मे वैयावच्च की व्यवस्था,

8 साध्वी वृन्द मे ज्ञानादिक की पुष्टि,

9 श्रावको की मध्यस्थ समिति,

10 आचार्य भगवतो की प्रवर समिति,

11 राजकारण मे जैनो का प्रवेश,

12 जीर्ण मन्दिरो के जीर्णोद्धार की प्रेरणा,

13 साधारण द्रव्य की वृद्धि के लिए मार्गदर्शन,

14 गुरुद्रव्य व्यवस्था,

15 ज्ञानद्रव्य के सद्व्यय के लिए मार्गदर्शन,

16 देवद्रव्य व्यवस्था,

17 जिनपूजा के लिए मार्गदर्शन

18 साधु-साध्वीजी के अतिम सस्कार निमित्त की उपज की व्यवस्था,

19 प्राचीन जिनबिंबो, पूजा हो वहाँ देने की प्रेरणा,

20 साधु-साध्वीजीयो की विश्रामणा की व्यवस्था,

21 जिन भक्ति प्रधान पूजनो के लिए आदेशा, इत्यादि विषयो पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श हुआ और अन्त मे उसके सार-रूप, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव को लक्ष्य मे लेकर, शास्त्र-सापेक्ष भाव से, सब समिति से मार्गदर्शनात्मक निर्णय लिये गये।

लिये गये निर्णयो की उपयोगिता

हमारे सघ मे ज्ञानाभ्यास के लिए तत्परता बढे, इस आशय से और बढी हुई ज्ञानपिपासा के अनुरूप वातावरण आदि प्राप्त हो, उस हेतु से प्रथम चार निर्णय हुए हैं तथा उन निर्णयो की सार्थकता और दृढ अमलीकरण के लिए स 2044 के चातुर्मास दरम्यान समूह वाचना का शुभ प्रारभ प पू आचार्य श्री विजय रामसूरीश्वर जी म सा की शुभ निश्रा मे भाद्र सुदी 11 के शुभ दिन करना निश्चित हुआ, और तीसरे निर्णय के सदर्भ म पूज्य आचार्य श्री विजय प्रेम सूरीश्वर जी महाराज ने भाइयो लिए तथा बहनो के लिए विद्यापीठ स्थापित करने की भावना प्रदर्शित की।

निर्णय 4 मे अपने गुर्वादिक की समतिपूर्वक-विवेकपूर्वक इस निर्णय का पालन करने का है।

छठा निर्णय हुआ तब वृद्ध और ग्लान साधु-साध्वीजीयो के स्थिरवास के बारे मे कुछ करने की भावना पूज्य आचार्य श्री विजय प्रेम सूरीश्वर जी महाराज ने तथा पूज्य आचार्य श्री विजय भुवन रत्न सूरीश्वर जी म सा के शिष्य मुनिराज श्री यशोविजय जी गणिवर ने दर्शायी है।

यद्यपि इन निर्णयो के सदर्भ मे इतना बताना चाहिए कि जहा श्रावक वर्ग की आबादी अच्छे प्रमाण मे हो वहाँ उस क्षेत्र के श्रावक सघ, यथाशक्य सख्या मे वृद्ध साधु-साध्वीजी महाराज को रखें और भक्ति वैयावच्च का विशिष्ट पुण्य प्राप्त करें, यह उत्तम आराधना है। वृद्ध साधु-साध्वीजी महाराजो की, सयम मे स्थिरता बढे, ऐसी वैयावच्च करना, चतुर्विध श्री सघ का कर्त्तव्य है, ऐसे आशय से यह निर्णय हुआ है।

साध्वीजीयों के समुदाय में ज्ञानादिक की वृद्धि के लिए आठवां निर्णय हुआ। नवां निर्णय से श्रावक संघ की क्षमता का विकास होगा। नवम निर्णय के बारे में शेठ श्री श्रेणिकभाई कस्तूर भाई के प्रमुख पद में समिति का चयन करना तय हुआ है।

दसवां, आचार्य भगवंतों की प्रवर समिति का निर्णय होने से शासन से संबंधित किसी भी समस्या के बारे में मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु, एक मध्यस्थ और अधिकृत व्यवस्था हो सकी, जो संघ के लिए खूब प्रोत्साहक बन जायेगी।

इस निर्णय के आधार पर सम्मेलन में—

1. पू. आ. श्री विजयराम सूरीश्वरजी म. (डहेलावाले)
2. पू. आ श्री विजय ॐकार सूरीश्वर जी म.
3. पू. आ. श्री विजयभद्रंकर सूरीश्वरजी म. (पू. बापजी म. के समुदाय के)
4. पू. आ. श्री विजयप्रेम सूरीश्वरजी म.
5. पू. आ. श्री विजयमेरुप्रभ सूरीश्वरजी म.
6. पू. आ. श्री विजयनवीन सूरीश्वरजी म. (पू. आ. श्री विजयलब्धि सूरीश्वरजी म. के समुदाय के)
7. पू. आ. श्री सुबोधसागर सूरीश्वरजी म.
8. पू. आ. श्री विजयइन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म.
9. पू. आ. श्री विजयहिमांशु सूरीश्वरजी म.
10. पू. आ. श्री विजयभुवनभानु सूरीश्वरजी म.
11. पू. आ. श्री विजय भुवनशेखर सूरीश्वरजी म.
12. पू. आ. श्री विजयकलापूर्ण सूरीश्वरजी म.
13. पू. आ. श्री दर्शनसागर सूरीश्वरजी म.
14. पू. आ. श्री चिदानन्दसागर सूरीश्वरजी म.
15. पू. आ. श्री विजय अरिहंतसिद्ध सूरीश्वरजी म.
16. पू. आ. श्री विजय यशोदेव सूरीश्वरजी म.
17. पू. आ. श्री चिदानंद सूरीश्वरजी म.
18. पू. आ. श्री विजयहेमप्रभ सूरीश्वरजी म.

इतने आचार्य महाराजों का तपागच्छ आचार्य संघ नियुक्त किया गया है। इसमें से सम्मेलन में उपस्थित—

1. पू. आ. श्री विजयराम सूरीश्वरजी म. (डहेलावाले)
2. पू. आ. श्री विजय भद्रंकर सूरीश्वरजी म.
3. पू. आ. श्री विजयप्रेम सूरीश्वरजी म.
4. पू. आ. श्री विजयचंद्रोदय सूरीश्वरजी म.
5. पू. आ. श्री नरेन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.

इन पांच आचार्य भगवंतों को तपागच्छ आचार्य संघ द्वारा कार्यवाही सौंपी गयी है। ये पांच आचार्य भगवंतों की समिति आचार्य प्रवर समिति कहलायेगी।

सामान्यतः अनेक जगह और गांवों में जिन-मंदिरों में पूजा और भक्ति आदि के लिए तथा मंदिर की व्यवस्था के लिए बड़ी कठिनाइयां देखी जाती है, उसके संदर्भ में शास्त्रदृष्टि से विचार करने पर शास्त्रज्ञ महापुरुषों ने आचरण के लिए जो व्यवस्था बताई है उसके अनुसार संमेलन निर्णय किया गया है और श्री हरिभद्रसूरि महाराज के देवद्रव्य संबंध निर्णय को आगमोद्धारक पू. आ.

श्री सागरानद सूरिजी महाराज ने भी सूरत-आगम मदिर के ट्रस्ट डीड मे इसी तरह दाखिल किया है।

यदि इस निणय का अथघटन कोई ऐसा करें कि इस सम्मेलन ने देवद्रव्य को साधारण मे ले जाने की छूट दे दी है तो वह गलत एव अधूरा अर्थघटन है। देवद्रव्य को साधारण मे ले जाने की किसी भी प्रकार की छूट इस निणय से नही मिलती है। बल्कि देवद्रव्य का जिनभक्ति आदि कार्यों मे उपयोग करने की व्यवस्था शास्त्रकार महर्षियो ने जो फरमाई है, उसी व्यवस्था को स्पष्ट समझाने के लिए यह निर्णय लिया गया है। वस्तुत देवद्रव्य के दुरुपयोग को मिलता प्रोत्साहन इस निणय से रुक जाता है।

इसी प्रकार गुरुद्रव्य के उपयोग के विषय मे भिन्न-भिन्न प्रथाएँ प्रवर्तमान होने से, उन भिन्नताओ को दूर कर, शास्त्रीय मर्यादा अनुसार एकवाक्यता लाने के आशय से, चौदहवा निणय लिया गया है।

अगर इस निणय के विषय म भी गलतफहमी खडी की जाय यह समावित है, परन्तु इस विषय में श्राद्धजीत कल्पवृत्ति का शास्त्रपाठ इतना स्पष्ट है कि उसे देखने के बाद निणय की सत्यता के बारे में कोई सदेह और भ्रामक बातें टिक नही सकती।

साधारण द्रव्य की वृद्धि, यह भारत के लगभग प्रत्येक सघ की कायमी समस्या है। उसे समूहशक्ति से हल करने का एक उल्लास प्रेरक सुदर उपाय, सोलहवें निणय द्वारा समस्त सघ को सूचित किया गया है।

परमात्मा की पूजा भक्ति, यह श्रावक का कर्तव्य है, फिर भी आज वह नौकरों को सौपा गया दिखाई देता है, जिससे एक ओर घोर आशातनाए बढ गयी हैं तो दूसरी ओर कानून की दृष्टि से तथा यूनियन आदि की राजकीय दृष्टि से अनेक भयस्थान उत्पन्न हो रहे हैं। उन आशातनाओ तथा भयस्थानों को टालने से लिए, शास्त्रीय मर्यादा को हानि न पहुँचे इस तरह सत्रहवा निणय लिया गया है।

इस (सत्रहवें) निणय के लिए ऐसी बातें होगी कि इस निणय द्वारा, "प्रभुपूजा न करो या न हो तो चलेगा" ऐसा परवाना सम्मेलन ने दे दिया है, परन्तु यह बिल्कुल गुमराह करने वाली बात है। सम्मेलन ने पूजा का निषेध किया ही नहीं। सम्मेलन ने तो प्रभुपूजा के नाम पर और प्रभुपूजा के बदले घोर आशातनाए ही होती रहती हैं, उसे रोकने के लिए तथा आज के विषम समय और सरकारी कानून की स्थिति का लाभ लेकर नौकरों के यूनियन होने लगे हैं और उस माध्यम से नौकर पूजा करेगा तो नही किन्तु पूजा करने वाले जैन को भी रोकेगा और लडाई झगडा करेगा तो भविष्य मे जिनबिंबो तथा जिनमदिरादि की रक्षा के लिए बडी विकट समस्या खडी होने की पूरी सभावना है। इन सभी भयो का दूरगामी विचार कर सम्मेलन ने नौकरो के भरोसे पूजा और मदिर छोड देने की पद्धति बद करने का सूचन किया है। सक्षेप मे सम्मेलन ने पूजा का निषेध नहीं किया किन्तु पूजा और प्रभुजी नौकरो को सौंप दिये गये हैं, उस स्थिति मे परमात्मा की पूजा तो श्रावक सघ को खुद ही करनी चाहिए, ऐसा भारपूर्वक प्रतिपादन ही किया है। विवेकशील व्यक्ति यह मर्म अवश्य समझ सकेंगे।

पूजन के विषय मे आज जो देव-देवी प्रधान पूजन की ओर लोग ढल रहे हैं उसके सामने लाल बत्ती रखकर परमात्मभक्ति प्रधान पूजन ही मुख्यत बढाने का सूचक सम्मेलन ने किया है।

इसी प्रकार अन्य निणयो की भी भूमिका तथा उपयोगिता समझ लेने की है और यह समझकर इन तमाम निर्णयो का श्री सघ के चारो अगो को

पालन करने का है।

शास्त्र में बताये विधि-निषेध कायम के लिए स्वीकार कर, संघ में विसंवाद शान्त हो ऐसे शुभ आशय से तथा रचनात्मक अभिगमपूर्वक यह निर्णय लिये गये हैं।

पंकज सोसायटी में बांधे गये मंडप में चैत्र सुदी दशम को पधारे हुए चतुर्विध श्री संघ का वह रोमांचक और पावनकारी दृश्य अविस्मरणीय है, तो पंकज सोसायटी के उपाश्रय के विशाल हॉल में विराजित होने वाला विशाल मुनि-मंडल और उसके मध्य में विराजित पूज्य आचार्य भगवंतों का मन-भावन और हृदयंगम दर्शन संघ के लिए महामंगल-कारी बन गया था। दर्शन करने वाले सभी के मन मे एक ही भाव था कि ऐसा मनोहर और पवित्र दृश्य तो किसी बड़भागी धन्य आत्मा को ही मिलता है।

नोंध—श्रमण-सम्मेलन की सफल पूर्णाहुति के बाद, वै. शु. 1 के दिन श्री संघ के द्वारा किये गये स्वागत के बाद, चतुर्विध श्री संघ की विशाल सभा में सम्मेलन की फलश्रुति प्रस्तुत की गई। वै. शु. 5 के दिन पू. आचार्यदेव श्री विजय ॐकार सूरीश्वरजी महाराज का कालधर्म हो गया, जो श्रमण संघ के लिए एक आघात जनक घटना बन गई।

तत्पश्चात् वै. शु. 7 के दिन प्रवर समिति ने डहेला के उपाश्रय में मिलकर, स्व. आचार्यदेव श्री ॐकार सूरीश्वरजी म. के स्थान पर आचार्य महाराज श्री विजयभद्रंकर सूरीश्वरजी म. की प्रवर समिति मे नियुक्ति की है।

○

अनन्त लब्धिनिधानाय श्री गौतमगणधराय नमो नमः

विक्रम संवत् 2044 में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री विजय रामसूरिजी महाराज सा० (डहेला के उपाश्रय वाले) आदि की अध्यक्षता में श्री राजनगर के प्रांगण में मिले हुये श्रमण सम्मेलन में संवत्सरी के विषय में, शास्त्रपरंपरानुसार भा० शु० 5 की क्षय वृद्धि होने पर भा० शु० 3 की क्षय वृद्धि करने वाले तथा अपने पूज्यों की आचरणा अनुसार भा० शु० 5 की क्षय वृद्धि होने पर उदय मे चौथ को ही संवत्सरी को प्रमाणभूत मानने वाले, तथा अपने बड़ों की आचरणा मुजब भा० शु० 5 की वृद्धि होने पर भा० शु० 4 की वृद्धि और भा० शु० 5 का क्षय होने पर अन्य पंचांग के अनुसार भा० शु० 6 का क्षय मानने वाले पूज्य श्रमण भगवंतों, सकल संघ की एकता तथा शांति के लिये संघमान्य जन्मभूमि पंचांग में भा० शु० 5 की क्षय वृद्धि होवे तब इस प्रकार आराधना करने का निर्णय करते है, तथा सकल श्रीसंघ को उस मुताबिक आराधना करने का आदेश देते है।
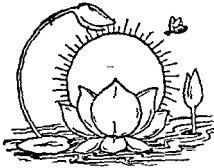
पश्चात्ताप की महिमा

□ प पू गु श्री सुदर्शनाश्रीजी म.
(डहेलावाला) की शिष्या
साध्वी चन्द्रकलाश्रीजी

अनादि अनन्तकाल से जन्म-मरण का चक्र चल रहा है उस चक्र को मिटाने के लिए हमे यह देवदुलभ मानव तन मिला, जैन शासन मिला, अपूव कोटि की आराधना मिली परन्तु हम आराधना के अवसर को हाथ से जाने दे रहे है। हम वर्तमान को देख रहे हैं और भावी को भूल रहे है। जिससे सहज सुलभ भोगो के प्रति हमारा आकर्पण बढता जा रहा है। पुण्य से प्राप्त अमूल्य पलो का दुरुपयोग कर रहे हैं। उसका सदुपयोग यह है कि विनाशी से अविनाशी को प्राप्त करें। ससार का हर पदाथ विनाशशील है। कोई पदाथ ऐसा नही कि जिस पर विनाशिता का कलक न हो।

नयनरम्य महल खडहर बनता है, कीमती वस्त्र चीथरा बनता है, बतन भगार बनता है, उत्तमोत्तम कोटि का स्वादिष्ट भोजन विष्ठा बनता है, पानी पेशाब बनता है और खिला हुआ फूल मुरझाता है।

सुन्दर पदार्थों को भावी मे अपनी स्थिति खराब देख क्या निराश हो जाना है? कभी नहीं, फूल जो सुबह खिलना एव शाम को मुरझाना निश्चित होने पर भी बिचले समय मे सब को खुशबू देता रहता है। सूय का उदय होने के साथ अस्त होना निश्चित है फिर भी वह अपने प्रकाश से विश्व मे रौनक ला देता है। पल दो पल की मेहमान बनने वाली पानी की बूद कमल पत्र पर मोती की तरह चमकती है। हवा के एक झोंके से बुझने वाला दीपक कमरे के कोने मे प्रगट होकर कमरे को प्रकाश से भर देता है। वैसे मानव जीवन का अन्तिम अजाम मौत को देख हम घबराना नही है। जन्म के साथ मृत्यु निश्चित है जैसे सूय के उदय के साथ अस्त निश्चित है। 12 घट से पहले सूर्य अस्त नही होगा यह भी निश्चित है।

हमारे लिये जन्म निश्चित है परन्तु मौत कब आयेगी, यह निश्चित नही है। ऐसी स्थिति मे जन्म और मृत्यु के बीच की पलें कितनी अमूल्य हैं उसका हमने कभी विचार तक नही किया है। छोटी-छोटी बातो को लेकर जीवन मे सघर्ष होता है और हम कषायों के अधीन जिन्दगी से हाथ धो बैठते हैं। मन मे कभी यह नही सोचा कि मैं मानव बन सघर्षों से हार जाता हूँ तो क्या मैं पशु से भी गया बीता हूँ! भूख, प्यास, ठडी गर्मी, भार ढोना, मार खाना इत्यादि अनेक कष्ट सहन करके भी किसी पशु ने कभी आत्महत्या की है? किसी पशु ने रेल की पटरी के नीचे आकर मरने की सोची है? किसी पशु ने कभी गले मे फासी लगाकर मरने का विचार किया है? किसी पशु ने कभी जहर खाया है? नही, कभी नही।

यदि पशु सघर्षों से टक्कर ले सकता है, तब मानव अनेक अनुकूलताओ के बीच मे एकाद छोटी मोटी प्रतिकूलता को आगे कर प्रभु की बन्दगी करने को मिली अनमोल मानव जिन्दगी को पल दो पल मे समाप्त कर देता है यह कितना विचारणीय है?

एक पत्थर का टुकडा होकर विनष्ट हो जाने मे गौरव है या मूर्ति बनकर अनेको को तिराने वाला बनने मे गौरव है? एक बीज का किसी के पाव के नीचे आकर नष्ट होने मे गौरव है या धरती मे अपने आपको मिटाकर विराट् वृक्ष बन सबको

शीतल छाया देने में गौरव है? अगरवत्ती का टुकड़े होने में गौरव है या टुकड़े होने से पहले जल कर औरों को खुशबू देने में गौरव है? मुंह मे से निकले शब्दों का गाली बनने में गौरव है या गाली होने से पहले परमात्मा की स्तवना बनने में गौरव है? वैसे मानव जिन्दगी को गन्दगी बनाने में गौरव है या गन्दगी बनने से पहले स्व पर समाधि में निमित्त दया, करुणा, मैत्री, वात्सल्य, प्रमोद, माध्यस्थ, परोपकार, सेवा, भक्ति, विनय, विवेक आदि गुणों से सुवासित बनाने में गौरव है?

श्री पर्युषण महापर्व जिन्दगी जीने का संदेश लेकर हमारे सामने प्रतिवर्ष एकबार आता है। वह पिता की तरह प्यार से पूछता है, पाप का हिसाब चुकता करने की सलाह देता है, क्योंकि इन्सान से पाप का आचरण हो जाना सहज सुलभ है पर पाप को पाप रूप में पहचानना कठिन है। एकबार भावावेश में आकर पाप का त्याग करना सरल है परन्तु पाप को पाप रूप में स्वीकार कर त्याग करना कठिनतर है। तब पाप पुनः नहीं करने का दृढ़ संकल्प के साथ पाप त्याग करना कठिनतम है। अतः मानव अपने जीवन में सैकड़ों पापकर्म कर लेता है इन सब दुष्कृत्यों से मुक्ति पाने का उपाय क्या? सच्चे दिल का पश्चात्ताप।

हमारे अनुभव की ही बात है कि बच्चा सैकड़ों गल्ती करके भी यदि माँ की गोदी में जाकर रोने लगता है तब माँ बच्चे की सभी गल्तियां माफ कर प्यार करने लगती है। वैसे परम कृपालु परमात्मा रूप माँ के श्रीचरणों में बच्चे बन पश्चात्ताप के आंसू बहाने वाले की सभी गल्तियां परमात्मा माफ कर देता है क्योंकि पश्चात्ताप के एक आंसू में करोड़ों जन्म के पापों को नाश करने की क्षमता है।

संसार में धन के उपार्जन में रोना सहज है, मित्र की दगाबाजी से रोना सहज है, पत्नी की बेवफाई से रोना सहज है, धंधे में नुकसान होने से रोना सहज है परन्तु किये हुये पापों के पश्चात्ताप से रोना अति कठिन है। पापों का पश्चात्ताप तभी हो सकता है कि जब पाप खराब लगे, क्रोध बुरा तभी लगता है कि जब क्षमा पसन्द हो, अहं बुरा तभी लगता है कि जब नम्रता से प्यार हो, माया खराब तभी लगती है कि जब सरलता की चाह हो, लोभ पाप का मूल तभी लगता है कि जब सन्तोष से लगाव हो। एक का आना और एक का जाना साथ में होता है।

हमें कभी-कभी कषाय भी बुरे लगते है परन्तु कब? क्रोध बुरा तब लगता है कि जब क्रोध करने से कार्य मे निष्फलता मिली हो, लोभ खराब तब लगता है कि जब बेईमानी करते बेइज्जती हो जाय, माया खराब तब लगती है कि जब माया करते पकड़ा जाय। अन्यथा कषाय करते समय पुण्य का साथ हो तो यही कषाय शहद जैसे मधुर लगते है। उस वक्त पाप करने का पश्चात्ताप नहीं होता है तब परमपिता परमात्मा का कहना है कि मस्ती से किये गये पापों से छूटने का भी एक रास्ता है। वह है हृदय की शुद्धि के साथ पुनः पाप नही करने के संकल्प पूर्वक किये गये पापों का पश्चात्ताप। सब पापों का त्याग जीवन में पापों से मुक्ति दिलायेगा। पश्चात्ताप में ऐसी अनूठी शक्ति है, गजब की ताकत है। अधिक देर की बात नहीं। अपने शरण में आये हुए मृगावतीजी के पश्चात्ताप ने पल दो पल मे केवलज्ञान दे दिया। झांझरिया ऋषि के हत्यारे राजा को परम पंथ का प्रवासी बना दिया। खंधक मुनि जीकी चमड़ी उतरवाने वाले राजा को मुक्ति के मंगलधाम का मालिक बना दिया। यह है पश्चात्ताप की महिमा।

हम भी इस महापर्व की आराधना पाप का पश्चात्ताप एवं पुनः पाप नहीं करने के संकल्प के साथ करेंगे तो हमारी यह आराधना हमको अनेकों प्राणियों के कल्याण में निमित्त बनाकर अन्त में शाश्वत निर्मल, आदर्श सम उज्ज्वल परम पावनकारी मुक्ति मंदिर में पहुंचायेगी।

पर्युषण महापर्व की आराधना स्व-पर का कल्याण करने वाली बने, यही शुभेच्छा। ●

प्रसंग परिमल

सत्याग्रह

□ मुनि नवीनचन्द्र विजय

शिवगज से निकला छरीपालित यात्रा मघ राणकपुर की यात्रा कर देसुरी गाव मे पहुचा। देसुरी मे किसी धार्मिक कार्य को लेकर श्रावको के के बीच उग्र कलह चल रहा था। मामला कोर्ट तक पहुँच चुका था।

आचाय विजय वल्लभ शातिप्रिय आचाय थे। श्रावको के बीच हो रहे अनेक टकराम्रा को उन्होंने बडी कुशलता से सुलझाया था। उनका मानना था कि धम समस्या या झगडे को मिटाता है। धर्म को समस्या मे उलभा देना मनुष्य की सबसे बडी धृष्टता है। जो व्यक्ति धर्म को लेकर लडता है वह धार्मिक नही हो सकता। धर्म आचरण की वस्तु है विवाद की नहीं।

उन्होने देसुरी मघ मे हो रहे कलह को भी सुलझाने का प्रयत्न किया। अनेक युक्तियुक्त दलील देकर श्रावको का भ्रमजाल मिटाने का अथक प्रयत्न किया, पर ओवर कोट की तरह वे गीले न हुए। वृद्ध जडमती श्रावक ऐसे थे जिन्होंने उस विवाद को निजी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया था।

जब सभी ओर से सुलह के द्वार बन्द हो गये तो आचाय विजय वल्लभ ने अपने साधु और साध्वियो को निर्देश दे दिया कि गाव से न पानी लाया जाए न गोचरी। जब तक गाव का झगडा नही मिटता गोचरी-पानी बन्द कर दो। इस सघ मे सत्ताईस साधु और छियासठ साध्वियाँ थी।

नवकारसी का समय हुआ। गाव के श्रावक-श्राविकाओ ने आकर गोचरी पानी की विनती की। साधु-साध्वियो ने आचार्यो श्री की आज्ञा सुना दी। अत्यन्त आग्रह करने पर भी विनती स्वीकृत न हुई तो श्रावक-श्राविकाएँ निराश होकर घर लौट गये। उन्हें बहुत दुःख हुआ, इस बात का कि हमारे परम पूज्य, परम आराध्य साधु-साध्वी हमारे कारण आहार नही ले रहे हैं। इन्हें इतना कष्ट भोगना पड रहा है।

इस समाचार से देसुरी गाव मे हलचल मच गयी। चारो ओर साधु-साध्वियो के सत्याग्रह की चर्चा होने लगी। लोग मुकदमेबाजो को फटकारने लगे। अनेक भावनाशील युवक, महिलाएँ, बच्चे, वृद्ध, वृद्धाएँ, श्रावक, श्राविकाएँ जो छरीपालित यात्री थे अनशन पर उतर गए। झगडा मिटाने का एक जबदस्त अभियान प्रारम्भ हुआ। पूरा गाव एकत्र हो गया घर-घर और गली गली मे सभाएँ होने लगी। झगडालुओ के घर जाकर लोगो ने उन्हें समझाया।

अन्त मे चार बजे समझौता हो गया। दोनो पक्षो के लोगो ने आचार्य विजय वल्लभ एव अन्य साधु साध्वियो से अपनी धृष्टता, अविनय के लिए आँखो मे आसू भरे क्षमा मागी और भविष्य में कभी कलह न करने की प्रतिज्ञा ली। जब पूरा फैसला हो गया तब सब ने अन्न-जल ग्रहण किया।

□ □ □

महापर्वश्री पर्युषण नजदीक आ रहे हैं। अखिल भारत के जैन लोग इस पर्व को बड़े आनंद एवं उल्लास से मनायेंगे। कोई जैन ऐसा नहीं होगा जो इन दिनों में धर्म सन्मुख न बने। इस पर्व के दौरान कई भाग्यशाली 8, 16, 30, 45 वगैरह उपवासों की महान् तपश्चर्या करेंगे। सचमुच कितना अनूठा है यह पर्व! हर वर्ष यही पर्व आ रहा है, फिर भी उतने ही उल्लास में लोग आराधना में तल्लीन होते हैं—यह इस पर्व की महिमा है।

शायद आपका प्रश्न होगा कि—हर वक्त यही पर्युषण, यही कल्पसूत्र, यही मिच्छा मि दुक्कडं—यह सब क्या? कुछ नया तो होना चाहिए न? लेकिन हमें समझना चाहिए कि कई वस्तुओं में पुनरुक्ति दोष नहीं लगता। आदमी प्रतिदिन वही रोटी खाता है, वही दुकान पर बैठता है, वही दवाई लेता है, वही आदमियों के साथ रहता है, फिर भी कोई ऐसा नहीं कहता—प्रतिदिन यह एक ही क्या? जैसे हम वही दवाई लेते हुए कभी उद्विग्न नहीं होते, वैसे ही आराधक भी वही आराधना करता हुआ भी उद्विग्न नहीं होता, प्रत्युत्, बड़े उल्लास से करता है। हर वक्त उसे आराधना में नवीनता की अनुभूति होती है। हम प्रतिक्षण विकास की दिशा की ओर आगे बढ़ रहे हैं। प्रतिपल हमारे में ज्ञान की वृद्धि होती जा रही है। अतः हमारी दृष्टि भी ज्यादा विकसित एवं स्पष्ट होती जा रही है। और इसलिए ही आराधना में से नित्य नवीनता का स्फुरण होता रहता है। पर्वत पर आरोहण करते हुए आदमी को जैसे नीचे का दृश्य साथ प्रतिक्षण भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देता है—नीचे से अलग, मध्य से अलग और शिखर से अलग दिखाई देता है—वैसे ही आराधना में भी होता है। आपने कोई पुस्तक 10 साल पहले पढ़ी होगी, उसे आज फिर देखिए। [illegible] स्फुरित होंगे वे उससे [illegible] बिल्कुल ही अलग भाव पैदा होंगे। क्योंकि 10 साल में आप बहुत ही आगे बढ़ चुके हैं।
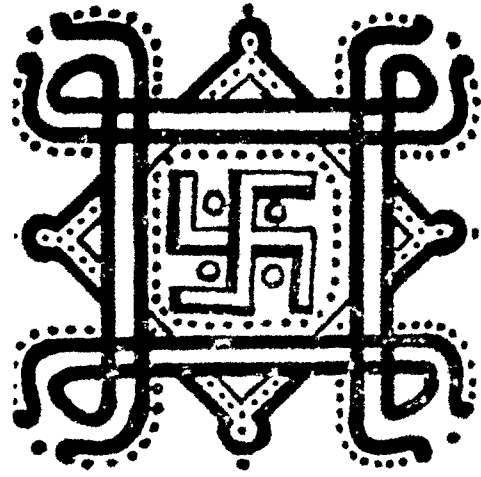
जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा

☐ पूज्य आचार्य श्री विजय कलापूर्ण सूरीश्वरजी के प्रशिष्य पूज्य मुनिश्री मुक्तिचन्द्र विजयजी
कृष्णानगर, अहमदाबाद-45

यह बात पर्व की आराधना में होती है।

कई लोग ऐसा भी प्रश्न करते हैं कि—इन दिनों में विशेष धर्माराधना क्यों? धर्म तो प्रतिक्षण एवं प्रतिपल आराधना करने की चीज है। उसे फिर समय और काल का बन्धन कैसा? दिन तो सभी समान है। कभी भी आराधना कर डालो, फल समान ही नहीं है? पर्युषण में ही विशेष तप आदि की आराधना क्यों?

यह प्रश्न प्रथम नजर में विचार में डाल देता है। लेकिन जो जैन-दर्शन की सूक्ष्मता समझता है, वह तो जानता है कि सभी दिन कभी समान नहीं होते। ज्योतिष का जिसे अभ्यास होगा उसे मालूम होगा कि—सभी दिन अलग-अलग होते हैं।

क्योंकि ग्रह, नक्षत्र, राशि आदि सब सतत पलटाते रहते हैं।

शास्त्रकार कहते हैं कि - हमारे परभव की आयुष्य प्राय पर्व दिनो मे बंधी होती है। अत उन दिनो मे विशेष धर्माराधना करना चाहिए। क्योंकि दुर्गति से आत्मा को बचानी है। जहाँ से बहुत कठिनाई से बाहर आये उस दुर्गति मे जाना कौन धर्मी इच्छेगा ?

सस्कृत मे 'पर्व' शब्द का अर्थ ग्रन्थि होता है। जैसे ईख-बास आदि मे ग्रन्थिया होती हैं वैसे समय मे भी ग्रन्थियाँ होती हैं। (सस्कृत मे बास का नाम 'शतपर्वा' एव ईख (गन्ना) का नाम 'दीर्घ-पर्वा दिखाया गया है।) जब हम ऐसी समय की ग्रन्थी मे से गुजरते हैं तब हमारे परिणाम प्राय क्लिष्ट होते हैं। इस क्लिष्ट अवस्था मे हम दुर्गति की आयुष्य न बाध दें—इसलिए पर्व के दिनो मे विशेषत धर्म की आराधना करणीय है। (पर्व दिनो मे हरी सब्जी, फल आदि के त्याग का यही कारण है कि—'रस की आसक्ति से आत्मा कही दुर्गति की आयु न बाध दे।)

सामान्य रूप से समय की ऐसी ग्रन्थियाँ हर दो दिन छोडकर आती हैं। जैसे दूज, पचमी, अष्टमी इत्यादि। इन तिथियो को पर्वतिथि कही जाती है। [सध्या का समय (दिन-रात का विभाग करनेवाला काल) भी ग्रन्थि का ही समय है, इसलिए ही सुबह शाम प्रतिक्रमण की आराधना विहित है।] इन पर्व तिथियों मे पाक्षिक, चातुर्मासिक, सावत्सरिक पर्वतिथिया क्रमश अधिक महान् मानी जाती हैं।

ज्ञानी महात्मा बताते हैं कि—इन दिनो मे आपकी आत्मा में प्रकाश फैलाइये। उस प्रकाश में देखिए कि—मैंने किसी आत्मा को दुख तो नही पहुँचाया ? किसी के साथ वैर-विरोध तो नहीं हुआ ? क्रोध मे आविष्ट होकर किसी पर मैं आग-बबूला तो नही हुआ ? अभिमान से किसी का तिरस्कार तो नही किया ? किसी के साथ माया तो नही खेली ? लोभ से किसी को खड्डे मे तो नही डाला ?

ससार-वृक्ष का अगर कोई मूल है तो कषाय है। कहा है कि—"मूल हि ससार तरो कषाया"। धर्मी उसे ही कहा जाता है कि जो कभी कषाय के आधीन न हो। शायद वह कषायाधीन हो भी जाय तो उसी दिन अतर को साफ कर डाले। अतएव दैनिक प्रतिक्रमण का विधान है। शायद कोई कषाय रह जाय तो पन्द्रह दिन मे साफ कर ही डालें। इसलिए ही पाक्षिक प्रतिक्रमण का विधान है। इस वक्त भी अतर साफ न हुआ तो चार मास मे होने वाले चौमासी प्रतिक्रमण के समय तो कषाय काट ही दें। इस वक्त भी कषाय रह जाय तो प्रतिवर्ष आने वाले सावत्सरिक प्रतिक्रमण के समय तो अवश्य ही कषाय को दूर कर दे। शास्त्रकार कहते हैं कि—यह लास्ट चान्स है कषाय का काटने का। अगर इस वक्त भी आप चूक गये तो आप जैन ही नही रह पाएँगे। भले ही आपके ललाट मे तिलक हो, भले ही आपके हाथ मे चरवला हो, लेकिन अगर आपके अतर मे कषायो की ज्वाला जल रही है तो आपमें से जैनत्व स्वयमेव हट जाता है। आपके पास सिर्फ धर्म का कलेवर रह जाता है, प्राण चले जाते हैं। धर्म के बाह्य क्रियाकाड कलेवर है और कषायो का क्षय धर्म प्राण है। जहाँ कषाय का क्षय नही वहाँ धर्म कैसा ?

जब किसी आत्मा के प्रति हमारी आत्मा मे एक काल से भी अधिक समय तक कषाय रह जाय तो वह अनन्तानुबधी बन जाता है। अनतानुबधी कषाय माने नरक का नेशनल हाइ वे। अनतानुबधी कषाय के उदय मे सम्यग्दर्शन चला जाता है। सम्यग्दर्शन गया उसके साथ जैनत्व भी गया ही समझो।

इसीलिए ही पर्वाधिराज का संदेश है—क्षमापना। क्षमा याचो। क्षमा करो और कषायों का विसर्जन करो।

अगर हमारी कोई गलती हुई हो तो पास में जाकर माफी याचो। अगर किसी ने हमारी गलती की हो तो उसे माफ करदो। इसी में ही धर्म का सार छिपा है, आराधना का प्राण इसी में ही है।

श्री भद्रबाहु स्वामी महाराजा कल्पसूत्र मे बताते है कि—"खमियव्वं उवसमसार उपसमियव्व उवसमावियव्वं, जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जो नो उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा, तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्वं,""""उवसमसार खु सामण्ण।"

"हम स्वयं शान्त बने, दूसरो को भी शान्त बनाएँ। जो शान्त बनता है, उसकी आराधना है, जो शान्त नही होता उसकी आराधना नही है। अत: हमें अवश्य ही शान्त होना चाहिए। प्रवचन का सार मात्र है—उपशम।"

समग्र कल्पसूत्र का नवनीत सिर्फ इतने मे ही है, क्षमा मे ही है।

क्षमा—

शास्त्र में क्षमा के पांच प्रकार दिखाए है। (1) उपकार क्षमा, (2) अपकार क्षमा, (3) विपाक क्षमा, (4) वचन क्षमा (5) धर्म क्षमा।

(1) उपकार क्षमा—जिस आदमी का हमारे पर बहुत ही उपकार हो, उसकी गलती को क्षमा कर देना—उपकार-क्षमा है। जैसे संकट के समय पर रुपए आदि की सहायता देनेवाला कभी कोई अपराध कर बैठे या दुर्वचन बोल दे [illegible] क्षमा, उपकार-क्षमा है।

(2) अपकार-क्षमा—[illegible] जानेवाली क्षमा अपकार-क्षमा है। जैसे किसी दुर्बल आदमी की समर्थ आदमी के प्रति।

(3) विपाक-क्षमा—"क्रोध के फल अति भयंकर होते है। परभव में सांप, बिच्छू, शेर आदि अवतार लेने पड़ते हैं। नरक की घोर यातनाएँ सहनी पड़ती है।" इस प्रकार विपाक (फल) का विचार करके होने वाली क्षमा विपाक क्षमा है।"

(4) वचन-क्षमा—"मेरे भगवान ने क्रोध करने की मना की है। मेरे प्रभु ने कहा है—क्रोध मत करना।"—इस प्रकार प्रभु के वचन सामने रखकर दी जाती क्षमा वचन-क्षमा है।"

(5) धर्म-क्षमा—धर्म की गहरी समझ मे से पैदा हुआ जो आत्मा का स्वाभाविक क्षमा गुण, वह धर्म-क्षमा है। यहाँ क्षमा करने के लिए कोई आयाम नही करना पड़ता। स्वयं क्षमा हो जाती है। चंदन को अगर कोई काटे, फिर भी उसमें से तो सुगंध ही निकलेगी। क्योंकि सुगंध चंदन का स्वभाव है। उसी तरह से यह क्षमा जिसे आत्म-सात् हो गई उसे कोई काटे, पीटे, पीसे फिर भी वे क्षमा-धर्म से वंचित नही होते। गजसुकुमाल, मेतार्य मुनि, स्कंधक मुनि आदि की क्षमा ऐसी थी।

प्रथम तीन क्षमा मिथ्यात्वीओ को भी हो सकती है। अंतिम दो सम्यक्त्वी आत्माओ को ही होती है।

क्षमा पर्युषणा का सार एवं आराधना का प्राण है। इसीलिए ही हमारे जैन मुनि का सार्थक नाम 'क्षमाश्रमण' है। क्षमा को जो धारण करे वह—क्षमाश्रमण।

बहुत से लोग ऐसा मान लेते है कि क्रोध को [illegible] क्षमा हो गई। क्षमा हो गई तो पर्व की आराधना भी हो गई। किन्तु वे लोग भूल जाते है कि पर्युषण-पर्व [illegible]

के लिए ही नही कहता। मान माया-लोभ को भी निकालो—ऐसा कहता है। कपाय शब्द से चारो कपाय आ जाते है। अगर 12 मास से अधिक रहा हुआ क्रोध नरक मे ले जाय तो 12 मास से अधिक रहे हुए मान माया-लाभ नरक मे नही ले जाएँगे ? बहुत ही कम लोग भीतर मे मान आदि तीन कपायो का निरीक्षण एव उपशमन करते हैं।

राग-द्वेप को शान्त करने का नाम उपशम-भाव है। श्री भद्रबाहु स्वामी महाराजा ऐसे उपशम-भाव को धारण करने के लिए कहते हैं। क्रोध-मान द्वेपात्मक और माया-लोभ रागात्मक है। राग द्वेप को अगर शात करत हैं तो चारो कपायो को शात करने ही चाहिए।

फिर भी हमारे पयु पण मे क्षमा ही अधिक प्रसिद्ध है, विनय, सरलता, संतोप आदि क्यो प्रसिद्ध नही है ? इसका कारण यह जान पडता है कि शेप तीन कपाय पर विजय प्राप्त किये बिना क्षमा का प्रकटीकरण होता ही नही है। क्रोध पर अगर विजय पाना है तो मान-माया और लोभ को जीतना ही होगा।

स्व के प्रति तीव्र राग से (माया लोभ रागात्मक हैं) जीव को अभिमान पैदा होता है। मैं कुछ हूँ' ऐसी भावना जागृत होती है। ऐसी आत्मा के अभिमान को जरा सी ठोकर लगती है तब वह क्रोध से आग बबूला हो उठतो है। अत क्रोध को जीतना हो तो शेप चार कपायो को जीतना ही होगा। अभिमानी कसे क्षमा माग सकेगा या दे सकेगा ? स्व का तीव्र रागी मायावी एव लोभी आदमी अभिमान का त्याग कैसे कर सकेगा ? अत समझा जाता है कि क्रोध के विजय म अन्य तीन कपायो का विजय भी करना ही होता है।

वास्तव मे चारो कपाय में खतरनाक से खतरनाक अगर कोई कपाय है तो वह लोभ है। लोभ से ही दूसरे तीन कपाय पैदा होते हैं। निश्रा के आरोहण मे भी लोभ सबसे लास्ट (10वें गुणस्थानक पर) विनष्ट होता है। लोग भी लोभ को पाप का बाप कहते हैं। रुपए के लोभ से दुकानदार ग्राहक को छलता है। अत लोभ से माया पैदा हुई। माया कर के प्राप्त सपत्ति पर आदमी को गर्व होता है। अत माया से मान आया। सपत्ति लेने के लिए जब कोई आक्रमण करता है तब उसे क्रोध आता है। अत मान से क्रोध आया। अत सब कपायो का मूल लोभ है। फिर भी लोभ की शान्ति के लिए क्यो न कहा ? क्रोध-नाश के लिए ही इतना उपदेश क्यो दिया जाता है (पर्यु पण मे) ?

इसका कारण यह जान पडता है कि क्रोध दिखता है, लोभ दिखता नही है। लोभ पर विजय पाने की अपेक्षा क्रोध पर विजय पाना सरल है। अत सरल पर पहले विजय पाकर शनै शनै कठिन कपायो पर भी विजय मिल जाएगी।

चारो कपाय, 'कपाय' के तौर पर तो एक ही है। कपाय का आद्य चरण क्रोध है और अतिम चरण लोभ। क्रोध, कपाय का ऐसा चरण है जो दिखता नही, हमारी पकड मे से छूट जाता है। (इसलिए ही लोग क्रोधी आदमी को कपायी कहते हैं, लेकिन लोभी को कोई कपायी नही कहता।) तो जो चरण दिखाई पडता है इस पर प्रथम विजय प्राप्त करना आवश्यक है। जब उस पर विजय प्राप्त करने का साधक-प्रारम्भ करता तब उसमे अतर-निरीक्षण की शक्ति बढती जाती है। वह अपन मन मे चलते विचार-तरगो का सूक्ष्म रूप से अवलोकन करता है तब उसे समझ मे आता है कि—क्रोध का मूल मान है। जब-जब मेरे मान पर ठोकर लगती है तब तब मुझे गुस्सा आता है। अत अगर मुझे क्रोध को निकालना है तो मान को निकालना ही होगा। फिर अन्तर-निरीक्षण आगे चलता है। वह देखता है कि—

मान का कारण स्व का राग है। राग का मूल माया-लोभ है। मुझे अगर मान पर विजय पाना है तो माया-लोभ पर भी विजय पाना ही होगा। ऐसे सच्ची क्षमा पाने के लिए चारों कषाय जीतने पड़ते हैं। इसीलिए ही पर्युषण के दौरान क्षमा की इतनी महिमा की जाती है।

'पर्युषण' किसे कहते हैं ?

अब हम 'पर्युषण' शब्द का अर्थ क्या होता है ? जरा समझ ले। परि+उषण=पर्युषण। परि=समग्र रूप से, उषण=वसना। समग्र रूप से वसना उसे 'पर्युषण' कहते है। स्थूल रूप से यह अर्थ मुनियों से संबंधित है। क्योंकि वे चातुर्मास के दौरान एक जगह पर स्थिर रहते है, वसते हैं। लेकिन सूक्ष्म रूप से अगर देखा जाय तो यह अर्थ हर साधकों से संबंधित है। समग्र रूप से बसना उसका नाम पर्युषण। तो कहां वसना ? कहां स्थिर होना ?

पर्युषण पर्व का सन्देश है कि—

"अंधकार को छोड़कर प्रकाश में वसो।
असत् को छोड़कर सत् में वसो।
जड़ को छोड़कर चैतन्य में वसो।
क्रोध को छोड़कर क्षमा में वसो।
मान को छोड़कर विनय में वसो।
माया को छोड़कर सरलता में वसो।
लोभ को छोड़कर संतोष में वसो।
विभाव को छोड़कर स्वभाव में वसो।
पर को छोड़कर स्व में वसो।"

अगर हम इतना करें तो पर्युषण की आराधना सफल है। कषायों के उपशमन में ही पर्युषण की आराधना है।

श्री भद्रबाहु स्वामी ने इसलिए ही कहा है—

'जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा।'
जो उपशान्त होता है, उसकी आराधना है।

"उपदेशी दोहे"

अरिहंत सिद्ध समरू सदा, आचरण उवज्झाय,
साधु सकल के चरण कुं, वन्दूं शीश नवाय ॥ 1 ॥
सर्वो मन्त्र शिरोमणी, मन्त्र बड़ो नवकार,
भाव धरी जपतां लीजे, सुख सम्पत्ति अपार ॥ 2 ॥
विनय बड़ो संसार में, विनय विन नहिं ज्ञान,
विनय धर्म सेवो सदा, छोड़ उर अभिमान ॥ 3 ॥
भव भ्रमण के चक्रों को, किया अनंती बार,
महा पुण्य से मिला, मानव का अवतार ॥ 4 ॥
जन्मधरी इस संसार में, क्या मिला ज्ञान,
निर्मल मन से भाव से करना यह विचार ॥ 5 ॥
मात, तात, भ्राता सब, स्वजन तणे संगाथी,
संग जाना जीव को, पुण्य - पाप लेके साथ ॥ 6 ॥
कहां से आया ? कहां जाना, कैसे होगा धन्य अवतार,
इस दुःखी संसार में, शोधो तारणहार ॥ 7 ॥
सद्गुरु का सत्संग करके, करो सच्चे काम,
'रंजन' कहे शुभ पंथ से, पहुंचो शिवपुर धाम ॥ 8 ॥

—रंजन सी० मेहता

जाग्रत जीवन ही वास्तविक जीवन

☐ डॉ० नरेन्द्र भानावत

यदि आप किसी विशाल एवं अगाध समुद्र के किनारे खड़े होकर मनोयोगपूर्वक देखें तो आपको पता चलेगा कि उसके ऊपरी सतह पर असख्य-अगणित लहरें-तरंगें हवा के झोंके के साथ क्षण-प्रतिक्षण उठती, प्रवाहित होती और मिटती रहती हैं। परस्पर टक्कर खाती, हिलोरें लेती, तट तक आती और विलीन हो जाती हैं। यह दृश्य आप सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक और सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक एक दिन नहीं, प्रतिदिन देख सकते हैं। उत्पाद और व्यय, व्यय और उत्पाद यह सिलसिला निरंतर चलता ही रहता है, पर इससे कुछ प्राप्त नहीं होता,- ठीक इसी प्रकार हमारा भौतिक और जैविक जीवन है। जन्म-मरण के थपेड़ों में यह उठता है, गिरता है और मिटता है। एक क्षण भी इसे विराम नहीं, विश्राम नहीं, अनवरत उत्पाद, व्यय, टूटन और अनन्त थकान, केवल झाग ही झाग।

पर समुद्र केवल इतना ही और ऐसा ही नहीं है। इसकी अगाध गहराई, अनन्त शान्ति, स्थिरता, धैर्य और मर्यादा है। इसके अन्तस्तल में रत्न और मोती हैं, श्री और अमृत है। इसी प्रकार हमारे इस बाहरी जीवन के भीतर एक आन्तरिक जीवन है, जैविक जीवन के भीतर दैविक जीवन है। परम चेतना है दिव्य गुणों से साक्षात्कार है, अखण्ड, अनन्त आनन्द की प्राप्ति है, पर इसे वही जान और अनुभव कर पाता है, जिसकी प्रज्ञा जागरूक है, जिसके अन्तरचक्षु खुले हुए हैं।

जैविक स्तर पर देखें तो मनुष्य जीवन और पशु जीवन में कोई विशेष अन्तर नहीं है। आहार, निद्रा, भय और वासना की वृत्तियाँ लगभग समान हैं, पर इन दोनों के जीवन को अलग करने वाली शक्ति है—मन की चेतना, विवेक की प्राप्ति। भूत का स्मरण कर, वर्तमान का निरीक्षण कर, भविष्य को उज्ज्वल, उदात्त और मंगलमय बनाने की कल्पना, आस्था और विश्वास। जिस जीवन में चेतना का यह रूपान्तरण होता है, वही जीवन दिव्य और सार्थक बन पाता है। दिव्यता के वरण में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र की भूमिका विशेष महत्त्वपूर्ण है। जैन दार्शनिकों ने इसे रत्नत्रय की साधना कहा है। व्यापक अर्थ में यही धर्म है। धर्म का यह तत्त्व ही मनुष्य और पशु को अलग करता है। धर्म से ही मानवता की पहचान होती है।

धर्म के मोटे तौर पर दो रूप हैं। एक निश्चय और दूसरा व्यवहार। निश्चय धर्म, आत्म रूप है। वैयक्तिक साधना और निष्ठा द्वारा ही इससे साक्षात् किया जा सकता है। समता रूप में हो यह प्रगट होता है। धर्म का दूसरा रूप व्यावहारिक है, जो समाज रूप है। अहिंसा, प्रेम, दया, प्रेरणा, परोपकार आदि इसके क्रियात्मक रूप हैं।

धर्म चाहे निश्चय रूप हो, चाहे व्यवहार रूप हो, उसे जीवन मे रूपान्तरित करने के लिए मोह को जीतना आवश्यक है। मोह ही सब पापों और विकारो का राजा है। मोह के ही रूप है—अज्ञान, विपरीत ज्ञान, संशय और आसक्ति। अज्ञान बेहोशी की स्थिति है। स्व संवेदन नही, ऐसा अज्ञानी जीव जीवित होते हुए भी जड़वत है। शरीर से परे चेतना से उसका संस्पर्श नहीं होता, वह शरीर को ही आत्मा मानकर चलता है। विपरीत ज्ञान एक प्रकार का मिथ्यात्व है, जो शरीर सुख को ही सच्चा सुख मान बैठता है। आज विश्व का अधिकांश बुद्धिजीवी वर्ग इस मिथ्या धारणा से ग्रस्त है। तथाकथित भौतिक ज्ञान ने उसके मन मे भोग के प्रति अनन्त तृष्णा जागृत कर दी है। इन्द्रियों के विषय-सुख की प्राप्ति में वह अपने अपने चिन्तामणि रत्न के समान अनमोल जीवन को खपाने में ही जीवन की सार्थकता समझ बैठा है, पर वास्तव में उसके लिए इतनी आपाधापी, दौड़ और होड़ समुद्र की ऊपरी सतह पर उठती, गिरती, मिटती तरंगों के अतिरिक्त कुछ नही है। यह स्थिति ज्ञान के बाहरी भौतिक ज्ञान से दूर नहीं होगी, आत्म ज्ञान और सम्बोधि से ही सम्यक् दिशा प्राप्त हो सकती है। विपरीत ज्ञान का ही प्रभाव है कि व्यक्ति अपनी प्रज्ञा में स्थित नहीं हो पाता, संशय और दुविधा में वह घड़ी के पेन्डुलम की भांति हिलता-डुलता रहता है। इससे उसकी शक्ति क्षीण होती चलती है और वह तनावों और द्वन्द्वों में जीता चलता है।

[illegible]

जागना नही है। आज के युग में विषयलोलुपी और धनलोभी तो रात-दिन जागते रहते है, रात को भी दिन जानकर आर्त्त और रौद्र ध्यान में प्रवृत्त होते है, पर यह जागना, जागना नहीं है। भीतर मे मोह-ग्रंथि और आसक्ति का छूटना ही वास्तविक जागरण है। ऐसा जागरण ही व्यक्ति को जैविक जीवन से ऊपर उठा कर दैविक जीवन की अनुभूति कराता है।

आज विज्ञान ने विभिन्न क्षेत्र मे चमत्कारपूर्ण आविष्कार किये है, भौतिक जीवन की नित नयी सुख-सुविधाएँ वह संसार को दिये जा रहा है, पर उससे वास्तविक जागरण की स्थिति में आनुपातिक वृद्धि नही हुई है। लगता तो यह है कि आन्तरिक चेतना अधिक मोह मूर्छित हुई है। इसीलिए नाना प्रकार की नशीली और मादक वस्तुओं के सेवन की प्रवृत्ति बढ़ी है। नित नई दुर्घटनाएँ और आपराधिक वृत्तियाँ इसके प्रमाण है।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र मे आज हम चाहे कितनी ही प्रगति की ओर राष्ट्रीय एवं सामाजिक मूल्यों की चर्चा करें, पर जब तक मोहग्रस्त अवस्था है, तब तक ये सारी बाते बेमानी है। अज्ञान, विपरीत ज्ञान, संशय और आसक्ति रूप के छूटे बिना सच्चे मूल्यों का निर्माण नही हो सकता है। जब तक देह के प्रति, भोग के प्रति लगाव बनी रहेगी, तब तक जीवन अधोमुखी ही रहेगा, बेसुध और मूर्छित ही रहेगा। जागृत जीवन के लिए शालीनता और संवेदनशीलता का विकास होना आवश्यक है। यदि विज्ञान शरीर और मन में आत्म-शक्ति को जगा सके, उसके सौन्दर्य से पल्लवित हो सके। [illegible] और [illegible] मे [illegible] तो वह [illegible] के लिए [illegible] होगा। [illegible]! [illegible]

— [illegible]

[illegible]

लेकिन खमासमण देने की विधि भी हम अभी तक नहीं सीख पाये। जिस क्रिया मे पैसा टका खर्च नही होना और हर प्रकार से लाभ ही लाभ है, उस क्रिया मे हमारी रुचि नहीं। उसे सीखने की चेष्टा नही। उलटे हम उस क्रिया को ही दोष देते हैं। उस अमृत क्रिया को ढोंग ढकोसला और रूढि कहकर जिनाज्ञा के विपरीत बोलकर अनत ससार बढाने की जोखिम मोल लेते हैं।

यह तो एक सामान्य क्रिया की बात हुई। सामायिक, पौषध काउसग्ग एव प्रतिक्रमण आदि की सब क्रियाओं में आसन तथा मुद्राओ को बताया गया है। जैसे कि सामायिक एव प्रतिक्रमण म मुहपत्ति पडिलेहण की क्रिया को ही लें तो हम ज्ञात होगा कि यह क्रिया विशिष्ट आसन से बैठकर की जाती है। जिसमे दोनों पैरो के बल बैठा जाता है, दोनो हाथ दोनो पैरों के बीच और दोनों कोहनियां नाभि को स्पर्श करती हुई रहती हैं। यह आसन वायु विकार मिटाकर पाचन शक्ति को सही रखने मे भी सहायक है। फिर हाथ मे मुहपत्ति लेकर तीन बार पलटी जाती है। फिर अगुलियो मे उसे घडी कर दोनों हाथ, मस्तक और उदर से स्पर्श करती हुई ले जाई जाती है और फिर उसकी पहले जैसी तह करदी जाती है। इस क्रिया में हाथ, अगुलियां, पट, पैर व अन्य शरीर के सब अग हिलते डुलते हैं। कहना अनुचित नहीं होगा कि एक छोटा सा व्यायाम हो जाता है। ज्ञानियों ने कितनी सुदर क्रियाएँ आसन व मुद्राओं के साथ बतलाई हैं। कितना उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहा। आप सायकाल भ्रमणार्थ नहीं जा पाते तो कोई बात नहीं। प्रतिक्रमण कर लीजिये। उसमे आपको धार्मिक, आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक एव शारीरिक, सब तरह का लाभ मिल जायगा। जिनाज्ञा का पालन भी हो जायगा। जबकि घूमने से तो केवल एक शारीरिक लाभ ही मिलता है।

यो तो ज्ञानियों ने कई आसनो एव मुद्राओ का उल्लेख किया है। जिनमे प्रतिष्ठा के समय आह्वान, विसर्जन, पच परमेष्ठी, गरुड, धेनु, सौभाग्य, अवगुठन, मुक्तिशुक्ति, स्थापना, वज्र, प्रवचन आदि कई मुद्राओ से नानाविध क्रियाएं की जाती हैं। लेकिन आज हमें उनकी जानकारी करके उपयोग में लेने के लिये 'नो टाइम' का सबसे बडा प्रश्न हमारे समक्ष है। जबकि इनके अभाव मे नाना प्रकार के रोगों के शिकार हम दिन प्रति दिन हो रहे हैं। आर्थिक कमाई के लिये हमारे पास समय है आत्मिक कमाई के लिये 'नो टाइम' का साइन बोर्ड हम सबने अपने मनो पर एव घरों पर लगा रखा है। ज्ञानी जाने हमारा क्या होगा? आज हम दूसरो की ध्यान पद्धति आसन एव योग को देखकर आकर्षित होते हैं। वहाँ जाते भी हैं। जाना बुरी बात नहीं। लेकिन अपना नहीं जानना और जानने का प्रयत्न न करना यह अवश्य ही विचारणीय है।

जैन दर्शन की क्रियाओ मे एक पथ दो काज वाली कहावत चरितार्थ होती है। एक ही क्रिया मे सूत्र का पठन, अर्थ चिन्तन, परावर्तन, पृच्छना व स्वाध्याय इन सब तपों का कैसा सुन्दर सुमेल। बाह्य और आभ्यतर दोनो प्रकार के लाभ। सोचे समझें तो यह कोई कम बात नही।

लिखने का तात्पर्य केवल इतना सा है कि हम इन क्रियाओ में रहे हुए रहस्यो को समझने का प्रयास करें, तो जो लाभ हमे इस समय मिल रहा है वह द्विगुणित एव शतगुणा हो जायगा। जिन क्रियाओ को हम फालतू समझ बैठे हैं, यह हमारा भ्रम दूर हो जायगा। हमारी रुचि उनमे बढेगी। इस तरह हमारी वह क्रिया शुद्ध, बुद्ध एव उपयोगी होगी। ऐसी क्रियाओ का जो आह्लाद अन्तमन मे होगा वह अनुभूति का विषय होगा, शब्दो में कहने का नहीं। ●

आदरणीया साध्वी मण्डल के नगर प्रवेश का भव्य दृश्य

★ दिनांक २० जुलाई, १९८८ का दिन सभी धर्म-प्रेमी बन्धुओं के लिये एक प्रेरणास्पद एवं हर्ष-विभोर करने वाला दिन था, जिस दिन परम आदरणीया साध्वी मण्डल ने जयपुर नगर प्रवेश के अवसर पर सभी धर्म-प्रेमियों को अपने आशीर्वचन से धन्य कर दिया।
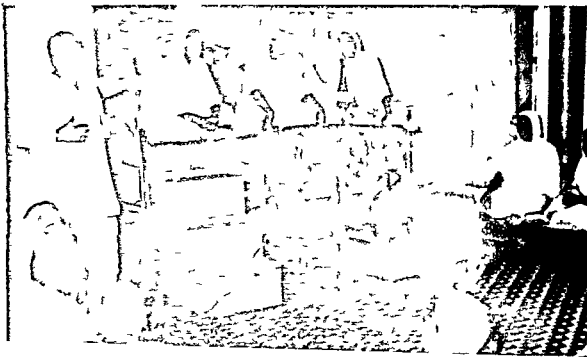
परम आदरणीय
साध्वी मण्डल के
आत्मानन्द सभा भवन
मे प्रवेश के समय
अध्यक्षजी द्वारा स्वागत
एव अभिनन्दन

प्रवेश के समय
उपस्थित
भाई बहिनो
का समूह

पू साध्वी साहब की
प्रेरणा से आयोजित
भक्तामर
महा-पूजन
का दृश्य

क्रिया फलवती नहीं है। क्रिया रहित ज्ञान और ज्ञान रहित क्रिया निष्फल है।

इस प्रकार समकित के 67 बोल का विचार कर जो समकित की आराधना करता है, आचरण करता है, और राग तथा द्वेष का त्याग कर मन को वश मे करता है उसको समता रूपी सुख प्राप्त होता है—ऐसा यशोविजयजी महाराज ने फरमाया है। सम्यक्त्व का इतना महत्त्व है कि इसके बिना ज्ञान, चारित्र और तप सम्यक (सही) रूप से नही हो सकता—आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रकट नही हो सकता। अतः हमको सम्यक्त्व प्राप्ति का प्रतिपल पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए।

—बी–61, सेठी कॉलोनी, जयपुर।

अन्तर्जीवन का थर्मामीटर

□ प. पू. आचार्य श्री रामसूरीश्वरजी (डहेलावाला) म. श्री की आज्ञानुवर्तिनी गुरुणीजी श्री कल्पलताश्रीजी म. सा. की शिष्या साध्वी भद्रपूर्णाश्री

भावना मानव क्या प्रत्येक प्राणी के अन्तर्जीवन का एक प्रतिबिम्ब है। भावना एक प्रकार का जीवन सम्बन्धी थर्मामीटर (मापदंड) है। जो समय-समय पर हमें मानव की मन मस्तिष्क रूप कंदरा में उभरी हुई वृद्धि हानि का स्पष्टतः ज्ञान कराती है।

"भावना भवनाशिनी" एवं "भावना भववर्द्धिनी"

अर्थात् एक अन्तर्मुहूर्त के अन्दर यह जीवात्मा कर्म का विजेता शिवपुरी का सम्राट् बन सकता है और उतने ही काल में जीवन बिगाड़ कर सातवीं नरक का अतिथि भी बन सकता है। इस दुहरी स्थिति में जीवात्मा की शुभाशुभ भावना ही कार्य करती है।

भावना मननव एक प्रकार की उर्वरा मानस स्थली के उद्गार विचार व लेश्या है। संज्ञी जीवों से भावना का सम्बन्ध निकटतम रहा है। ये उद्गार शुभ-अशुभ एवं शुद्ध भी होते हैं। जिसमें केवल आत्मचिन्तन ही हो वह शुद्ध है। जिसमें परमार्थ की विचारणा हो वह शुभ है। जिसमें केवल इन्द्रिय सम्बन्धी मलिन चिंतन हो वह एकान्त अशुभ है। जो जीव बेचारे मनपर्याप्ति से विहीन है जैसे कृमि, कीट, पतंग, भ्रमर आदि वे सब सर्वोत्तम भावना से रहित हैं। किन्तु संज्ञी पंचेन्द्रिय प्राणी एवं मानव शुभ भावना के पकड़ने पर अपने भाग्य को तेजस्वी यशस्वी बना सकता है। अतः मानव को हर पल सावधानी के साथ उच्च प्रवृत्ति से आगे बढ़ते हुए सतत निर्मल आदर्श सत उज्ज्वल भावना में लीन रहना चाहिए।

आप और हम सभी इसी भावना को प्राप्त करें, यही शुभेच्छा।

—जैन उपाश्रय, सिरोही (राज.)

साबूदाना : आखिर क्या खा रहे है हम ?

□ साध्वी महासती जसूमति बाई
गोंडल सम्प्रदाय

यहा मैं जो निख रही हूँ वह कोई कही-सुनी या पढी हुई बात नही है बल्कि प्रत्यक्ष देखी हुई बात है।

दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य के सेलम क्षेत्र मे साबूदाना उद्योग एक सुविकसित उद्योग है। विहार करते हुए मद्रास और कोयम्बटूर के बीच साबूदाने के कई कारखाने आते हैं। अकेले सेलम के आस पास ही लगभग 250 फैक्ट्रियाँ हैं। इन कारखानो से कोई दो-ढाई किलोमीटर की दूरी से ही गन्ध का दौर शुरू हो जाता है, वह गन्ध इतनी तीखी और असह्य होती है कि रोड पर चलना ही मुश्किल हो जाता है।

विहार करते हुए साथ चल रहे एक भाई को मैंने सहज ही पूछा कि—"यह बदबू कहाँ से आ रही है ? क्या इर्द गिर्द कोई खाद या शक्कर की फैक्ट्री है ?"

उसने कहा—'नही, यह दुर्गन्ध साबूदाना फक्ट्रियो की है। इस रोड पर साबूदाने की कई फैक्ट्रिया हैं।'

सयोगवश विहार करते हुए हमे एक फैक्ट्री मे ही ठहरना पडा। वहाँ हमने यह देखा और सोचा कि क्या साबूदाना खाने योग्य है ?

साबूदाने के लिए अब तक मेरे दिल मे था कि यह चावल से बनता है। वास्तव मे साबूदाना कोई फल नहीं है, यह एक फैक्ट्री उत्पादन है। अब देखने से पता चला कि साबूदाना सकरकन्द से बनाया जाता है। तमिलनाडु के इस क्षेत्र मे सकरकन्द इफरात से होता है। यहाँ तक कि एक सकरकन्द 5 6 किलो का भी होता है।

सकरकन्द की ऋतु मे कारखानेदार इसे खरीदकर इकट्ठा कर लेते हैं और बाद मे इसका मावा बना लेते हैं, मावा अथवा गूदा बनाने की प्रक्रिया बडी लोमहर्षक है। तैयार गूदे को खुले मैदान मे 40'×25' तथा 40'×35' वग फुट बनी कुण्डियो म डाल दिया जाता है और उसे कई महीनो तक सडाया जाता है।

इस तरह हजारो टन गूदा इन कुण्डियो मे खुले आसमान के नीचे पडा रहता है। रात मे इन कुण्डियो पर बडे बडे बल्ब जलाये जाते हैं, जिसके कारण अनेक जहरीले जीव-जन्तु इनम गिरते हैं और अन्दर ही दम तोड देते हैं।

दूसरी ओर मावे (गूदे) मे पानी डालते रहते हैं, फलस्वरूप उसमे सफेद रग की करोडो लम्बी लम्बी लटें पड जाती है, ठीक वैसी ही जसी प्राय मद्रास की गटरो मे उत्पन्न होती हैं। आठ-दस दिन के बाद इन कुण्डियो मे छोटे-छोटे श्रमिक बच्चो को उतारा जाता है और मावे (गूदे) को रुंधवाया जाता है। रौंधने की इस क्रूर प्रक्रिया से लटें मर जाती हैं। यह प्रक्रिया 4-6 महीने तक बराबर चलती है तत्पश्चात् गूदे को निकाल कर मशीनों मे डाला जाता है। जो साबूदाने के रूप मे बाहर आता है। सुखाये जाने के बाद इन पर ग्लूकोज और स्टाच से बने पाउडर की पालिश की जाती है।

इस तरह यह निर्विवाद है कि साबूदाने के उत्पादन में भारी जीवहिंसा होती है और वह सेहत के लिए घातक है। यदि मैं नग्न सत्य कहूँ तो साबूदाना यानी करोडो लटो का कलेवर।□

—'हैल्थ ऑबजर्वर एण्ड मेडिसिन' से सकलित

कहां ले जाएगा धर्म पर धन का प्रभाव समाज को

☐ हीराचन्द बैद

आजकल करीब-करीब रोज ही बहुत सुन्दर-वृहत्काय आमंत्रण पत्रिकाएँ धर्म स्थानों पर आती रहती हैं। इन मनमोहक पत्रिकाओं की अनुमोदना का भाव पढ़ने वालों को आना स्वाभाविक है। कहीं उपधान तप, कहीं उसका माल महोत्सव, कहीं उजमणा, कहीं प्रतिष्ठा, कहीं अजनशलाका, कहीं यात्रा संघ, कहीं महापूजाएँ, ऐसा लगता है, इनको देखने से कि जैन शासन में इन दिनों धर्म आराधनाएँ खूब बढ़ गई है। यदि 25-50 वर्ष पहले का इतिहास इस सम्बन्ध का देखें तो ऐसा लगेगा आज धर्म क्रियाओं का खूब विकास हुआ है, खूब जागृति आई है, धर्म के प्रति खूब उत्साह जागा है समाज में। यह है सिक्के का एक पहलू।

दूसरी ओर समाज में इस तरह की चर्चाओं की कमी नहीं कि नई पीढ़ी में धर्म के प्रति श्रद्धा ही नहीं, विनय का तो लोप ही हो गया है। मंदिर उपाश्रय, धार्मिक पाठशालाओं के प्रति लगाव दिन पर दिन घटता जा रहा है। माता पिता के प्रति आदर भाव घटता जा रहा है। बड़ों की मान-मर्यादा प्रायः समाप्त होती जा रही है। खान-पान, रहन-सहन हमारी संस्कृति के बिल्कुल विपरीत होता जा रहा है। चारित्र सम्बन्धी बात को तो आज के लोग निजी प्रश्न मानने लगे हैं। ऐसा लगता है भारतीय संस्कृति तो हम त्याग ही रहे हैं। हम तो अपने आचरण से पाश्चात्य संस्कृति को भी पीछे छोड़कर और आगे बढ़ जाना चाहते हैं, यह सिक्के का दूसरा पहलू है?

विचारणीय प्रश्न है कि दोनों पहलू एक दूसरे के इतने विपरीत क्यों है? मेरे मन में यह प्रश्न बार-बार उठता रहा है कि ज्यों-ज्यों दवा ज्यादा की जाती है त्यों-त्यों रोग बढ़ता क्यों जा रहा है? [illegible] इस प्रश्न का समाधान [illegible] [illegible] नहीं हुआ। इसी तरह का प्रश्न [illegible] श्री [illegible] मुनिराजश्री [illegible] उन्होंने जो समाधान दिया

वह हृदय मे पैठ गया। उन्होने बताया, एक सरल उदाहरण के माध्यम से, कि एक रोगी वह भी असाध्य रोग से ग्रसित, शरीर के अन्दर भी वेदना—ऊपर भी देह की पीड़ा से दुःखी। एक निष्णात वैद्य ने उपचार प्रारम्भ किया। उसने दो दवाएँ लिखी। एक पेट में खाने की, दूसरी बदन पर लगाने की। कई दिन उपचार के बाद भी रोगी की दशा सुधरी नहीं। पुनः वैद्यजी को बुलाया गया। उन्होने सारा हाल पूछकर अपने सिर पर हाथ लगाया और कहा—"भाई जिस तरह तुम दवाओं का उपयोग कर रहे हो उससे तो कभी भी शान्ति व आराम मिलने वाला नहीं। तुम इतनी बड़ी भूल कर रहे हो कि मैं तो आश्चर्य में पड़ गया हूँ। भाई तुम शरीर पर लगाने की दवा तो खा रहे हो और खाने की दवा बदन पर मल रहे हो।"

इस उदाहरण के माध्यम से उन्होंने समझाया कि समाज भी शरीर है। [illegible] [illegible], शरीर पर [illegible]

की दवा धन है और भीतर लेने की दवा है धर्म। आज स्थिति यह हो रही है जो धम जीवन मे अन्तरआत्मा मे पैठने की चीज है वह तो ऊपरी दिखाने की चीज बन गई है और जा धन जीवन-यापन के लिये साधन रूप थी वह अन्दर पैठ रहा है। ऐसी स्थिति मे समाज रूपी रोगी की दशा बिगडेगी नही तो क्या सुधरेगी ?

बधुओ ! इतने सरल और सचोट रूपक के माध्यम से हमारे पूर्व विचार का समाधान हो ही जाता है।

आज सब ओर धन का दिखावा ज्यादा हो रहा है। चार आठ रोज का उत्सव महोत्सव समाप्त हुआ कि उसकी सारी सुवास समाप्त हो जाती है, और फिर हम वहा के वहां। वस्तुत हमारा व्यवहार और आचरण हमारी विश्वसनीयता के लिए भी प्रश्न चिह्न बन गये हैं। एक वह युग था जब तिलक लगाए ललाट वाला व्यक्ति यदि कहीं कोट मे गवाही क लिये चला जाता तो न्यायिक अधिकारी उसकी गवाही को प्रमाणित मानकर फैसला दे देते थे। मुझे क्षमा करें, आज शायद यह स्थिति बन गई है कि यदि तिलक लगा हो तो उसे मिटाकर ही वह कोट मे जाएगा। यह दशा क्यो हो रही है हमारी ? क्या हमारे मत पुरुषो व आगेवाना ने कभी सोचा है ?

'यथा राजा तथा प्रजा' यह कहावत आज भी यथार्थ है। हमारे परिवार के बुजुर्ग समाज के आगेवान, यहा तक कि देश के आगेवान जैसे होंगे वैसे ही परिवार, समाज व देश के लोग आदर्श अपनाएँगे। सच्चरित्रता दक्षता, व्यवहारिकता, विश्वसनीयता, यदि आगेवानो से नही होगी, या यो कह कि इन गुणो से सस्कारित आगेवान नही होंगे तो समाज कभी आगे नही बढ सकेगा। एक अग्रेजी का वाक्य है —

It is nice to be Important

But it is much Important to be nice

यदि उपर्युक्त शब्दो को हम सब सदैव दृष्टि के सामने रखें तो समाज को उन्नत बनाने में सहायक बनेंगे। अत हमें धन के महत्त्व को गौण कर यह प्रयास करना होगा कि धम हमारे जीवन का आधार बने। यह बात तो हुई हमारे समाज की आज की गिरती हुई स्थिति के बारे मे।

एक दूसरे पहलू पर भी आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। एक युग था जब जैनेतर समाज म जैनियो की प्रतिष्ठा थी, उनके प्रति आदर था। आज इतनी जाहोजलाली दिखने पर भी हमारे समाज के लोगो के प्रति अन्य समाज वालो का इतना स्नेह नहीं। पर क्यो ? मुझे क्षमा करें, हमारे पूर्वजों ने जिस तरह जन हितकारी कार्यों मे अपने को जोडकर समाज के लिये गौरव प्राप्त किया उसे भी हम भूलते जा रहे हैं। महामान्य वस्तुपाल तेजपाल ने कितने जनहित के कार्य किये। खेमा हेदराणी ने गुजरात के अकाल म जनता के लिये कितना महान् कार्य किया। भामाशाह ने अपनी सारी सम्पत्ति अर्पित कर दी देश की रक्षा के लिये। यद्यपि विपदा के वक्त हमारा समाज आज भी जन-साधारण के लिय खूब समर्पण करता है। बाढ, अकाल, आग लग जाने पर अब भी अर्थ का समाज की ओर से खूब समपण होता है। पर आप जानते हैं मानव का स्वभाव भूल जाने का है। जैसे ही विपदा खत्म हुई कि आपकी सेवायें व समपण धीरे धीरे भुला दिये जाते हैं। वस्तुत मेरा ध्यान आप सबका इस ओर दिलाने का है। रोजमर्रा के लिये जनता के दु ख-दर्द में हम भागीदार बनना चाहिये—इससे दोहरा लाभ होगा। एक तो जन-साधारण के सामने आपका सेवा कार्य सदैव याद रूप रहेगा। दूसरे आपके समाज की नई पीढी को आपके इन कार्यों के प्रति रुझान होगा—क्योंकि वे आज के युग मे इन कार्यों मे अधिक रुचि रखते

है। इस तरह के कार्यों के माध्यम से वे समाज से भी जुड़े रहेंगे।

एक ऐसा ही प्रयास जयपुर के निकट एक शहर मालपुरा में किया गया है। तीन वर्ष पूर्व एक ऐतिहासिक खण्डहर देरासर का जीर्णोद्धार कराकर प्रतिष्ठा महोत्सव अध्यात्म योगी आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वर जी के हाथों सम्पन्न हुआ। तब से ही इस देरासर के ट्रस्टियों की ऐसी भावना थी कि इस धार्मिक ट्रस्ट के माध्यम से कोई जनहितकारी कार्य भी प्रारम्भ किया जावे, जिससे मालपुरा की जनता की सेवा भी हो सके और समाज को उनका सद्भाव भी मिल सके। करीब 6 माह पूर्व ट्रस्ट के अन्तर्गत एक होम्योपैथिक चिकित्सालय प्रारम्भ किया गया। इस अल्प काल में ही करीब 5000 भाई बहिन इससे लाभान्वित हुए। मैगनेट व एक्युप्रेशर के द्वारा भी दर्द के रोगियों का उपचार प्रारम्भ कर दिया गया—टी० बी० के मरीजों के लिये अलग से कैम्प लगाए गए। इन सबका प्रभाव जन साधारण पर पड़ा और उन्होंने यह जाना कि जैन समाज केवल भगवान की भक्ति में ही अपनी शक्ति नहीं लगाता बल्कि भगवान महावीर के उपदेशों का सही अर्थों में पालन भी करता है, जन साधारण के प्रति मैत्री और करुणा के द्वारा।

मेरा मानना है, हमे इस प्रश्न को गम्भीरता से लेना चाहिये। यदि हमारा जैन समाज जनता से कट गया, अलग पड़ गया, तो हमारे लिये अच्छा नही रहेगा, हमारे समाज की शक्ति धार्मिक ट्रस्टों की शक्ति साधर्मी के उत्थान के साथ ही जन साधारण के कष्ट निवारण में लगनी चाहिए। इस तरह के कार्यों से हमारा सम्पर्क अन्य समाजों से व जन साधारण से निकटता का बनेगा और आये दिन सब ओर से जो प्रहार जैन धर्म पर होते हैं उनसे भी हम बच पायेंगे।

इस लेखन के माध्यम से मैंने दो निवेदन किये हैं। प्रथम तो हम सब धन के प्रदर्शन के मुकाबले यह ध्यान रखें कि हमारे जीवन में धार्मिक संस्कारों का प्रवेश हो। हमारा जीवनयापन ही औरों के लिये आदर्श रूप बने।

दूसरे हमारे ट्रस्टियों, अगेवानों की शक्ति धार्मिक महोत्सवों में लगानी ही चाहिये उनका दायित्व है, पर ट्रस्टों के माध्यम से थोड़ा जनहितकारी कार्य जरूर शुरू करे जिससे समाज के युवकों का रुझान धार्मिक संस्थाओं के प्रति होगा। साथ ही इस क्षेत्र के जैनेतर समाज का सद्भाव भी हमारे धार्मिक ट्रस्टों को मिलेगा।

- राग के अन्दर घर्षण से द्वेष का निर्माण होता है।
- काम को जीता जा सकता है, अभिमान को जीतना कठिन है।
- पश्चाताप की आग कर्म को जला देती है।

"मानव के लिए मानव"

दर्शन पाये जिस नर नारी ने,
कुछ सागर मोती बन गये।

कुछ हीरे पन्ने बनकर भी,
लोगो के गले मे बँध गये।

अवतार मिला ना मानव का,
मैं काम तो आया मानव को।

मैं धर्म हू रक्षा करते हैं,
मानव मेरी निशदिन जग मे।

कुछ ऐसे ही अनमोल तत्त्व,
बिखरे हैं धरती की गोद मे।

बूँद जल की, मैं बन जाऊँ
और प्यास बुझाऊँ प्यासे की।

वह सफल जन्म कहलायेगा,
जो काम किसी को आता है।

नाम लिया श्री महावीर का
वे ऐसे जन्मो को पाते हैं।

बना वृक्ष छाया देने को,
कडी धूप मे मानव को,

थके हुए राही को अपनी,
छाया की गोद दिलाता हू।

बस काम रहा मेरा जीवन भर,
दूर करू मैं दु ख तुम्हारा।

ऐसे ही जन्मे थे, धरती पर,
बने पेड भगवान महावीर,

पत्ते उसके श्रावक है।
हा, सच है कि कुछ धर्म द्वेषी

रहे काट इस डाली पत्ते को,
पर तना वृक्ष का फैला है,

धरती के नीचे समेटे जग को।
वह जैन धर्म है नाम वृक्ष का,

कटता है, दुगना बढता है।

सुरेश कुमार मेहता
जयपुर

भारतवर्ष का एक सुप्रसिद्ध तीर्थ श्री महावीर जी, तहसील हिण्डौन, जिला सवाईमाधोपुर, राजस्थान मे स्थित है।

भरतपुर राज्य के दीवान पल्लीवाल श्वेताम्बर जैन श्री जोधराजजी ने मान्यता मानी और उसके फलीभूत होने पर सम्वत् 1817 से श्री महावीरजी का मंदिर बनवाना शुरु किया एवं माघ वदी 6 गुरुवार, सम्वत् 1826 में उस प्रतिमाजी को मंदिरजी में श्री पूज्य श्री महानन्दसागरसूरिजी कोटा गद्दी से थे, ने प्रतिष्ठा करवाई। श्री महावीरजी तीर्थ मे विराजित प्रतिमाजी के नेत्र खुले हुए एवं प्रसन्न मुद्रा में है। कंदोरा एवं लंगोट के निशान महावीर स्वामी की पद्मासन प्रतिमाजी में पूर्णरूपेण स्पष्ट हैं। जिस स्थान से भगवान महावीर स्वामी की मूर्ति जमीन से निकली थी वहीं छत्री मे चरण पादुका विराजमान है जिसमें नाखून का हिस्सा ऊपर की ओर है।

प्रारम्भ से ही महावीर स्वामी का यह प्रसिद्ध जैन श्वेताम्बर धर्मावलम्बियों के अधिकार मे था और सेवा पूजा आदि श्वेताम्बर विधि विधान से ही होती थी लेकिन कालान्तर मे जयपुर रियासत मे दिगम्बर समाज के व्यक्तियो का वर्चस्व बढने से उन्होंने इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।

इस पर जयपुर निवासी श्वेताम्बर धर्माव-लम्बी श्री नारायणलालजी पल्लीवाल ने श्वेताम्बर समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष करना प्रारम्भ किया एवं उन्होंने तथा श्वेताम्बर समाज की पंजीकृत समिति (श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री महावीरजी तीर्थ रक्षा समिति) ने राजस्थान राज्य के देवस्थान विभाग से केस करने की स्वीकृति प्राप्त कर न्यायालय में इस तीर्थ के सम्बन्ध मे वाद प्रस्तुत किया। यह वाद न्यायालय जिला जज, जयपुर के यहां पिछले कई वर्षों से [illegible]

अब केस की स्थिति यहा तक पहुँच गई है कि श्वेताम्बर समाज लगभग 30 वर्ष के निरन्तर प्रयास के बाद सफलता की ओर अग्रसर हुआ है जिसका मूल श्रेय आचार्य भगवन्तो की सतत प्रेरणा और सक्रिय सहयोग से श्वेताम्बर समाज द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजात आदि ठोस एवं प्रमाणिक तथ्यादि हैं। दिगम्बर समाज द्वारा केस की सुन-वाई मे पग-पग पर बाधा खड़ी करने के उपरान्त श्री श्वेताम्बर समाज की ओर से न्यायालय में अब तक 14 गवाहों के बयान हो चुके है। इस केस मे श्रीमान वीरेन्द्रप्रसादजी अग्रवाल वरिष्ठ एडवोकेट राजस्थान हाईकोर्ट, श्रीमान् नागरमलजी मेहता वरिष्ठ एडवोकेट राजस्थान हाईकोर्ट, श्रीमान् गुमानचन्दजी लूणिया वरिष्ठ एडवोकेट, राजस्थान हाईकोर्ट, श्रीमान् [illegible] एडवोकेट, श्रीमान् [illegible] एडवोकेट, श्री [illegible] जैन एडवोकेट एवं अन्य [illegible] अपनी सेवायें अर्पित कर रहे है।

और भी गवाहों के बयान जारी है। [illegible]

तक हुए गवाहो के बयानो एव समिनि द्वारा पेश किए गए दस्तावेजात से केस मे श्वेताम्बर समाज की स्थिति अत्यन्त मजबूत है। इसी के परिणामस्वरूप विभिन्न मुद्दो पर दिगम्बर समाज की लोअर कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोट तक मे हर बार पराजय ही हुई है। यहा तक कि सुप्रीम कोट ने अपने फैसले मे अब इस केस को एक साल मे निपटा देने के आदेश दिये हुए हैं। श्रीमान् गुमानचन्दजी लूणिया वरिष्ठ एडवोकेट एव श्री अमृतलालजी भाण्डावत एडवोकेट का डिस्ट्रिक्ट जज न्यायालय मे केस को कुशलतापूर्वक सचालन मे महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है।

दिगम्बर समाज इस परिस्थिति से बहुत विचलित है और न्यायालय मे अपनी पक्ड मजबूत करने के लिए हर प्रकार की कोशिश कर रहा है।

इस न्यायालय केस मे प्रतिवादी के गवाहो के बयानो पर जिरह होगी जिसमें भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध और वरिष्ठ वकीलो की सेवायें लेना आवश्यक होगा, जिसके लिए बहुत अधिक धनराशि की आवश्यकता होगी और यह भारतवर्ष के समस्त श्वेताम्बर सघो के सक्रिय सहयोग से ही सभव है। अर्थाभाव से सत्यता भी अप्रकट रह सकती है।

ऐसी स्थिति मे यह पुरजोर प्रार्थना है कि श्वेताम्बर समाज का हर वर्ग अपनी शक्ति एव सामर्थ्य के अनुसार अधिकाधिक आर्थिक योगदान करे, जिससे इस सच्चाई पर आधारित केस को न्यायालय मे पूर्ण शक्ति सामर्थ्य एव साधनो से लडा जा सके और एक महान् चमत्कारिक तीर्थ जो श्वेताम्बर समाज के हाथ से निकला जा रहा है, वह अब वापस प्राप्त हो सके। विशेष तौर पर जयपुर श्वेताम्बर समाज का परम दायित्व है कि इस केस मे हर तरह की मदद देकर अनाधिकृत कब्जे को हटवाने मे भागीदार बने।

परम उपकारी वर्धमान तपोनिधि जैनाचार्य आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय भुवनभानुसूरीश्वरजी महाराज सा० एव अन्य आचार्य भगवन्तो का इसमें निरन्तर आशीर्वाद प्राप्त है एव उनकी असीम कृपा एव प्रेरणा से श्वेताम्बर श्रीसघों से इस महान् कार्य मे समय-समय पर सतत सहयोग प्राप्त होता रहा है। श्री आनन्द जी कल्याण जी की पेढी, अहमदाबाद ने भी इसके लिए काफी तत्परता बतलाई है।

श्री नारायणलालजी पल्लीवाल के आयुपयन्त किए गए परिश्रम और अथक प्रयत्नों को अब उनकी अनुपस्थिति मे सफलीभूत करना सम्पूर्ण श्वेताम्बर समाज का दायित्व है।

आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि इस महान् कार्य मे हमे आपका निरन्तर आशीर्वाद प्राप्त होगा एव आपकी असीम कृपा एव प्रेरणा से श्वेताम्बर धर्मावलम्बियो/श्रीसघो से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग प्राप्त होगा ताकि न्यायालय मे श्वेताम्बर समाज के अधिकार को सिद्ध कर महान् चमत्कारी तीर्थ पर से दिगम्बर समाज के भाइयो का अनाधिकृत कब्जा हटाया जा सके।

यह समिति रजिस्टर्ड है एव इसके हिसाब किताब का अकेक्षण चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट द्वारा किया जाता है तथा समिति आयकर विभाग मे भी पजीकृत है।

विनीत

राजेन्द्रकुमार चतर

उपाध्यक्ष

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री महावीरजी तीर्थ रक्षा समिति, जयपुर

"धर्म वही जो....."

□ श्रीमती स्मिता एस. मेहता

हिन्दू धर्म गीता ग्रंथ का सहारा लेकर कहता है कि हे अर्जुन जब-जब पृथ्वी पर धर्म का नाश होगा, मैं जन्म लूंगा। भगवान श्रीकृष्ण जन्म लेकर क्या करेंगे, यह हम सब जानते हैं। शिव-भक्त अपने भगवान शिव की शक्ति का परिचय देते हुए कहते हैं कि जब-जब पृथ्वी पाप का बोझ सहन नहीं कर पायेगी, तब भगवान् शिव अपना तीसरा नेत्र खोलकर पाप को जला देंगे। क्रिश्चियन धर्म को मानने वाले कहते हैं कि हम २१वीं सदी नहीं देख पायेंगे। इस्लाम धर्म भी इसी तरह अपनी कोई कहानी सुनाकर पाप से दूर रहने की सलाह देता है। इन सब बातों से यह जाहिर होता है कि हम पाप से दूर रहें। लेकिन मोक्ष के बारे में किसी भी धर्म ने प्रकाश नहीं डाला है, सिर्फ जैन धर्म ने ही मोक्ष का मार्ग बताते हुए उनका मतलब समझाया है। जैन धर्म ही एक ऐसा धर्म है, जो मानव जाति के कल्याण के साथ-साथ अन्य जीवों के कल्याण की बातों को समान रूप से मानता है। सभी धर्म अन्य जीवों के बारे में चुप हैं, जब कि जैन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो अन्य जीवों को इतना ही महत्त्व देता है, जितना सभी धर्म मानव जाति को देते है।

जैन धर्म एक सूरज के समान है, जिसकी हर किरण एक सिद्धान्त के रूप में होती है। जैसे सूरज की रोशनी के बिना संसार में अन्धेरा रहता है, ठीक इसी तरह जैन धर्म के बिना संसार जैसे जीवन मे अंधेरा रहता है। सूरज के बिना जीवन असम्भव हो जाता है, वैसे ही जैन धर्म के बिना जीवन अधूरा असम्भव-सा लगता है। धर्म कौनसा अच्छा होता है? धर्म से हमे क्या लाभ होता है? क्या धर्म परछांई की तरह हमारे साथ रह सकता है आदि खयाल हमारे मन में उठते हैं। कई धर्म के सिद्धांत इतने कठिन होते हैं, जिनका पालन करना कुछ समय के लिए असम्भव-सा लगता है लेकिन उसे अपनाने के बाद, जीवन मे जो खुश-हाली आती है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वह कौनसा धर्म है यह पूछे जाने पर जैन धर्म का ही नाम आता है। अन्य सभी धर्म के ठेकेदार अपने-अपने धर्म की प्रशंसा करते है। दूसरे धर्म के प्रति व्यंग्य, मजाक तथा कभी आलोचना भी करते है। लेकिन उस धर्म के महत्त्वपूर्ण सिद्धांतो की कभी प्रशंसा नहीं करते है। यह उनके संकीर्ण विचार है। किसी की तरक्की को देखकर जलने का स्वभाव जन्मजात होता है, ज्यादातर सभी लोग धर्म के ठेकेदार बनते है। लेकिन इन धर्म के ठेकेदारो को चाहिए कि वे इन बातों से दूर रहकर सभी धर्मों का आदर करें वरना मेरे जैसा एक सामान्य मानव और धर्म के ठेकेदारो मे कोई अन्तर नहीं रहेगा। जैन धर्म अपने धर्म का महत्त्व समझाते हुए अन्य धर्म का भी आदर

करता है जिसका प्रमाण नवकार मन्त्र से मिलता है। यह प्रमाण "णमो लोए सव्व साहूणम्" से मिलता है। जिसका मतलब होता है कि ससार के सभी साधु सतो को हमारा नमस्कार। दूसरे धर्म अन्य धर्म के प्रति इसी तरह आदर नही दिखाते हैं यह आप सभी लोग जानते हैं।

सभी धर्म पुनर्जन्म को मानते हैं, उसे रोकना अपनी शक्ति से बाहर की बात बताते हुए कहते हैं, कि जन्म-मरण विधि के हाथ होता है। जैन धर्म भी पुनर्जन्म को मानता है, लेकिन अन्य धर्मों से अपना अस्तित्व अलग रखते हुए कहता है कि मानव चाहे तो इन चौरासी लक्ष योनियों के फेरे से बच सकता है, और वह है मोक्ष को प्राप्त करना। मोक्ष का मार्ग सिर्फ जैन धर्म ही बताता है। अन्य धर्म मे लडाई, झगडा, हिंसा की भरमार मिलती है। शासन के लिए लडाई, महाभारत का ग्रंथ एक उदाहरण बन गया है। रामायण मे युद्ध के लिए रावण की नीतियों को जिम्मेदार मानते हैं। इस्लाम धर्म मे भी 786000 मानव की कहानी एक महत्त्वपूर्ण घटना बन गई है। (आज भी मुसलमान लोग 786 के अंक को शुभ मानते है।) इसी तरह हम देखते हैं कि सभी धर्म मे हिंसा का महत्त्व रहा है। हिंसा से ही धर्म की रक्षा होती है, यह उनका मानना कहाँ तक उचित है ? जो धर्म मोक्ष का मार्ग दिखा नही सकता है, वह धर्म त्रुटिपूर्ण है, अधूरा है।

आज हर मानव का यह कर्तव्य है कि अपनी तरह जीने वाले सभी जीवो की रक्षा करें, उन्हे दुःख न दें, उनकी हिंसा न करें, उनके जीवन की जिम्मेदारी अपने ऊपर लें। मानव बनकर हमने दुनिया जान ली है, ऐसा अनुभव करने से, हम उन कमजोर जीवो की रक्षा के लिए ही पैदा हुए हैं, यह मानना, मैं समझता हूँ कि जो हम पर निर्भर हैं, उन्हे अपनाया है। जानवर, पेड आदि सभी जीव मानव जीवन से जुडे हुए हैं। पेड की शीतल छाया मे मानव कभी कभी स्वर्ग सा अनुभव करते हैं। गाय, भैंस आदि जानवर हमे दूध देकर मानो हम पर मूक अहसान कर रहे हैं। उनकी उपयोगिता को आज हम भूले जा रहे हैं। क्या पता अगले जन्म मे हम इन जानवरो का जीवन पाकर, इन यातनाओ को सहन करें ? इसीलिए हमे चाहिए कि सभी जीवो की रक्षा करते हुए, जैन धर्म को अपनाते हुये, जीवन बितायें ताकि हमारी आत्मा को शक्ति मिले, जो मोक्ष को प्राप्त करने मे हमे सफलता दिलाये।

सभी धर्म अच्छे होते हैं लेकिन धर्म के असली सिद्धातो को धर्म के ठेकेदार विकृत रूप देकर लोगों के सामने रखते हैं। वे अपनी इच्छानुसार, अपनी सुविधा के लिए धर्म के सिद्धातो मे परिवर्तन लाते हैं, जिससे धर्म का प्रचार सरल हो जाये। ऐसे धर्म को अपनाने से समाज मे प्रतिष्ठा, मान, प्रशसा अवश्य मिलती है, लेकिन मोक्ष नही मिलता है। मोक्ष के लिये जैन धर्म ही आपकी सहायता कर सकता है। उनका एक-एक सिद्धात जीवन को एक नया रूप देता है, आत्मा को पवित्र बनाता है। हमे तो वह धर्म अपनाना है जो मानव जाति का कल्याण करे, सभी जीवो के जीवन की रक्षा करे, पुनर्जन्म से बचाये। अन्य धर्म इन बातो को महत्त्व नही देता है। हमे तो मोक्ष चाहिए। मानव जीवन मोक्ष के लिये ही मिलता है, जो जैन धर्म ही दिला सकता है। जैन धर्म ही सच्चा धर्म है, क्योंकि धर्म वही जो मोक्ष दिलाये।

• • •

सर्वोच्च गणधर इन्द्रभूति गौतम

☐ शिखरचन्द पालावत
अध्यक्ष, जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर

भारतीय समाज मे विघ्नोच्छेदक एवं कल्याण मंगलकारक के रूप में जो सर्वमान्य स्थान गणपति (गणेश) का है, उससे भी अधिक एवं विशिष्ट-तम स्थान जैन समाज तथा जैन साहित्य में गण-धर गौतम स्वामी का है। जैन परम्परा मे तो इन्हें विघ्नहारी मंगलकारी के अतिरिक्त सर्वगुण परिपूर्ण समस्त लब्धियो सिद्धियों, चिन्तामणिरत्न एवं कल्पवृक्ष के समान फलदाता और प्रातः स्मरणीय माना गया है। तीर्थंकर महावीर स्वामी के बाद सर्वोच्च स्थान उनके गणधर इन्द्रभूति गौतम स्वामी को प्राप्त है। वैसे यथार्थ रूप में गणधर गौतम का नाम इन्द्रभूति है, गौतम इनका गोत्र है किन्तु जैन समाज में इन्हें गौतम स्वामी के नाम से ही जानते है।

मगध देश के अन्तर्गत नालन्दा के अनतिदूर "गुब्वर" नाम का ग्राम था जो समृद्धि से पूर्ण था वहां विप्रवंशीय गौतम गोत्रीय वसुभूति नामक श्रेष्ठ विद्वान निवास करते थे। उनकी अर्द्धांगिनी का नाम पृथ्वी था। पृथ्वी माता की रत्नकुक्षि से ही ईस्वी पूर्व 607 मे इनका जन्म हुआ था। इनका जन्म नाम इन्द्रभूति रखा गया था। यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् इन्होंने चारों वेदो, न्याय, धर्म-शास्त्र, पुराण एवं ज्योतिष आदि चौदह विद्याओं का ज्ञान प्राप्त किया। चौदह विद्याओं के विद्वान् होने के पश्चात् पांच सौ छात्रों को अध्ययन करा कर अपने शिष्य बनाये जो सदैव इनके साथ ही रहते थे। इन्द्रभूति ने छात्र समुदाय के साथ इसकी भारत मे घूम-घूम कर तत्कालीन विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ किये और उन्हें पराजित कर अपनी दिग्विजय पताका फहराते रहे।

स्पष्ट है कि इनका विशाल शिष्य समुदाय था, जिसमें समस्त बड़े-बड़े पण्डित तथा शास्त्र धुरन्धर सम्मिलित हो जाते थे, वेद-विद्या और उच्च शास्त्रार्थ में समस्त उस समय इन्द्रभूति की कोटि का कोई दूसरा विद्वान् मगध देश में नहीं था।

इन्द्रभूति ने अपना पचास वर्ष का जीवन अध्ययन अध्यापन, वाद-विवाद और कर्मकाण्ड में रहते हुए बाल ब्रह्मचारी के रूप में ही व्यतीत किया था।

इन्द्रभूति गौतम सात हाथ लम्बे थे, इनके शरीर का रंगरूप कसौटी पर रेखांकित स्वर्ण रेखा के समान गौरवर्णी था, विशाल एवं उन्नत ललाट था और कमल पुष्प के समान मनो-हारी नयन थे यानी शरीर-कान्ति अति सुन्दर थी।

उस समय अपापा नगरी में वैभव सम्पन्न एवं राज्य मान सोमिल नामक द्विजराज रहते थे। उन्होंने अपनी समृद्धि के अनुसार अपनी नगरी मे ही विशाल यज्ञ करवाने का आयोजन किया था। यज्ञ के अनुष्ठान हेतु जगह-जगह से अनेक विद्वानों को आमन्त्रित किया था। उस समय अपापा नगर का सारा वन-उपवन एक साथ सहस्रों कण्ठों की उच्चरित वेदमंत्रों की सुमधुर ध्वनि से गगन मंडल को गुंजायमान करने वाला हो गया था। यज्ञ

पल्लीवाल समाज और जैन धर्म

□ कपूरचन्द जैन
रिटायर्ड तहसीलदार, हिण्डौन सिटी

भारतीय व्यवस्था मे जातियो का भी एक स्थान रहा है। जातियो का इतिहास उत्थान और पतन दोनो ही का रहा है। पल्लीवाल जैन जाति भी इस रोग से अछूती नहीं रही है। वैसे तो पल्लीवाल जैन जाति का कोई व्यवस्थित इतिहास, उद्गम व प्रसार का, सही रूप मे उपलब्ध नहीं है। फिर भी गत वर्षों मे माननीय मिट्ठनलालजी नन्दनलाल जी का योगदान इस सम्बन्ध मे सराहनीय रहा है जिन्होंने माननीय अगरचन्दजी नाहटा के सहयोग व माननीय दौलतचन्दजी अरविन्द के परिश्रम द्वारा इतिहास प्रकाशित कराया है. मेरी मान्यता है, और अब तक की गया की पुस्तकों एव अन्य साधनो से यह निश्चित है कि पल्लीवाल समाज का उद्गम पाली (मारवाड) से, भगवान महावीर के निर्वाण से सत्तर सौ वर्ष के पश्चात्, होना ज्ञात होता है, चूकि पाली शहर उस समय समृद्धि के शिखर पर था, इसलिये वहाँ के निवासियो का समृद्ध होना उचित ही था। पूज्य आचार्य भगवन्त रत्न प्रभ सूरी ने वीरात सत्तर में उपकेशपुर के निवासियो को जैन धर्म मे दीक्षित कर धर्मानुरागी बनाया था और पाली शहर भी उपकेशपुर (ओसिया) जो कि उस समय जोधपुर राज्यान्तर्गत था एव पाली भी इसी क्षेत्र मे होने के कारण सम्भवतया पूज्य आचार्य भगवन् की दीर्घ दृष्टि पाली के निवासियों पर पडी हो और उन्होंने या उनके शिष्यों द्वारा पाली के निवासियों का जैनधर्म (श्वेताम्बर) आम्नाय का अनुयायी बनाना सम्भव हुआ हो।

महाराजा कुमारपाल सोलंकी ने बारहवी शताब्दी के आस-पास पाली शहर पर आक्रमण किया था, तब वहाँ की जैन जनता पाली निवास से पलायन के पश्चात् पल्लीवाल नाम से उद्घोषित हुई। पाली के निवास के सम्बन्ध मे एक कवि की युक्ति निम्न है —

अब तुम चेतियो रे, ऐसी बिगडी दशा तुम्हारी,
पाली ग्राम से उदगम हमारा, राजस्थान दरम्यान,
सवा लक्ष गृह सख्या थी, थे सदगुण की खान,
दीन जैन जन जो कोई आये, करते थे सम्मान,
मिलकर सभी सहायक होते, कर लेते समान।
एक बार गिरनार तीर्थ पर, पेथडशाह की जान।
छप्पन घडी सोने की देकर, रखा जाति का मान।
जोधराज दीवान भरतपुर, (पल्लीवाल) किया
खूब ही काम।
मंदिर श्री महावीर (चादनगाव) बनाकर
रखा जाति का नाम।

पाली से पलायन के बाद आस-पास के क्षेत्र मारवाड व गुजरात आदि क्षेत्रो मे भ्रमण करता हुआ यह समाज पन्द्रहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे जयपुर राज्य, करौली, अलवर व आगरा प्रान्त में

व्यवस्थित हुआ प्रतीत होता है क्योंकि पन्द्रहवीं शताब्दी तक के शिलालेख व प्रतिमालेख गुजरात, मारवाड़ के उपलब्ध होते हैं। और उक्त स्थानों में सोलहवी सदी और उसके बाद के ही शिलालेख व प्रतिमालेख मिलते है। पाली से पलायन के समय वहाँ से अठ्ठारह जातियों ने पलायन किया था जिसमें छीपी पल्लीवाल, खाती पल्लीवाल, ब्राह्मण पल्लीवाल, आदि जाति प्रजातियां थी। इससे सिद्ध होता है कि पल्लीवाल एक स्वतन्त्र जाति थी छीपी, ब्राह्मण, खाती आदि अनेक प्रजातियां स्वतन्त्र रूप से थी।

पल्लीवाल समाज श्वेताम्बर आचार्यों द्वारा जैन धर्म में दीक्षित होने के कारण सदैव श्वेताम्बर आम्नाय की अनुगामनी रही और अधिक संख्या में आज भी हैं। जोधराज जी द्वारा निर्मित महावीर स्वामी चांदनगांव के मंदिर पर अतिक्रमण होने के पश्चात् आगरा, अलवर आदि स्थानो के भाई दिगम्बर आम्नाय की मान्यता में दीक्षित हो गये। यह सही है। परन्तु मूल मे सब श्वेताम्बर मूर्ति पूजक आम्नाय के अनुयायी थे चाहे वो कहीं के निवासी हों। आगरा के सम्बन्ध में सत्तर वर्ष पूर्व छपा हुआ प्रदेशी चरित्र इस बात का द्योतक है कि आगरा धुलियागंज व आस-पास के निवासी श्वेताम्बर पल्लीवाल थे और उनकी पल्लीवाल श्वेताम्बर व साधुगामी उन्नति सभा धुलियागंज आगरा मे थी और उसके अध्यक्ष श्री कुन्जीलाल जैन थे। इस प्रकार धुलियागंज का पल्लीवाल मंदिर भी श्वेताम्बर आम्नाय का था और पास में जो धर्मशाला है वह मुनि भगवन्तों के ठहरने का उपाश्रय था। अस्सी वर्ष पूर्व माननीय मास्टर कन्हैयालालजी साहिब द्वारा सम्पादित पल्लीवाल रीति प्रभाकर नाम की पुस्तक में भी यह स्पष्ट उल्लेख है कि पल्लीवाल समाज श्वेताम्बर आम्नाय के मानने वाले हैं और भाद्रपद में पर्युषण पर्व भादों वदी 13 से लेकर भादों सुदी पंचमी तक मनाती रही है और रोठ भादों सुदी 14 को किये जाते रहे थे तथा शादी के बाद 5 वर्ष तक पल्लीवाल लड़कियां पंचमी की आराधना करती रही है।

पल्लीवाल समाज ने प्राचीन व अर्वाचीन समय में जो प्रतियां लेख लिखाये है उनकी सूची संक्षिप्त मे इस प्रकार है :—

पेथडशाह ने सम्वत 1307 में कुन्थुनाथ भगवान की खडगासन श्वेताम्बर प्रतिमा की प्रतिष्ठा पालीताणा में कराई, जो प्रतिमा आज भी नये आदीश्वर भगवान के देरासर में मौजूद है।
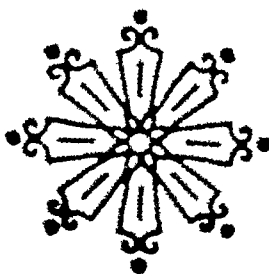
जो व्यक्ति संसार दुःखों को जानता है वह पाप से बचकर चलने का प्रयास करता है।

कर्मों की निर्जरा करने के लिए तप महान् प्रभावशाली साधन है।

माया महा ठगिनी हम जानी

☐ गणि नित्यानन्द विजय

मगल प्रभात मे मत कबीरदास का भजन कोई भक्त तन्मय होकर गा रहा था —

'माया महा ठगिनी हम जानी,
निर्गुण फास लिये कर डोले, बोले मधुरी बानी।'

मैं अन्तर्चिन्तन मे खो गया। माया की निगुण फास अर्थात् गुण-हीन, सारहीन फास सासारिक जीवों को वेध रही है। उसकी मोहिनी माधुरी में ससार नाच रहा है। मदारिन जीव रूपी कपि-भालू को अपने इशारे से विविध खेल करा रही ह। भोगों की खुमारी म बेसुध है तन बेसुध है मन। स्वर्ण मृग के पीछे भाग रहे हैं लोभी स्वार्थी मनुष्य। क्या उद्देश्य है इस भाग-दौड का ?

सग्रह की दुष्प्रवृत्ति

मनुष्य सग्रह करता है—सुख-भोगो के लिए। विनास की सामग्री एकत्रित करने के लिए वह शोषण, उत्पीडन, पर-पीडन का सहारा लेता है। इससे कितने प्राणियों को त्रास होता है, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। वह यह क्यो भूल जाता है कि जो सुख उसे प्रिय है, वह अन्य प्राणियों को भी है। मायावश उसकी विवेक की आँखें मुद जाती हैं और वह येन-केन-प्रकारेण धन सग्रह में अपने जीवन को समर्पित कर देता है। इसका परिणाम है—दुःख।

मृत्यु अवश्यभावी है

जो जन्मता है, वह मरता है। यह शाश्वत सत्य है, राज-राजेश्वरों को विशाल साम्राज्य, विपुल वैभव, अपरिमित स्वर्ण-रत्नराशि, सब कुछ यहीं पर ही छोडकर जाना पडा। फिर उन्होंने विशाल राज्यो की स्थापना करने के लिए लाखों लोगों को मौत के घाट क्यो उतारा ? विपुल धन सग्रह करने के लिए मनुष्यों ने बेईमानी क्यों की और कर रहे ह ? केवल शरीर—सुख के लिए ही। जो शरीर नष्ट होने वाला है, जो पानी के बुलबुले के समान क्षणिक है, जो सूखे पीपल-पात के समान पवन के एक हलके झोंके से नीचे गिर जाने वाला है, उसके लिए इतनी हाय-हाय क्यो ? इसका उत्तर है—मोह माया ग्रसित जीव का अज्ञान। यह अज्ञान शाश्वत सुख के मगल प्रभात को देखने नहीं देता, मोहावरण परमार्थ के वासन्ती फूलो को ढक लेता है, और स्वार्थ के दलदल में जीव हीरे मोतियो को लेते लेते मौत के मुँह में चला जाता है।

भोगो की चकाचौंध

नवभारत टाइम्स जयपुर 26 अगस्त 1988 पृष्ठ 2 पर एक समाचार को पढा—'सबसे अमीर आदमी'—न्यूयार्क, 25 अगस्त (डीपीए) ब्रुनेई के सुल्तान हसन अल बोलकिया विश्व के सबसे धनी व्यक्तियो की सूची में अभी भी सर्वोच्च स्थान बनाये हुए हैं। एक अग्रेजी पत्रिका 'फॉरचून' ने अपनी वार्षिक रिपोट में बताया है कि सुलतान हसन की

कुल सम्पत्ति करीब पच्चीस अरब डालर की है और वह विश्व के 129 व्यक्तियों में पहले स्थान पर हैं। सुल्तान हसन 1788 कमरों के वातानुकूलित महल में अपनी दो पत्नियों, तीन पुत्रों और छह पुत्रियों के साथ रहते हैं।

मानव की भोग-तृष्णा ने अपने लिए कितना संचय किया है, और असंख्य लोग भूखे-प्यासे, गृह-विहीन त्रास में जीवन-यापन करते हैं। इन भोगों की इतिश्री क्षणभर में हो जाती है। अतः ज्ञानी-महर्षियों ने संतोष को अपनाने का सन्देश दिया है।

संतोष पारसमणि :

इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त है। उन पर रोक लगाने के लिए संतोष को अपनाना होगा। संतोष इहलोक और परलोक-दोनों का मंगल-विधाता है। लोभ पर-पीड़न के कारण स्वयं के लिए दुःख सर्जित करता है, संतोष परमार्थ-मार्ग पर अग्रसर करने के लिए स्व-पर कल्याण के मंगल-पट खोल देता है। इसलिए संतोष पारसमणि के समान अक्षय सुख का खजाना है। संतोषी मनुष्य की पहिचान है—जीने दो और जीओ। संतोष की सीप में प्रेम का मोती पलता है। प्रेम से परमात्मा के दर्शन हो जाते है। जीवन को कलामय बनाने के लिए उसे पुष्प के समान सुगन्धमय बनाइये। यह सुगन्ध है—मानवता की। मानवता दरिद्रनारायण की सेवा में निहित है। परमात्मा दीनानाथ है। दरिद्रनारायण की सेवा दीनानाथ की सेवा-पूजा है। अतः पीड़ित, दुःखी प्राणियों के दुःख दूर करने के लिए जीवन समर्पित कर दो।

निष्कर्ष-संतोष-पारसमणि का शुभ्र प्रकाश है—सेवा।

□

मंदिर में आचरण योग्य कुछ बातें

(१) मंदिर में किसी से कोई बात मत कीजिए।

(२) मंदिर में चैत्यवंदन की सम्पूर्ण विधि इतने धीरे कीजिए कि किसी अन्य के ध्यान में खलल न पड़े।

(३) मंदिर में घंटा बिल्कुल धीरे से बजाइए ताकि किसी के ध्यान में खलल न पड़े। घंटे पर जोर अजमाइश मत कीजिए।

(४) भगवान की मूर्ति के सामने मत खड़े होइए, या सामने बैठकर पूजा मत कीजिए, ताकि अन्य व्यक्ति भगवान के दर्शन कर सकें।

(५) भगवान को पूर्ण पुष्प चढ़ाइए। एक-एक पंखुड़ी चढ़ाना पाप है।

(६) सुबह-शाम की आरती के अतिरिक्त आरती करें, तो बिल्कुल धीरे बोलिए।

प्रार्थी :

राजमल सिंघी

क्या परिग्रह नरक का द्वार है ?

□ मनोहरमल लूणावत

गृहस्थ वर्ग के लिए जैन धर्म में पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत, इस प्रकार बारह व्रत होते हैं जिनका पालन करना प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिए आवश्यक माना गया है। पाँच अणुव्रतों में परिग्रह परिमाण व्रत अन्तिम है, लेकिन पहले चार व्रतों को संरक्षण करना एवं बढ़ाना इसके आधीन है। अतः आज हम इस बारे में कुछ विवेचन करना चाहते हैं।

परिग्रह को घटाने से हिंसा, असत्य, अस्तेय, कुशील इन चारों पर कंट्रोल किया जा सकता है। अतः प्रत्येक जैन को परिग्रह की ऐसी मर्यादा करनी चाहिए जिससे उसकी तृष्णा पर अंकुश लगे और लोभ में न्यूनता हो और दूसरे लोगों को कष्ट न पहुंचे। सच पूछिये तो परिग्रह पाप बन्ध का मुख्य कारण है क्योंकि इसी की वजह से लोग हिंसा करते हैं, असत्य भाषण करते हैं, बड़ी बड़ी चोरियाँ व डकैतियाँ करते हैं मिलावट, जालसाजी, अपहरण, बलात्कार आदि पाप करते हैं।

संसार में आज चारों ओर भय, घृणा, राग, द्वेष, कलह और अशांति जो मची हुई है उसके मूल में परिग्रह का ही मुख्य हाथ है। जो लोग यह सोचते हैं कि परिग्रह को बढ़ा कर वह सुख से जीवन जी सकते हैं लेकिन उनका यह सोचना कोरी कल्पना ही है। परिग्रही का होश ठिकाने नहीं रहता, उसकी इन्द्रियाँ ठीक से काम नहीं करती और उसको चैन की नींद भी नहीं आती। दूसरे शब्दों में कहें तो परिग्रही ही अन्धा, बहरा और गूंगा हो जाता है लेकिन वह अपने मतलब की बात सब समझता है।

प्राचीन समय में लोगों में परिग्रह की मात्रा कम होती थी इसीलिए वे अपना जीवन सुख व शांति से व्यतीत करते थे लेकिन आज तो बात ही इसके विपरीत है। लोगों में परिग्रह की मात्रा इतनी बढ़ गई है कि आज इन्सान इसके लिए हैवान बन गया है। वह धन प्राप्ति के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार है। इस प्रकार मानव के लिए परिग्रह अभिशाप है और जन्म-जन्मांतर के लिए दुःख का कारण है। परिग्रह की वृद्धि करके वह कभी सुखी नहीं बन सकता। सच्चा सुख तो उसे जब ही मिलेगा जब वह परिग्रह की मात्रा कम से कम कर लेगा।

ठाणांग सूत्र में नरक के चार कारणों में एक कारण परिग्रह को भी बताया गया। अतः यदि

हमें नरक में नहीं जाना है और मुक्ति प्राप्त करनी है तो अपरिग्रही बनना चाहिये। इनसे यह सिद्ध हुआ कि परिग्रह नरक और अपरिग्रह मुक्ति का द्वार है।

अपरिग्रह से मतलब यह है कि हमें अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह नहीं करना चाहिये तथा जहाँ तक हो सके अपनी आवश्यकताओं को भी कम से कम करना चाहिये और जो साधन-सामग्री हमारे पास है उसको अधिक से अधिक सात क्षेत्रों में लगाना चाहिए। यद्यपि गृहस्थ के लिए पूर्ण अपरिग्रह होना सम्भव नहीं है इसीलिए उसके लिए अपरिग्रह के बजाय 'परिग्रह परिमाण' को अणुव्रत के रूप से मान्य किया गया है ताकि वह आवश्यक वस्तुओं की मर्यादा निश्चित कर शेष समस्त वस्तुओं के ग्रहण एवं संग्रह का त्याग कर देता है अर्थात् उन पर उसकी कोई आसक्ति नहीं रहती। इसी कारण जैन संघ के हजारों व्यक्ति स्थूल परिग्रह का परिमाण करते हैं जैसे सोना, चाँदी, रुपया, घर, दुकान, बंगला, नौकर-चाकर आदि तथा इसके बढ़ जाने पर सात क्षेत्र (जिन मूर्ति, जिन मन्दिर, जिन आगम, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका) में व्यय कर देते हैं।

अतः यदि हमें सच्चे सुख की प्राप्ति करनी है तो हमें परिग्रह का त्याग अवश्यमेव करना होगा क्योंकि परिग्रह के भोग से परलोक में नरक का दुःख मिलता है और परिग्रह के त्याग से परलोक में स्वर्ग का सुख मिलता है।

□ □ □

श्रद्धांजलि

परम श्रद्धेय चाचा साहब श्री राजरूपजी टांक 27 अक्टूबर, 87 ज्ञान पंचमी के दिन परम ज्योति में विलीन हो गए। उनके महान् व्यक्तित्व का ज्योतिपुंज आज भी हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहा है। सामाजिक, धार्मिक एवं नारी जागरण के लिए टांक साहब की सेवायें सदैव याद की जाती रहेगी।

नारी शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान जैसे पिछड़े प्रदेश में वर्षों पूर्व प्रारम्भ किये यज्ञ को गति मिले एवं उनकी आत्मा को चिरशान्ति प्राप्त हो, शासनदेव से प्रार्थना है।

क्षणभंगुर जीवन

क्षणभगुर है मानव जीवन-क्षणभगुर है रूप।
एक मार्ग से ही जावेंगे भिक्षुक हो या भूप ॥
शैशव, यौवन, वृद्धावस्था सबको लक्ष्य बनाती।
धन वैभव की मृग-मरीचिका सबको है तरसाती ॥
अंत समय में कोई अपने साथ न कुछ ले जाता।
रूप-रग, धन वैभव तो क्या साथ न तन भी जाता ॥
सुदर सुमन पल्लवो के झूले मे मोद मनाता।
भीनी भीनी गध और निज रूप देख इतराता ॥
पवन झकोरे आकर उसकी सुरभि सुगन्ध लुटाते।
मत्त मधुप मधुपान कर रहे गुन गुन हैं कुछ गाते ॥
मुरझाता जब पुष्प सभी पखुरिया झर जाती हैं।
रूप-रग सुरभित सुगध मिट्टी मे मिल जाती है ॥
नील गगन के वातायन से उषा-सुन्दरी आती।
कर मे ले मोती की माला अपनी माग-सजाती ॥
रजनी बाला किंतु न उसकी शोभा रहने देती।
स्वर्णिम नभ मे पीत कालिमा सारी छवि हर लेती ॥
आता जब मधुमास वृक्ष तब नव जीवन पाते हैं।
हरित हरित पल्लव से लद कर मन मे मुस्काते हैं ॥
शीतल मन्द-सुगन्ध पवन है बहती वन-उपवन मे।
हर्षित डालें पुष्प लुटाती अपने ही आगन मे ॥
सूर्य ताप से जलकर पत्ते पीले पड जाते हैं।
पतझड की ऋतु आते ही वे सारे झड जाते हैं ॥
धन-वैभव, सौदर्य, शक्ति का मानव ! गर्व न करना।
जन्म लिया है जिसने जग मे उसे एक दिन मरना ॥

—शान्तिदेवी लोढा
C/o फतहचदजी लोढा
3986, कटिहारो का कुआ, कुदीगर भैरोजी का रास्ता
जयपुर-302003

महान् चमत्कारिक प्रतिमा छोटे महावीरजी सिरस ग्राम

☐ रोशनलाल जैन, वैर

छोटे महावीरजी तीर्थ तहसील वैर जिला भरतपुर में एक प्रमुख प्राचीन तीर्थ है। आज से करीव 250 साल पूर्व भरतपुर स्टेट के दीवान जोधराजजी पल्लीवाल श्वेताम्बर आमना के थे। वे ग्राम तरसाना तहसील लक्ष्मणगढ़, जिला अलवर, जाति पल्लीवाल के थे। उन्होने कई मन्दिरों के निर्माण के साथ जिन मुख्य दो मन्दिरों का भी निर्माण करवाया एवं जिसमें भरतपुर राजा ने भी द्रव्य लगाया वे थे प्रथम चादनगाव तहसील हिण्डौन जिला सवाई माधोपुर राजस्थान मे प्रसिद्ध तीर्थ महावीरजी का निर्माण माघ बुदी 6 गुरुवार संवत् 1826 में पूर्ण कराया। दूसरा सिरस जैन मन्दिर का निर्माण भी करीव-करीव उसी साल कराया गया था। चांदन गांव के निवासी वैश्य पल्लीवाल जाति के चादपुरिया गोत्र वालो को सेवापूजा का अधिकार दिया था। पहिले जो भरतपुर राज्य से सहायता मन्दिर को मिलती थी आज तक बदस्तूर राजस्थान सरकार से मिलती चली आ रही है।

सिरस मन्दिर को इसीलिए आज तक छोटे महावीरजी के नाम से भी बोलते है। यह प्रतिमा बड़ी चमत्कारिक है। जैनो के अलावा गूजर, जाट, बांगरी, धाकर, ब्राह्मण, बनिया आदि पूर्ण श्रद्धा से बड़े महावीरजी की तरह ही पूर्ण आस्था रखते है। हर जाति के लोग इस स्थान को तरह-तरह की आधि व्याधि के निराकरण का माध्यम मानते है। जो कोई भी दुखिया अपने दुःख लेकर जाता है तो अवश्य ही उसकी मुराद पूरी होती है।

चांदनगांव के श्री महावीर का मेला होते ही उस स्थान पर वैशाख बुदी 5 को सिरस में मेला एवं रथ यात्रा निकलती है। हजारों तीर्थयात्री बाहर से आते है, जिनमें श्वेताम्बर जैन एवं [illegible] होते है।

इस स्थान के मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की पद्मासन मूर्ति 21 इन्च की है एवं बड़ी मनोहारी, अलौकिक एवं बोलती हुई प्रतिमा है, आज से 18 साल पहिले यह मूर्ति चोर उठा कर ले गये थे जिनमें एक का पैर टूट गया एवं एक चोर अन्धा हो गया। तीन पकड़े गये। अतः इसकी महिमा और ज्यादा हो गई। इनके बाद दिनांक 25–12–86 को दूसरी बार चोर मूर्ति को उठा ले गये किन्तु शासन देव के चमत्कारिक प्रताप से पुनः दिनांक 12–9–87 को यह प्रतिमा वापिस मिल गई। यहां के शासन देव भी बड़े जागरूक है। चांदनगांव के महावीरजी एवं यहां के महावीरजी दोनों एक ही पाषाण के से प्रतीत होते है।

यह सम्पूर्ण क्षेत्र श्वेताम्बर ही रहा है एवं आज भी है। आज इस क्षेत्र में दिगम्बरों की [illegible] की

सख्या है। इस सम्पूर्ण जगराटी क्षेत्र मे 31 मन्दिर नवनिर्मित या जीर्णोद्धार किये हुए स्थापित हैं। यह क्षेत्र सम्पूर्ण श्वेताम्बर क्षेत्र ही था। इसका सबसे बडा प्रमाण यह है कि इस क्षेत्र मे विगत कई साल से भूगभ से श्वेताम्बर मूर्तिया विभिन्न जगहो पर निकली हैं। अभी हाल ही मे दिनाक 14-8-88 को दिन के 12 बजे मडावर ग्राम मे 4 प्रतिमायें एव एक पद्मा देवी की श्वेताम्बर प्रतिमायें निकली है जो एक मीणे के जानवर बाधने के मकान के डोला की नीव खोदते समय निकली है। इससे पहिले भी इसी स्थान के पास ही मीणे के घर से भगवान आदिनाथ की पूण अखण्डित प्रतिमा निकली थी जो आज भी उमी मीणे के घर के एक कमरे मे विराजमान है एव उक्त मीणा ही सेवा पूजा जैन विधि से कर रहा है। पुरातत्व विभाग की कायवाही हो रही है। शीघ्र ही ये प्रतिमायें श्वेताम्बर समाज को मिल जावेगी।

दूसरा प्रमाण जोधराज जी पल्लीवाल दीवान ने आचारग सूत्र की टीका करवाई थी वह दिल्ली दिगम्बर धर्मशास्त्र भण्डार मे आज भी हस्तलिखित रखी हुई है।

श्री जैन श्वेताम्बर साम्प्रदाय के आचाय महाराज, मुनि मण्डल, साध्वी मण्डल, श्रावक, श्राविकायें काफी सख्या मे सिरस की प्रतिमाजी के दशन करने आते हैं।

इस तीथ क्षेत्र के लिए श्री श्वेताम्बर जैन तीथ ट्रस्ट, सिरस तहसील वैर जिला भरतपुर रजिस्टड है। जिसने इस तीर्थ क्षेत्र के विस्तार की योजना हाथ मे ली है। इस कार्य के लिए 5001/- सरक्षक सदस्य, रुपये 1001/- आजीवन सदस्य एव रुपये 101/- तीन वर्ष के लिये साधारण सदस्य बन सकते हैं।

श्रद्धाजलि

श्री निहालचन्दजी नाहटा, अध्यक्ष श्री ऋषभदेव भगवान मदिर ट्रस्ट जयपुर की मातुश्री सेठानी गगाबाईजी नाहटा के देहावसान से जैन जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। वे उदारमना परिवार की उदारमना व्यक्तित्व थी। उनकी अन्तिम इच्छा नया मदिर का जीर्णोद्धार, एव उपाश्रय निर्माण शीघ्र पूरा कराने की थी। शासनदेव से इस काम को शीघ्र पूरा करने की शक्ति देने की प्रार्थना है। उनकी आत्मा को शाति प्राप्त हो।

विनय मूलो धम्मो

☐ आचार्य जनकचन्द्र सूरिजी
दहाणू

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में विनय का महत्त्व विशद् रूप से वर्णित हुआ है। यद्यपि संसार के प्रत्येक सभ्य देश में विनय का महत्त्व भिन्न-भिन्न रूप में व्यवहृत होता है; पर भारत में उसका विशेष स्थान है। जैन शास्त्रों ने तो 'विनय मूलोधम्मो' कहा है। विनय सर्व गुणों का राजा है।

जैन कवि श्री उदयरत्न जी ने विनय को संसार का सबसे बड़ा गुण कहा और सर्व गुणों में प्रधान गुण के रूप में वर्णन किया है—

"विनय वड़ो संसार में, गुणो मां अधिकारी रे"

इसी प्रकार अन्य विद्वानों ने भी 'विनयेन विद्या और विनयात् याति पात्रताम्' कहकर इसकी महिमा और उपादेयता को स्वीकार किया है।

नीतिशास्त्र के अनुसार विनय की व्याख्या यह है 'धन, विद्या और अवस्था में जो बड़ा हो उसके प्रति नम्रता का व्यवहार करना विनय है।

चिंतक कन्फ्यूशियस के शब्दों में—"अगर कोई अभेद्य कवच है तो वह विनय या नम्रता है।"

सद्गुणों के सामने झुकना नम्रता और विनय है। स्वार्थवश झुकना दीनता है। आचरणीय नम्रता है दीनता नहीं।

शेक्सपियर ने कहा है—"नम्रता गुण है वहीं चापलूसी अवगुण। निंदक पीछे से वार करता है और चापलूस सामने से।"

गीता में कृष्ण ने अर्जुन से कहा है—"तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया...." ज्ञान वही प्राप्त कर सकता है जो श्रद्धापूर्वक गुरु को नमस्कार करके विनय व्यवहार करता है।

धर्मात्मा भगवान् बुद्ध ने भी कहा है कि जैसे मनुष्य के लिए चन्दन, शीतलता के लिए चन्द्रमा और मधुरता के लिए अमृत संसार में प्रिय है वैसे ही विनयगुण से युक्त मनुष्य संसार में सबका प्रिय बन जाता है।

भगवान् महावीर का कथन है कि जीव मृदु और कोमल भावना से अनुद्धता और नम्रता को प्राप्त करता है। वह आठ प्रकार के मदों का भी नाश करता है।

जैन शास्त्रों में आठ प्रकार के मदों का वर्णन है, जाति, कुल, ऐश्वर्य, बल, रूप, तप, विद्या और मान। इन आठ में से एक का भी अभिमान मनुष्य करता है तो अगले जन्म में वह वस्तु उसे प्राप्त नहीं होती। अभिमान से व्यक्ति विवेकशून्य बन जाता है और विनय गुण नष्ट हो जाता है।

दोनों हाथ जोड़कर, मस्तक झुकाकर नमस्कार करना यह भारत की प्राचीन एवं सनातन विनय की परंपरा है और यही भारतीय संस्कृति का सार है।

इस समय पश्चिमी सस्कृति से प्रभावित कुछ पढे लिखे लोग इस विनय पद्धति का मूल्य कम आकते हैं, पर विदेशी विचारको ने इसी पद्धति को सर्वोत्तम बताया है।

कुछ वर्ष पहले रूस के राष्ट्र प्रमुख भारत आए थे। उन्होने भारत की एक प्रणाली की बहुत ही प्रशसा की और वह प्रणाली थी दोनो हाथ जोडकर मस्तक झुकाकर परस्पर नमस्कार करना।

पश्चिमी देशो मे दो हाथ मिलाकर शिष्टाचार प्रदर्शित करने की प्रथा है, पर उसमे अनेक सक्रामक रोग उत्पन्न लगने की सभावना रहती है। किसी देश मे हथेली चूमने की प्रथा है तो किसी देश मे मस्तक चूमने की प्रथा है। ये सभी प्रथाएँ दोषयुक्त एव अनेक रोगो को उत्पन्न करने वाली हैं। उसके स्थान पर भारत की नमस्कार पद्धति सर्वोत्तम, दोष रहित और उत्कृष्ट है।

ऐसी सर्वोत्तम प्रणाली छोडकर भारतीय पश्चिम का अधानुकरण करते हैं यह कितनी लज्जा की बात है।

पडित जवाहरलाल नेहरू विदेश मे थे। उनकी लोकप्रियता विदेशो मे भी कम नहीं थी। वहा नेहरू के प्रशसको ने उनसे हाथ मिलाकर स्वागत करने की माग की। नेहरू का कार्यक्रम व्यस्त था और विशाल जन मेदिनी के एक एक व्यक्ति से हाथ मिलाने पर बहुत सा समय नष्ट हो सकता था। अत अपने प्रशसको के सामने खडे होकर उन्होंने कहा—"आप लोगो की मेरे देश और मेरे प्रति जो सद्भावना है उसके लिए मैं कृतज्ञ हू। मैं अपने देश एव सस्कृति की प्रथा के अनुसार दोनो हाथ जोडकर मस्तक झुकाकर आपका स्वागत एव अभिनदन स्वीकार करता हू।" उनके प्रशसको के हाथ भी स्वत जुड गए। जो काम पाच घण्टे मे भी नहीं हो सकता था वह दो मिनट म हो गया। यह है भारतीय सस्कृति के नमस्कार पद्धति का चमत्कार।

अक्सर देखने मे आता है कि विद्या सीखने के बाद अधिकाश व्यक्ति अभिमानी बन जाते हैं, पर कभी कभी "विद्या ददाति विनय" की उक्ति को सार्थक करने वाले भी ससार मे मिल ही जाते हैं।

नीतिकारो ने विद्याप्राप्ति के तीन साधन बताए हैं।

> विनयेन विद्या पुष्करेण धनेन च ।
> विद्ययाविद्या चतुर्थं नैव कारणम् ॥

विद्या विनय से आती है या फिर पुष्कर धन व्यय करने पर या विद्या के आदान प्रदान से ये तीन ही विद्या प्राप्ति के साधन और उपाय हैं। अन्यथा चौथा कोई उपाय नही है।

एकलव्य ने गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति को साक्षात् गुरु मानकर विनयपूर्वक प्रार्थना करके विद्या सीखी। ये सब विनयेन विद्या के उदाहरण हैं।

ठाणाग सूत्र में सात प्रकार के विनयो का वर्णन आता है—(1) ज्ञान विनय, (2) दर्शन विनय, (8) चारित्र विनय, (4) मन विनय, (5) वचन विनय, (6) काय विनय, (7) लोकोपचार विनय।

विशेषावश्यक भाष्य मे विनय के पाँच प्रकार बताए हैं—

(1) लोकोपचार विनय लोक व्यवहार चलाने के लिए अतिथि आदि का विनय-सत्कार करना।

(2) भय विनय भूल या अपराध के लिए शिक्षक या राज्याधिकारी से विनय करना।

(3) काम विनय : काम वासना की पूर्ति के लिए स्त्री से विनय करना।

(4) मोक्ष विनय : मोक्ष या मुक्ति के लिए गुरु आदि का विनय करना।

(5) अर्थ विनय : धन प्राप्ति के लिए विनय करना।

आवश्यक निर्युक्ति मे विनय के विषय में कहा है :

विणओ जिस सासणेमूल,
विणओ संजओ भवे ।
विणयाओ विप्पमुकस्स,
कओ धम्मो कओ तवो ॥

जिनेश्वर परमात्मा के शासन मे विनय धर्म का मूल है। विनयगुण से सम्पन्न व्यक्ति संयमी बन सकता है। जो विनय से रहित है वह न तो धर्म कर सकता है न तप कर सकता है।

इस प्रकार जीवन मे विनय का महत्त्व निर्विवाद रूप से सिद्ध है। लौकिक और पारलौकिक दोनों को विनय सुख प्रदान करता है। विनय के महत्त्व को समझा जाए, उसका अधिक से अधिक चिंतन और मनन किया जाए। उसके बिना जीवन खोखला है। जीवन उसी का सार्थक होगा जो विनयगुण से परिप्लावित होगा। इसी मे जीवन की सफलता एवं सार्थकता है।

श्रद्धांजलि

● सेठ महताबचंद जी गोलेछा के निधन से जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। वे संवेदनशील, उदारमना व्यक्ति थे। वे लगातार 30 वर्षों तक खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष पद पर रहे। दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो, यही शासनदेव से कामना है।

● श्री आत्माचंद जी भण्डारी के निधन से जैन समाज के कार्यकर्ता की क्षति हुई है। वे महावीर इन्टरनेशनल के संस्थापक सदस्य रहे थे। [illegible] महासमिति के भी वे सदस्य रहे तथा धार्मिक भावना वाले व्यक्ति थे। उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो, यही शासनदेव से प्रार्थना है।

अपने आप मे देखो !

□ चिमनलाल जे मेहता

भिन्न-भिन्न दिमाग वाले विविध प्रकृति वाले मानवो से यह दुनिया भरपूर है। इसमे सज्जन भी होते हैं और दुर्जन भी होते हैं। गुणी और अवगुणी भी होते हैं। दुनिया मे हर प्रकार के मानव मिल सकते हैं। जिस तरह वस्तु के तरह-तरह के प्रकार होते हैं उसी तरह अवगुणी भी दो प्रकार के होते हैं। एक अवगुणी मानव ऐसा होता है जो गुणी बनने के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है फिर भी गुणी न बनने के कारण रात और दिन पश्चात्ताप करता रहता है। मेरे मे सुन्दर गुणो का खजाना कब आयेगा, इस की सतत चिन्ता करता है। इतना ही नहीं गुणीजन को देखकर उसका मन मयूर नाच उठता है, मस्तक झुक जाता है, आँखो से अश्रुधार बहने लगती है, अपने अवगुण शल्य की तरह चुभते हैं। ऐसे मानवी अवगुणी होते हुए भी गुण के पक्षपाती होने से एक तरह से प्रशसा के पात्र हैं।

जब किसी से विपरीत स्वभाव वाले दुर्गुणियो को अपने दुर्गुणों के प्रति लेशमात्र पश्चात्ताप नहीं होता है, उसके हृदय मे गुणियो के लिए लेशमात्र मान नही होता है, दुनिया के सब अवगुणो का इजारा लेकर, अन्य गुणीजनो मे रहे हुए छोटे-छोटे अवगुणो को आगे करके और गुणो को भी अवगुण का रूप देकर, झरोखे पर बैठकर या अखबार मे देकर निदा और झूठी टीका टिप्पणी करने की निरर्थक चेष्टा करते हैं, उसको गुजरात के प्रसिद्ध कवि दलपत राय अपने अट्ठारह टेढे अग को नही देखते हुए, अन्य के एक टेढे अग की टीका करने वाले ऊँट के उदाहरण से सचोट प्रेरणा नीचे के दोहे में देते हैं —

ऊँट कहे आ समामाँ बाँका अग वाला मुडा,
भूतलमाँ पशुओ ने पक्षीओ अपार छे।
बगला नी डोक बाँकी, पोपट नी चोच बाकी,
कूतरा नी पूछडी नो बाँको विस्तार छे।
भैंस ने तो शिरे बाका, शिगडा नो भार छे,
साभली शियाल बोल्यू दाखे दलपत राय,
अन्य नु तो एक बाकु, आपना अढार है।

एक बार जगल मे पशु-पक्षियो का सम्मेलन हुआ। इसमे ऊँट ने अपनी बुलद आवाज से कहा कि इस सभा मे टेढे अग वाले पशु-पक्षी बहुत हैं। देखो बगुले की गदन टेढी है, तोते की चोच टेढी है, कुत्ते की पूछ का विस्तार टेढा है, हाथी की सूड टेढी है और भैंस के शिर पर सींग टेढे हैं। ऊँट के इस भाषण मे अन्य पशु-पक्षियो की टीका सुनकर सियाल से चुप न रहा गया और उसने साफ शब्दो मे कह दिया कि सब के तो एक एक अग टेढा है, लेकिन आपके तो अठारह अग टेढे हैं।

उपर्युक्त कविता से हमे यह बोध लेना है कि हमारे मे अनेक अवगुण हैं। इसलिए दूसरे व्यक्ति के अवगुणो को देखने की चेष्टा करने से रुकना चाहिए और अपने अवगुणो को दूर करके दूसरों के गुणो को ग्रहण करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। अगर इस तरह नही करोगे और ऊँट का अनुसरण करेंगे तो सियाल जैसा कोई मानव आपके सब अवगुणो को बताने वाला मिल जायेगा। तब आपको चुप हो जाना पडेगा।

इसलिए दूसरा आदमी कैसा है, यह देखने से पहले मैं कैसा हूँ यह देखना ज्यादा लाभदायी है। इस तरह करने से आप कैसे हैं, उसका आभास हो जायेगा। एक कवि ने कहा है कि —

बुरा बुरा सब को कहूँ बुरा देखुँ न कोय,
जो घट खोलूँ आपना, मुझ मे बुरा न कोय।

श्री राजस्थान जैन संघ इतिहास के झरोखे में

संघे शक्ति कलियुगे संगठन में शक्ति है

☐ के० एस० जैन
मंत्री, श्री राजस्थान जैन संघ
18, गणेश घाटी, उदयपुर

राजस्थान जैन संघ का इतिहास सन् 1956 से प्रारम्भ होता है । आजादी के बाद देश में जैन व हिन्दू मंदिरों पर सरकार का हस्तक्षेप बढ़ता गया फलस्वरूप 1956 में राजस्थान हिन्दू पब्लिक ट्रस्ट बिल सरकार ने प्रस्तावित किया । स्व० पूज्य गणिवर्य श्री धर्मसागरजी महाराज सा० के मार्ग-दर्शन में इस बिल का संगठित रूप से विरोध करने का निर्णय लिया गया । फलस्वरूप राज-स्थान में स्थान-स्थान पर सम्मेलन व विरोध सभायें आयोजित कर इस प्रस्तावित बिल का डट कर विरोध किया गया, फलस्वरूप विधान सभा में बिल पास होने के बाद भी राष्ट्रपति के हस्ताक्षर समय पर न होने से बिल कानून नहीं बन पाया । इस प्रकार राजस्थान स्तर पर प्रथम बार धार्मिक व धर्मादा मामलों मे राजनैतिक व सामाजिक हस्तक्षेप रोकने के लिए एक संगठन की स्थापना की गई । जिसने आगे चलकर श्री राजस्थान जैन संघ का रूप लिया ।

सन् 1960 मे भारत सरकार की ओर से पब्लिक रिलिजियस बिल ट्रस्ट प्रस्तावित किया गया । राजस्थान जैन संघ ने इस बिल का विरोध पूरे भारत भर से कराया, इसमे सेठ कल्याणजी परमानन्दजी की पेढ़ी, राजस्थान जैन संघ संस्कृति सभा, सेठ आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी, श्री जैन श्वेताम्बर संघ कान्फ्रेन्स आदि ने काफी सहयोग दिया, फलस्वरूप बिल पारित होकर कानून नहीं बन सका । सन् 1962 में पूज्य पन्यासजी श्री धर्मसागरजी व पूज्य श्री अभय-सागरजी महाराज सा० के सान्निध्य मे राजस्थान जैन संघ की औपचारिक रूप से स्थापना की गयी । और श्रीमान् पुखराजजी सा० सिंघी सिरोही को संयोजक बनाया गया । 1964 में श्री नरेन्द्र सिंघजी का केस हाथ में लिया गया । सन् 1965 में मेड़ता रोड में संघ का प्रतिनिधि सम्मेलन हुआ जिसमें श्रीमान् गुमानमलजी सा० लोढ़ा को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया । सन् 1966 से 1975 तक [illegible] प्रगति की ओर बढ़ता गया ।

2 व 3 जून, 1976 को राजस्थान जैन सघ के प्रतिनिधि व कायकर्ताओ का सम्मेलन आबू देलवाडा के प्रागण मे बुलाया गया । उपरोक्त सम्मेलन में सघ का विधान बनाकर पारित किया गया। सघ को गति प्रदान करने के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया गया। फलस्वरूप श्री पावापुरी राजगृही तीर्थों की प्रबन्ध व्यवस्था, श्री महावीरजी जैन तीर्थ को श्वेताम्बर आमनाय का तीर्थ घोषित कराना, मगरवाडा मणिभद्र तीर्थ, देवगढ मदारिया मन्दिर, आसीन्द, सनवाड, नाडलाई, कोलरगढ, माण्डोली, भाण्डवपुर, मानपुर, केशरिया नाथजी आदि तीर्थों के विवादो मे सहयोग किया जाकर कानूनी लडाइयाँ लडी गयी। इसके अलावा स्वामी वात्सल्य का द्रव्य भी धार्मिक द्रव्य है। राजस्थान मे अनोप मण्डल की प्रवृत्तिया, महाराष्ट्र मे प्रयासो पर लागू होने वाला कामन गुड फण्ड एक्ट, केशरियाजी तीर्थ के भण्डार से 34% का भण्डारी को भुगतान, केशरियाजी तीर्थ के मूल नायक श्री ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा का वज्रलेप, देश मे मास ब्रीडिग कत्लखाने आदि हिंसा के कार्य आदि विवादो का डट कर मुकाबला किया एव सफलता प्राप्त की। इसके अलावा समग्र जैन समाज की सवत्सरी एक हो एव राजस्थान मे साधु साध्वी भगवतों के विहार बढे, आदि बातों के लिए प्रयत्न किये गये।

10–11 वर्ष के अन्तराल के बाद 31 मई, 1987 को आबू देलवाडा के प्रागण मे श्रीमान् पुखराजजी सा० सिघी की अध्यक्षता मे सघ का सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल श्री बसन्तरावजी पाटिल करने वाले थे परन्तु श्री चरणसिंह की मृत्यु के कारण वे नही पधार सके। श्रीमान् लेखराजजी सा० मेहता ने राज्यपाल का सन्देश पढकर सुनाया। सम्मेलन का उद्घाटन नाकोडा तीर्थ के अध्यक्ष श्रीमान् सुल्तानमलजी जैन द्वारा किया गया। तत्पश्चात् सन् 1976 से 1987 तक की रिपोर्ट पढी गयी जिसे सर्वानुमति से स्वीकार किया गया।

इस सम्मेलन में सगठन को मजबूत बनाने के लिये विचार आमन्त्रित किये गये, इस पर श्री भूरमलजी जैन बाडमेर, श्री जौहरीमलजी पारख जोधपुर, श्री चतुरसिंहजी गोरवाडा उदयपुर, श्री सुशीलकुमारजी छजलानी जयपुर, श्री बाबूमलजी मूथा सिरोही, श्री लेखराजजी मेहता जोधपुर, श्री मूलचन्दजी लूणावा, श्री सकुनचन्दजी बापना पोसालिया, श्री शकरलालजी मूणोत ब्यावर, श्री चम्पालालजी सालेचा, श्री हीराचन्दजी बैद, श्री शान्तिकुमारजी सिघवी जयपुर ने अपने विचार व्यक्त कर कई रचनात्मक सुझाव दिये जिनका सयुक्त विवरण श्री के० एल० जैन उदयपुर द्वारा तैयार कर रखा गया इस पर सम्मेलन में विचार विमर्श कर प्रस्ताव पारित किये।

सम्मेलन द्वारा यह भी निर्णय लिया गया कि सगठन के विधान मे यदि कोई सुधार व सशोधन अपेक्षित हो तो वह किया जाकर विधान को व्यापक रूप दिया जाय। 21 सदस्यो की एक समिति का गठन किया जो एक वर्ष मे अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करे। यह समिति वर्तमान में राजस्थान जैन सघ कार्यकारिणी के तौर पर कार्य करेगी। सस्था की विभिन्न प्रवृत्तिया एव पारित प्रस्तावो को कार्यान्वित करने की कार्यवाही करेगी और जब तक सगठन का नया विधान बनकर पास नही हो जाता तब तक वर्तमान विधान के तहत कार्य करते रहेंगे।

सम्मेलन मे निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये गये —

1 सर्वोच्च न्यायालय मे प्रस्तुत बाल दीक्षा सम्बन्धित रिट याचिका।

2. श्री केसरियानाथजी जैन श्वेताम्बर मन्दिर धुलेवा के सम्बन्ध में ट्रस्ट की धारा 53 के अन्तर्गत कार्यवाही ।

3. जैन कला संस्कृति की रक्षा कर धार्मिकता को सजीव बनाये रखें ।

4. श्री चलेश्वर तीर्थ का संरक्षण कर कानूनी एवं आर्थिक सहायता प्रदान करना ।

5. ऐतिहासिक शिलालेख व एण्टीक्यूटिज का संकलन एवं संरक्षण करना ।

6. उपेक्षित स्थानों पर मन्दिरों में पूजा आदि की व्यवस्था करना ।

7. सवाईमाधोपुर जिले में श्री महावीरजी तीर्थ की तीर्थ रक्षा समिति द्वारा तीर्थ को श्वेताम्बर आमनाय का घोषित कराने के कार्य में सहायता ।

संघ के निम्न पदाधिकारी एवं सदस्य मनोनीत किये गये :—

1. कार्यकारिणी समिति :—

श्रीमान् पुखराजजी सिंघी सिरोही अध्यक्ष, श्रीमान् शंकरलालजी मुणोत ब्यावर, उपाध्यक्ष, श्रीमान् कालूलालजी जैन उदयपुर, मंत्री, श्रीमान् भगवानदासजी पल्लीवाल जयपुर, सहमंत्री, श्रीमान् माणकचन्दजी धनेती, जोधपुर, सहमंत्री, श्रीमान् राजमलजी सिंघी सिरोही, कोषाध्यक्ष, सदस्य सर्व श्री शान्तिलालजी मरडिया जोधपुर, सुशील-कुमारजी छजलानी जयपुर, पारसमलजी संभाणी, पूर्णचन्दजी बापना, कोटा, धर्मचन्दजी सिपाणी कोटा, मोहनराजजी भण्डारी अजमेर, कन्हैयालालजी जैन उदयपुर, मोहनलालजी बोथरा बाड़मेर, विनोद-कुमारजी सोमाणी सिरोही, रतनचन्दजी गांधी सिरोही, मोहनराजजी एडवोकेट पाली, मांगीलालजी कोका, पाली, गणेशलालजी पूंजावत उदयपुर, उगमसीजी मोदी, जालौर, कपूरचन्दजी जैन, हिण्डौन सिटी, नथमलजी सालगिया भीलवाड़ा, मांगीलालजी सुराना देलवाड़ा, सम्पतराजजी कोचर बीकानेर, सम्पतराजजी भूरट ।

2. सलाहकार समिति :—

श्रीमान् शंकरलालजी सा० मुणोत ब्यावर, श्रीमान् हीराचन्दजी सा० वैद, जयपुर, श्रीमान् जौहरीमलजी सा० पारख जोधपुर, श्रीमान् मोहन-राजजी सा० सादड़ी वाले एवं श्रीमान् चतुरसिंह-जी सा० गोरवाड़ा उदयपुर ।

3. स्थाई विशेष आमंत्रित :—

श्रीमान् लेखराजजी मेहता जोधपुर, भूरमल-जी जैन बाड़मेर, वल्लभराजजी कुम्मट जोधपुर, महावीरप्रसादजी जैन भरतपुर, मूलचन्दजी लुणावा, मोतीलालजी सा० जीरावला तीर्थ ।

वर्तमान संघ द्वारा प्रारम्भ प्रवृत्तियां :—

1. मासिक विज्ञप्ति द्वारा प्रदेश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों का प्रकाशन श्री संघ के उदयपुर कार्यालय से नियमित हो रहा है ।

2. राजस्थान के सभी जिलों में जिला समितियों का गठन कार्य प्रारम्भ किया गया है ।

3. राजस्थान में स्थित सभी जैन श्वेताम्बर मंदिरों की सूची तैयार करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है ।

4. विभिन्न संस्थाओं से आर्थिक सहायता प्राप्त कर प्राचीन एवं जीर्ण मंदिरों का जीर्णोद्धार कराई ।

5. मंदिरों, संस्थाओं एवं व्यक्तियों को समय-समय पर कानूनी सलाह सूचनायें देना ।

धर्मप्रेमी बन्धुओ से अपील !

परम शासन प्रभावक वधमान तपोनिधि द्विगताधिक मुनिगण नेता, आचायदेव श्रीमद् भुवनभानु सूरीश्वर जी महाराजा आदि की ओर से अहिंसा प्रेमी दयालु बधुओ और बहिनो जोग धर्मलाभ ।

देवगुरु कृपा से ठाणा 25 सुखसाता मे है ।

दु खी मन से यह जानकारी देते हैं कि कर्नाटक सरकार ने बैंगलोर एनिमल फूड कारपोरेशन लिमिटेड द्वारा बैंगलोर के समीप एक विशाल अति आधुनिक इलेक्ट्रिक **ऑटोमेटिक** पशु कत्लखाना निर्माण करने का तय किया गया है। यह प्रोजेक्ट बैंगलोर के समीप काचरमन हलली के निकट 57 एकड जमीन म होने का है इस अति आधुनिक बूचडखाने मे हर रोज 300 भैंसें गायें, 3000 बकरे, भेडें, सूअर आदि और वार्षिक डेढ लाख निर्दोष मूक पशुआ की हिंसा की योजना है।

भगवान् श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्ण जी महावीर स्वामी जी, गौतम बुद्ध, कुमार पाल, गुरु नानक, विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहस, महात्मा गांधी, शिवाजी, राणा प्रताप, सत बसवेश्वर, विनोबा भावे, जैसी पुण्य आत्माओं की इस पवित्र आय भूमि पर मूक, असहाय निर्दोष जानवरो को मारना, खाना बहुत अनुचित है और सरकार की ओर से ऐसी सुविधा उपलब्ध करना इससे भी बुरी बात है। यह योजना कर्नाटक सरकार द्वारा विशाल जन-भावना की अनदेखी करने का ज्वलत उदाहरण है।

- अहिंसा परमो धम
- मा हिंसान् सर्व भूतानि
- दया धर्म का मूल है
- जीवो और जीने दो
- पाप से दु ख आता है और जीव हिंसा महापाप है
- धम से सुख मिलता है और जीव रक्षा बडा धर्म है
- सर्वे जीवा वी इच्छंतिज्विज्ज्ऊ न मरिज्जिउम् ।

यह सब मानने वाले आप जसे अहिंसा प्रेमियो की जागरुकता आज अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

सरकार की ऐसी जीव रक्षा विरोधी नीतियों एवम् प्रवृत्तियों को हमें स्थायी रूप से रोकना है। जनता की ओर से सरकार को हमे पुरजोर अपील करनी है।

अतः कर्नाटक के मुख्यमंत्रीजी को तार द्वारा, पत्र द्वारा, आन्दोलन द्वारा और संस्थाओं द्वारा सामूहिक विरोध प्रकट कर आपको अपना प्रभावशाली विरोध जाहिर करना है। विरोध पत्र का नमूना इसके साथ है। आप अलग-अलग ढंग से अपने शब्दों मे भी अपना विरोध जाहिर कर सकते है। आपके किये हुए कार्य की हमें जानकारी दीजियेगा।

उत्तम आर्य मानव जीवन में मिली हुई मन, वचन, काया की मशीनरी से सुविचार वाणी वतन का उत्पादन बढ़ाते रहे, यही शुभेच्छा।

मुनि गुण सुन्दर विजय का धर्मलाभ

चातुर्मास पश्चात् शेषकाल में विचरित आदरणीय आचार्य, साधु-साध्वी साहब का जयपुर में पधारने के क्रम में सूची

1. परम आदरणीय साध्वी श्री भद्रपूर्णा श्री जी ठाणा 6
2. ,, ,, साध्वी श्री देवसेना श्री जी ठाणा 2
3. ,, ,, आचार्य भगवन् जयंतसेन सूरीश्वर जी ठाणा 9
4. ,, ,, गणि जयंत विजय जी ठाणा 2
5. ,, ,, गणि नरदेवसागर जी ठाणा 2
6. ,, ,, साध्वी श्री सुकोमान्निया श्री जी ठाणा 3
7. ,, ,, चन्द्रोदया श्री जी ठाणा 12
8. ,, ,, यशकीर्ति श्री जी ठाणा 4
9. ,, ,, शीलप्रभा श्री जी ठाणा 2
10. ,, ,, सुशीला श्री जी ठाणा 3
11. ,, ,, मुनि श्री नयकीर्ति सागर जी
12. ,, ,, [illegible] श्री जी ठाणा 5
13. ,, ,, मुनि श्री [illegible] चन्द्र विजय जी ठाणा 6
14. ,, ,, साध्वी श्री सुमति श्री जी ठाणा 3
15. ,, ,, मुनि श्री नित्यानन्द विजय जी ठाणा 2

आयम्बिल शाला नवीन शेड निर्माण में सहयोगकर्ता

(गत वर्ष की सूची से आगे)

31-3-88 तक

	फोटो	भेंट कर्ता
1	स्व श्री रूपचन्दजी वाठिया	श्रीमती शान्ता देवी वाठिया एव परिवार की ओर से
2		श्रीमती माणकबाई रामपुरिया धर्मपत्नी दुलीचन्दजी रामपुरिया, दिल्ली
3	श्रीमती कचन कवर ढढ्ढा धर्मपत्नी हीराचदजी ढढ्ढा	ढढ्ढा जतनचन्द, विनयचन्द एव निर्मलचन्द
4	श्रीमती नर्मदाबाई	श्री चुन्नीलालजी पोरवाल
5	स्व श्री तिलराजजी मुणोत कोटावाले	श्री भीमराजजी मुणोत एव परिवार
6	स्व श्री कस्तूरचदजी भडकतिया बूदीवाले	श्री मोतीलालजी, गणेशमलजी भडकतिया पुत्र एव परिवार
7	श्रीमती शान्तिबाई धमपत्नी चुनीलालजी पालरेचा, चूलीवाले	(स्वगवास 18-8-87) लुनावला हस्ते पारसमलजी कटारिया
8	डा 'मनु भाई शोमचन्द शाह, पेथापुर वाले	धमपत्नी श्रीमती सरस्वती बहन एव परिवार
9	श्रीमती सतोषदेवी ढढ्ढा	श्री राजेन्द्रकुमार प्रदीपकुमार ढढ्ढा
10	श्रीमती फूलीबाई	श्री बोहरीलालजी रानीवाले
11		श्री रमेशचन्दजी मेहता

□ □ □

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर की महासमिति

क्र.सं.	नाम, पद व पता		दूरभाप निवास	कार्यालय
1.	श्री शिखरचन्द पालावत डिग्गी हाउस, 15, शिवाजी मार्ग	अध्यक्ष	42700	61190
2.	श्री कपिल भाई केशवलाल शाह इण्डियन वूलन कारपेट, पानों का दरीबा	उपाध्यक्ष	45033	
3.	सुशीलकुमार छजलानी घीवालों का रास्ता	संघ मंत्री	62496	42789
4.	श्री मोतीलाल कटारिया दूगड़ बिल्डिंग, एम. आई. रोड	अर्थ मंत्री		74919
5.	श्री नीमराज पालरेचा ओसवाल मेडीकल एजेन्सीज, हल्दा मार्केट	मंदिर मंत्री	42063	44386
6.	श्री निमलभाई मेहता जड़ियों का रास्ता, निधी भवन	उपाश्रय मंत्री		
7	श्री प्रकाशचन्द चांठिया कालो का मोहल्ला	श्रा. शाला मंत्री एवं संयोजक भोजनशाला	45197	
8.	श्री जीतमल शाह शाह बिल्डिंग, चौड़ा रास्ता	भण्डाराध्यक्ष	47476	
9	श्री विमलकान्त देसाई दरोगाजी की हवेली के सामने, ऊँचा कुआ, हल्दियों का रास्ता	शिक्षण मंत्री	41080	
10.	श्री सौभाग्यचन्द बापना [illegible]	निर्माण निरीक्षक	79421	
11.	श्री कुशलचन्द शाह मोदियों का चौक, घीवालों का रास्ता	संयोजक, [illegible] उपकरण भंडार	40150	
12	श्री [illegible] सिंघी	संयोजक [illegible] मन्दिर	46183	

क्र स	नाम, पद व पता		दूरभाष निवास	कार्यालय
13	श्री हरीशचंद मेहता मेहता हाउस, चितरंजन मार्ग, सी स्कीम	सदस्य	63080	
14	श्री नरेन्द्रकुमार लूनावत 2135-36, लूनावत हाउस, दडा मार्केट हल्दियों का रास्ता	सदस्य	41882	
15	श्री मदनराज सिंघवी डी-140, बनीपार्क	सदस्य	62845	
16	श्री विमलकुमार लूनावत घाटीवालो का नोहरा, परतानियो का रास्ता	सदस्य	46945	
17	श्री विनय कोचर पुरन्दरजी की गली	सदस्य		
18	श्री पारस बाफना बाफना बुक डिपो चौडा रास्ता	सदस्य	49709	
19	श्री नरेन्द्र कोचर 4350, नथमलजी का चौक कुन्दीगर के भैरू जी का रास्ता	सदस्य	44750	
20	श्री श्रीचन्द डागा एलाइड जैम्स, हल्दियो का रास्ता	सदस्य	45549	
21	श्री प्रकाश मेहता घाटीवालो का नोहरा, परतानियों का रास्ता	सदस्य	48189	
22	श्री विमलकुमार लोढा शान्ति रोडवेज के सामने, मोती डूगरी रोड	सदस्य		48369
23	श्री पुखराज जैन आबू वालों की हवेली, दीनानाथजी की गली चांदपोल बाजार	सदस्य		65749
24	श्री भवरलाल मूथा विजय इन्डस्ट्रीज सिन्धी कैम्प बस स्टैण्ड के पास	सदस्य		64939
25	श्री राकेश मोहनोत 4459, कुन्दीगरों के भैरूजी का रास्ता	सदस्य	41038	

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर
वार्षिक कार्य-विवरण सन् १९८७-८८, संवत् ४४-४५
महासमिति द्वारा अनुमोदित

सुशीलकुमार छजलानी, संघ मंत्री

परमादरणीय परम विदुषी साध्वी साहब चन्द्रकला श्रीजी, साध्वी श्री शीलमाला श्रीजी, श्री शीलकांता श्रीजी, श्री अभयरत्ना श्रीजी, श्री रत्नमाला श्रीजी, श्री हितरत्ना श्रीजी आदि ठाणा 6 को सादर वन्दना सहित आज भगवान महावीर के जन्म वांचना एवं संघ के वार्षिकोत्सव पर आप बुजुर्गो, माताओ, भाइयो, बहिनों एवं साथियों का स्वागत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है। यह पुनीत दिवस संघ के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है जब हम परम तारक शासन नायक विश्व वंद्य भगवान महावीर के जन्म वांचना पर उपस्थित रह कर पुण्योपार्जन का अर्जन करते है। आज की पुनीत वेला में विगत वर्ष मे इस संस्था में हुई विभिन्न गतिविधियों एवं आय व्यय का लेखा जोखा भी प्रस्तुत किया जाता है।

मुझे महासमिति द्वारा अनुमोदित विभिन्न गतिविधियो एवं आय व्यय 87–88 का लेखा प्रस्तुत करते हुए गौरव एवं प्रसन्नता है। दिसम्बर 87 पिछली महासमिति के कार्यकाल का तीसरा किन्तु अन्तिम वर्ष था। आवश्यकतानुसार विगत महासमिति का कार्यकाल 2 माह के लिए बढ़ाया गया था। इस वर्ष चुनाव कराने के लिए वोटर लिस्ट मे व्यापक संशोधन किया गया। समाचार पत्र मे, पेढ़ी के सूचना पट्ट पर व्यापक सूचना वोटर लिस्ट में संशोधन, परिवर्धन हेतु प्रकाशित की गई थी। यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि संघ के सदस्यों ने पूर्ण उत्साह से वांछित सूचनाएं उपलब्ध कराकर अपूर्व सहयोग दिया। चुनाव अधिकारी सुपरिचित पूर्व चुनाव उप आयुक्त रहे श्री माणक राजजी कानूनगो मनोनीत किये गये थे। उन्होंने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर कुशलता से चुनाव की तैयारी कर संघ को अनुगृहीत किया। चुनाव के माहौल में जोश होना स्वाभाविक है। चुनाव मे 38 व्यक्ति उम्मीदवार थे। वांछित सदस्य संख्या से अधिक के नाम वापिस लेने के कारण चुनाव निर्विरोध सम्पन्न हुए।

चुनाव अधिकारीजी द्वारा चुनाव निर्विरोध घोषित करने के पश्चात् दिनांक 7–3–88 को महासमिति मे 4 सदस्यों को सहवरित करने के बाद पदाधिकारियों का चुनाव सम्पन्न हुआ।

विगत चातुर्मास : जैसा आपको ज्ञात है कि आचार्य भगवंत श्री विजय सद्गुण सूरीश्वर जी आदि ठाणा 3 का चातुर्मास आनन्द सम्पन्न हुआ। आचार्य भगवन ने आचार्य हेमचन्द्राचार्य द्वारा रचित योगशास्त्र एवं जैन रामायण पर प्रतिदिन चातुर्मास मे व्याख्यान फरमाया। आचार्य महाराज श्री [illegible] द्वारा प्रकाशित पुस्तकालय मे ज्ञान खाते से रु 15000) की

राशि भेंट की गई एव आचाय महाराज द्वारा हिन्दी मे अनुवाद की गई पुस्तक 'जीवन का कतव्य' को छपाने हेतु रु 6233) की द्रव्य सहायता स्वीकृत की गई। इसी चातुर्मास में आचाय महाराज द्वारा सूरी मत्र के पाचवें प्रस्थान का जाप किया गया। आचाय महाराज ने कलकत्ता की ओर विहार किया।

चदलाई तीर्थ वार्षिकोत्सव हर वष की भाति मगसर बुदि 5 दिनाक 10-11-87 मगलवार को वार्षिकोत्सव रखा गया। जिसमे काफी भाई बहिनो ने लाभ लिया। वहा पर साधर्मी वात्सल्य भी रखा गया। इस वर्ष की आय 2111) व व्यय 2870) रु हुआ।

सीमधर स्वामी जिनालय वार्षिकोत्सव इस मन्दिर की प्रतिष्ठा दिवस दिनाक 18-11-87 को वार्षिकोत्सव उल्लास से मनाया गया। इसकी व्यवस्था समिति के सयोजक श्री कुशलराज जी सिंघी थे। यहा पर आचार्य सद्गुण सूरी जी के प्रवचन के बाद पार्श्वनाथ पचकल्याण पूजा ठाठ-बाठ से हुई। तत्पश्चात् साधर्मी वात्सल्य का आयोजन रहा। आत्मानन्द सेवक मण्डल का सहयोग प्रशसनीय था। टेन्ट आदि के स्थान उपलब्ध कराने के लिए तथा व्यवस्था म सहयोग के लिए भागचन्दजी छाजेड का सहयोग प्रशसनीय था।

सन् 1985 मे प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात् से ही इस मन्दिर के निर्माण काय को पूरा कराने के लिए महासमिति विशेषकर अध्यक्षजी प्रयत्नशील हैं। परन्तु जैसा आपको विदित है कि सोमपुरा के असहयोग के कारण इसे वाछित गति से पूरा नही कराया जा सका है। अब व्यक्त करते प्रसन्नता है कि अध्यक्षजी एव सयोजकजी की तत्परता व महासमिति की वचनबद्धता के कारण नये सोमपुरा की व्यवस्था कर ली गई है तथा आशा है कि पयुषण बाद काय प्रारम्भ हो जायेगा जिसमे यथाशक्ति गतिशीलता प्रदान की जायेगी एव मूल प्लान के अनुरूप उसे पूरा किया जायेगा।

नया मन्दिर स्थित उपाश्रय का नव-निर्माण एव शिलान्यास समारोह रायपुर मे ऋषभदेव भगवान मन्दिर ट्रस्ट के अध्यक्षजी श्री निहालचन्दजी नाहटा द्वारा आमन्त्रित मीटिंग मे स्वीकृति के बाद मन्दिर के अग्रभाग मे उपाश्रय की मजूरी के लिए सेठ निहालचन्दजी नाहटा का आभार व्यक्त करते हुए सेठ निहालचन्दजी नाहटा ही के हाथों शुभ मुहूत मे दिनाक 28-1-88 को विजय मुहूत की शुभ वेला में उपाश्रय के शिलान्यास का समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सघ द्वारा शाति स्नात्र की गई जिससे धनरूपमलजी नागौरी ने एव ज्ञानचन्दजी भण्डारी ने क्रिया कराने में सराहनीय सहयोग किया। इस शुभ अवसर पर प्रभावना का लाभ जगवतमलजी जसवतमलजी साड ने लिया।

तुरन्त पश्चात् निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। नये चुनाव कराने के पश्चात् इसके निर्माण को और गति देने के लिए तथा काम शीघ्र सम्पन्न कराने के लिए सयोजक श्री जीतमलजी शाह की नियुक्ति का प्रस्ताव किया गया जिसे महासमिति ने स्वीकृत कर दिया—यह आशा की जाती थी कि यह योजनानुसार निर्माण पूरा हो जाने से इस वर्ष ही आराधना के लिए स्थान की कमी पूरी हो जायेगी एव सघ का मनचीता पूरा हो जायेगा। परन्तु यह व्यक्त करते खेद है कि सघ के अन्तरीय क्रम के कारण ऐसा नही हो सका—अब आशा है कि शीघ्र ही यह कार्य प्रारम्भ हो जायेगा एव यथासम्भव जल्दी पूरा करान का यथासम्भव प्रयास किया जायेगा।

बरखेड़ा तीर्थ एवं वार्षिकोत्सव : दिनांक 28-2-88 को सदैव की भांति तीर्थ पर वार्षिकोत्सव मनाया गया जिसमे 700, 800 भाई बहिनों ने भाग लिया—मूल नायक आदीश्वर भगवान की प्राचीन एवं मनोहारी मूर्ति के प्रक्षाल एवं पूजन का लाभ लिया। इस अवसर पर पू. गणिवर्य श्री जयंत विजयजी मा. सा. ठाणा 2 की निश्रा में आदीश्वर पंच कल्याणक पूजा पढ़ाई गई एवं तत्पश्चात् साधर्मी वात्सल्य सम्पन्न हुआ। इस मन्दिर के सयोजक श्री राकेशकुमारजी मोहनोत एवं ज्ञानचन्दजी टुकलिया की सेवाएं भी इस अवसर पर सराहनीय थी। साधर्मी वात्सल्य की व्यवस्था व बस की व्यवस्था सराहनीय थी। बस की व्यवस्था आत्मानन्द सेवक मण्डल द्वारा की गई। वे धन्यवाद के पात्र हैं। गांव में मिठाई का वितरण किया गया आत्मानन्द सेवक मण्डल द्वारा चारे की व्यवस्था की गई।

इस वर्ष स्थानीय संयोजकजी टुकलियाजी द्वारा आवश्यकता बताये जाने पर पशुओं के लिए बरखेड़ा में एक व शिवदासपुरा मे दो पानी की सीमेन्ट की टंकियां रखाई गई। इस वर्ष में इसकी आय 11293.95 रु. व व्यय 13641.35 रु. हुआ।

साधु-साध्वी साहब का शेष काल में पदार्पण : जयपुर का सौभाग्य है कि केन्द्रीय स्थान पर अवस्थित होने के कारण शेष काल मे विचरते साधु-सांध्वी साहब की सेवा का लाभ आपके इस संघ को मिल रहा है। जो साथ में संलग्न लिस्ट से उल्लेखित है। इसमें विशेष उल्लेखनीय आचार्य जयन्त सेन सूरीजी महाराज, गणी नर देव सागरजी एवं गणि नित्यानन्द विजयजी एवं एवं गणि जयंत विजयजी का प्रवास है।

पंचान्द्रिका महोत्सव : दिनांक 18 जून से 22 जून 88 तक संघ में दोष उत्पन्न हो जाने के कारण गणिजी नित्यानन्दजी के प्रवास का लाभ उठाकर दोष निवारणार्थ पंचान्द्रिका महोत्सव का कार्यक्रम रखा गया। इसी अवसर पर शिखर पर जीर्ण-शीर्ण ध्वज दण्ड हो जाने के कारण नवीन ध्वज दण्ड की भी पुनः प्रतिष्ठा की गई जिसका लाभ उदारमना श्री भंवरलालजी मूथा ने लिया।

वर्तमान चातुर्मास : सदैव की भांति पिछले चातुर्मास के पश्चात् ही नये चातुर्मास के लिए साधु-साध्वी साहब की विनती के प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये गये थे। इस क्रम मे फलौदी पार्श्वनाथ मे आये महाराज मे पैदल यात्री संघ के पदार्पण के अवसर का लाभ उठाकर वहां विराजित आचार्य सुशील सूरीश्वरजी, एवं गणि पद्मेन्द्रसागरजी से विनती हेतु एक प्रतिनिधि मण्डल संघ अध्यक्ष [illegible]जी, उपाध्यक्ष [illegible] भाई—संघ मंत्री सुशीलकुमार छजलानी, नरेन्द्रजी कोचर, राकेशजी मोहनोत का गया। आचार्य सुशील सूरीश्वरजी ने जोधपुर जाने का हुक्म लिया। इसी अवसर पर वहां विराजित आचार्य इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी एवं गणिजी नित्यानन्द विजयजी से भी चातुर्मासार्थ विनती की गई—विनती स्वीकार न करने की स्थिति मे—मार्ग में आने वाली [illegible] का लाभ जयपुर को देने की विनती भी गई।

आचार्य सुशील सूरीश्वरजी को जोधपुर [illegible] एवं गणिवर्य पद्मेन्द्र सागरजी को [illegible] दी गई अतः यह लाभ हमें नहीं मिल सका। इसी बीच जैन भवन में विराजित साध्वी श्री [illegible] जी के निस्तारक चातुर्मास के सफल समापन के समाचार एवं उनके गुणों से प्रभावित होकर उनके जयपुर में चातुर्मास की विनती की गई। परन्तु [illegible] पूज्य गुरुणीजी

श्री चन्द्रकलाजी से मन्दसौर मे विनती करने की आज्ञा की। इसी क्रम मे सघ का प्रतिनिधि मण्डल जिसमे सर्वश्री भवरलालजी मूथा, विमलकुमारजी लुणावत, खेमराजजी पालेचा, चिमनभाई मेहता, रतनलालजी सोनी, गुणवतजी साड, सुशीलकुमार छजलानी रतलाम मे विराजित पन्यास अशोकसागर जी महाराज की सेवा मे भी गया वहा उनसे पुरजोर विनती की गई। वहा पर मुनि श्री अरुण विजय जी भी विराजमान थे। परन्तु उनके वहा कई काय होने के कारण पन्यासजी अशोकसागरजी ने असमर्थता व्यक्त की। यहा से हम मन्दसौर गये—जहा अभी विराजित साध्वी सा. श्री चन्द्रकलाजी आदि के प्रथम दर्शन का लाभ मिला, उनसे जयपुर की ओर से विनती की गई। साध्वी साहब के प्रभावशाली व्यक्तित्व, प्रवचन आदि से प्रभावित होकर जयपुर चातुर्मास की पुरजोर विनती की गई। आप हिन्दी भाषी भी हैं—प्रभावशाली प्रवचनकार भी हैं—उदयपुर जन्म स्थल होने के कारण राजस्थान का गौरव भी है।

आपने पुन आखातीज को वहा होने वाले सघ के समारोह के पारणे पर हाजिर होने को कहा। तदनुसार शिखरचन्दजी पालावत, पतनमलजी लूणावत, मनोहरमलजी लूणावत, नरेन्द्रकुमारजी लूणावत, जीतमलजी शाह व सुशीलकुमारजी छजलानी उनकी सेवा मे उपस्थित हुए। इससे पूर्व हम एक दिन रतलाम भी गये तथा काफी प्रयास भी किया कि पूज्य पन्यास अशोक सागरजी का जयपुर चातुर्मास का लाभ मिल जाये। परन्तु उन्होने असमर्थता प्रकट की।

उन्होंने हमारी भावना से प्रभावित होकर सवत् 47 के चातुर्मास की सम्भावना के लिए प्रयत्नशील रहने को कहा। वहाँ से हम साध्वी श्री चन्दकला श्रीजी के पास मन्दसौर पहुचे वहा आखातीज के समारोह मे सघ की तरफ से भारी सभा मे विनती की। कई शहरो व गावो से पधारे लोग जयपुर की विनती पर प्रसन्न थे। उदयपुर के भाई के एल जैन का इस विनती को स्वीकृति मे सराहनीय सहयोग रहा। काफी मेहनत के बाद हम जयपुर के लिए जय बुलाने मे सफल हो सके। क्योंकि कई क्षेत्रो की विनती पर भी जय बोल दिये जाने पर हम लोग नागेश्वर दर्शन का लाभ लेकर जयपुर लौट एव सघ को चातुर्मास की स्वीकृति की सूचना दी गई।

आदरणीय साध्वी साहब का नगर प्रवेश हम लोग साध्वी साहब के आगमन की सूचना पाकर लालसोट गये। 13-7-88 जयपुर शहर मे पधारकर सर्वप्रथम पुगलिया मन्दिर, टोक फाटक मन्दिर विराजने के पश्चात् कानोता बाग मे श्री ज्ञानचन्द्रजी गोलेछा एव सुशीलकुमार छजलानी एव शिखरचन्दजी पालावत के यहा विराजकर उपदेश फरमाते हुए वह शुभ वेला उपस्थित हो गई जब 20-7-88 को प्रात 8 बजे चैम्बर भवन से घूमधाम से बैण्डबाजे सहित जुलूस मे बापू बाजार, जौहरी बाजार होते हुए आत्मानन्द भवन मे प्रवेश किया। घी वालो के रास्ते मे मुख्य प्रवेश द्वार बनवाया गया था।

मन्दिर मे दर्शन कर आत्मानन्द सभा भवन मे सघ अध्यक्ष श्री शिखरचन्द्रजी पालावत, एव मन्त्री सुशीलकुमार छजलानी ने अपनी ओर से एव सघ की ओर से साध्वी मण्डल का स्वागत एव अभिनन्दन किया एव उग्रविहार कर मन्दसौर से जयपुर पधारने का उपकार व्यक्त किया। साध्वी साहब ने मगल प्रवचन फरमा कर धर्म की जीवन मे आवश्यकता बताई। प्रभावना का लाभ श्री भवरलालजी मूथा ने लिया

साध्वी साहब के नगर प्रवेश के पश्चात् ही ग्रात्मानन्द सभा भवन में धार्मिक चहल-पहल का वातावरण हो गया। वहिनों में तो विशेष जागृति ग्रा गई।

साध्वी साहब ने पधारने के पश्चात् ग्रष्टमी चतुर्दशी के दिन प्रातः 6 वजे भक्तामर का पाठ का प्रारम्भ किया—ब्रह्म वेला में महा प्रभाविक पाठ का जो ग्रानन्द है वह ग्रवर्णनीय है। इसी प्रकार बैठते माह एकम के दिन ऋषि मण्डल का पाठ भी पूज्य साध्वी साहब ने मनोयोग से फरमाना प्रारम्भ किया है।

स्व. परम पूज्य ग्राचार्य जयदेव सूरीजी की प्रथम पुण्यतिथि के निमित्त तीन दिन का 31–7–88 से 2–8–88 तक जिनेन्द्र भक्ति का कार्यक्रम रखा गया। 31–7–88 को पार्श्वनाथ पंचकल्याण पूजा का लाभ रतनलालजी सोनी ने लिया। 1–8–88 को ग्रन्तराय कर्म की पूजा का लाभ ज्ञानचन्द सुशीलकुमार ने लिया। तथा 2–8–88 को उवस्सगहरं की पूजा श्री संघ की ग्रोर से सामूहिक हुई।

31–7–88 को सामूहिक ग्रायंबिल कराने का लाभ ज्ञानचन्द सुशीलकुमार छजलानी ने लिया। उपकारी साध्वी साहब ने 9 दिन में 108 भक्तामर के दिन में 3 वार 4–4 पाठ का जाप का कार्यक्रम एकासणे की तपस्या के साथ रखा जो जयपुर में प्रथम व ग्रनूठा था। इसमें प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या मे प्रातः मध्याह्न एवं सायं भाइयों ने एवं बहिनों ने लाभ लिया। 9 दिन के एकासणों का लाभ विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किया गया। इस तपस्या की पूर्णाहुति पर 14–8–88 व 15–8–88 को भक्तामर महापूजन का ग्रायोजन किया गया। साध्वी साहब के पदार्पण के पश्चात् एक माह तक व्याख्यान के वाद प्रभावना का लाभ 19 दिन मंगलचंद ग्रुप ने लिया तथा ग्रन्य विभिन्न व्यक्तियों ने लिया।

नेमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक : 18-8-88 को प्रथम वार नेमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक धूमधाम से मनाया गया।

साधर्मी सेवा कोष व भोजन शाला : ग्राचार्य कलापूर्ण सूरीजी की प्रेरणा से स्थापित साधर्मी सेवा कोष व भोजनशाला वाहर से ग्राने वाले भाइयों, विद्यार्थियों, ग्रादि के लिए उपयोगी साबित हुई है। जिसे संतोष प्रद स्तर पर लाने के लिए प्रयास जारी हैं।

ग्रात्मानन्द सेवा मण्डल : मण्डल की सेवा सराहनीय है। गणि जी नित्यानंद विजय जी के ग्रागमन पर बाहर से व्याख्यान एवं सहभोज का कार्यक्रम रखकर सराहनीय कार्य किया।

जन्म की प्रभावना : गत वर्ष की प्रभावना का लाभ एक भाग्यशाली परिवार ने लेकर एवं नाम गुप्त रखकर पुण्योपार्जन किया है। ग्रतः संघ की तरफ से उनकी ग्रनुमोदना की जाती है। गत चतुर्मास से ग्रब तक की उल्लेखनीय घटनाग्रों का विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् संघ की स्थायी गतिविधियों के संबंध में निवेदन कर रहा हूँ।

सुमतिनाथ जिन प्रासाद : जयपुर की स्थापना काल के २५६ वर्षीय प्राचीन एवं भव्य इस जिनालय की व्यवस्था को सुन्दर ढंग से करने का विनम्र प्रयास किया जाता रहा है। यहाँ की सुन्दर व्यवस्था एवं स्वच्छता के कारण अधिक से अधिक संख्या में भक्तों को यहाँ पधारकर प्रभु दर्शन से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है।

इस मंदिर का मुख्य आकर्षण मूलनायक श्री सुमतिनाथ भगवान कायोत्सर्ग मनोहारी प्रतिमा श्री स्वामी भगवान, जयवधन पार्श्वनाथ भगवान् एव प्रगट प्रभावी श्री मणिभद्रजी महाराज हैं। इस वष की आय रु 1,51,238 38 रही एव व्यय रु 60,443 थे। आचाय कलापूर्ण सूरीश्वरजी की प्रेरणा से अजमेर मे निर्माणधीन मंदिर मे निर्माण के रु 5,000) सहयोग का आश्वासन दिया गया है।

श्री सीमधर स्वामी मदिर जनता कॉलोनी अजनशाला एव प्रतिष्ठता के पश्चात् बार-बार सोमपुरा से कहकर मंदिर के काम को गति देकर इसे पूरा कराने का प्रयास किया गया है। परन्तु सोमपुरा ने आशा के अनुरूप कार्य नही किया तथा बीच मे ही काम छोडकर चला गया। महासमिति को काम मे गति न पाने का पूरा अहसास है परन्तु काम तो सोमपुरा को ही करना है। आचार्य महाराज श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी ने उसे काम करने को कई बार लिखवाया है। फिर भी श्री धनशकर भाई के हाजिर न होने पर पुराने सोमपुरा श्री देवीचद भाई को बुलाकर उनसे काम कराने का वादा लिया है। वह पयु षण के पूव ही काम प्रारम्भ करने को तत्पर था। परन्तु निर्माण काय पयु षण में करने से दोष न लगे अत पर्युषण बाद काम निश्चित रूप से शुरु हो जायेगा। मकराना से भी काम मे आने वाला माल शीघ्र पहुँच जाने वाला है।

नियमित व्यवस्था मे आय 3,648 रुपये थी तथा खच 6,161 रुपये था।

निर्माण में आय 36,345 रुपये थी तथा खच 82,172 रुपये था।

आप लोगो को पुन आश्वस्त करना महासमिति अपना कर्तव्य समझती है कि इसे शीघ्र पूरा कराने का यथा सभव प्रयास मे कोई कसर बाकी नही रखी जायेगी। आप सबका भी इसमे अथ का एव भावना का सहयोग वाछित है।

श्री रिषभदेव स्वामी मदिर बरखेडा यहां की व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। इसमे सयोजक श्री राकेशजी मोहनोत एव स्थानीय श्री ज्ञानचदजी टुकलिया ने बडे उत्साह से काम की देख-रेख की है। यहा की इस वष की आय 2,014 55 रु थी तथा खर्च 3,605 45 थे।

चदलाई तीर्थ यहां की व्यवस्था सुचारु रूप से चल रही है। इसकी आमदानी व खच सुमतिनाथ मंदिर के आय-व्यय मे दिया गया है।

श्री वर्द्धमान आयबिल शाला आयबिल तप कर्म क्षय का मुख्य सोपान है। आयबिल शाला सुचारु रूप से चल रही है। आयबिल निर्माण खाते मे फोटो लगाने से प्राप्त आय 11,477 रु थी। आयबिल शाला मे और सुदर व्यवस्था करने हेतु आयबिल शाला मत्री श्री प्रकाशजी बाठिया के माध्यम से महासमिति प्रयत्नशील है। इसमे आप लोगो के भी सुझाव एव सहयोग अपेक्षित हैं। आयबिल शाला मे आय 21,838 रु थी तथा खर्च 22,425 रु था। स्थायी मितियों से आय 3,212 रु थी।

साधारण खाता सघ व्यवस्था मे यह खाता महत्त्वपूर्ण एव व्यापक क्षेत्र वाला खाता है। इसमें पूज्यनीय साधु एव साध्वी साहब की वैयावच्च मणिभद्र प्रकाशन, उद्योगशाला एव कर्मचारियों के वेतन आदि का सचालन इस सीगे से किया जाता है। इस मद मे मणिभद्र उपकरण

भंडार से प्राप्त आय भी शामिल होती है। जिससे यह खाता सम्बल प्राप्त करता है। इस वर्ष आय 82919.47 रु. की थी तथा खर्च 1,12,314 रु. था (इसमें बड़ी राशि साधु साध्वी सा. के वैयावच्च एवम् उससे सम्बन्धित अन्य खर्च में की गई है।

ज्ञान खाता एवं पाठशाला : इस खाते में पुस्तकालय ज्ञान भंडार एवम् पाठशाला का व्यय शामिल है। यहां का पुस्तकालय बड़ी संख्या में पाठकों को आकर्षित करता है। इस वर्ष योग्य शिक्षक जी की सेवाएँ प्राप्त होने से पाठशाला चालू हो गयी है। जो सुन्दर ढंग से चल रही है। ज्ञान के मद में आय 8342.10 तथा खर्च 31794 रु. था। इसमे आचार्य सद्गुण सूरीजी की प्रकाशन संस्था मलाड़ में भेजे गये 15000 रुपये एवम् पुस्तक प्रकाशन शामिल है।

साधारण भक्ति कोष एवम् भोजनशाला : आचार्य महाराज एवम् साधु साध्वी सा. के उपदेश में इसके लिए उपदेश फरमाया जाता है। सार्धमिक की समुचित सेवा हो सकेगी तो धर्म पर उसको अडिग रखा जा सकेगा, इससे प्रेरणा पाकर इसका संचालन किया जाता रहा है तथा व्यक्त करते हुए संतोष है कि भोजनशाला व सार्धमिक सेवा कोष से अनेक व्यक्ति लाभान्वित हुये हैं। एवम् उन्होंने संघ को लाभ का अवसर दिया है। इस मद में साधर्मिक सेवा में आय 2179.36 तथा व्यय 6649,68 है। भोजन शाला में खर्च 30506.50 तथा आय 26024.83 है, इसमें कूपन से प्राप्त राशि भी शामिल है। इसको और व्यवस्थित करने के लिए महासमिति प्रयत्न शील है। इसमे और अधिक प्रभावशाली तरीके से काम करने के लिए आपका आर्थिक सहयोग अपेक्षित है।

उपाश्रय निर्माण : प्रस्तावित नया मंदिर स्थित उपाश्रय में नीचे के पांव सुदृढ़ करने का एवम् पाये उठाने का काम पूरा हो गया है। तथा यह संघ की एक अति आवश्यक योजना है, इसे शीघ्र ही पूरा किया जाना है। इसमें विचार विमर्श के देर के कारण इसे पर्युषण बाद शीघ्र ही पूरा करने का प्रयास किया जायेगा। इस मद में इस वर्ष की आमदनी 121126 तथा खर्च 75273 रुपये थे।

सोडाला मंदिर : मंदिर एवम् उपाश्रय निर्माण के लिए यह जमीन श्रीमती शशि मेहता द्वारा संघ को प्रदत्त की गई थी। इसमे ढोला आदि खिंचा दिया गया है। तथा पर्युषण बाद शीघ्रता से कार्य करने के लिए महा समिति तत्पर है। विगत रिपोर्ट मे श्रीमती रतन मेहता का नाम श्रीमती शशि मेहता की जगह उल्लेखित कर देने पर खेद है।

संस्था की आर्थिक स्थिति : इस वर्ष संस्था की आय 514497.58 थी तथा खर्च 466189.83 था। हमारी आर्थिक स्थिति अच्छी है तथा शुद्ध बचत 48307.75 है।

आत्मानन्द सेवक मण्डल : युवकों के संगठन आत्मानन्द सेवक मण्डल की सेवाएँ सराहनीय है। संघ के हर कार्य में जो समय-समय पर इनको सौंपे जाते है, इनके उत्साही कार्यकर्ता इनको तत्परता से पूरा करते है।

अंकेक्षण : अंकेक्षक महोदय (आडीटर) श्री आर. के. चतर साहब का आभार व्यक्त कर हम प्रसन्नता अनुभव करते है। उनकी उचित देखरेख, गहरी दिलचस्पी एवम् संघ के प्रति

समपरण भाव से इन्कम टैक्स सम्वन्धित कार्य निस्वार्थ भाव मे पूरे हो रहे हैं। चतर सा की योग्य सेवाओ के लिए महा समिति उनकी अनुमोदना करती है एवम् धन्यवाद प्रेषित करती है। हिसाव सम्बन्धी उनसे प्राप्त योग्य सुझाव एवम् ग्राडिट रिपोर्ट तथा आय व्यय का विवरण मूल रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है।

कर्मचारी वर्ग सस्था की सफलता मे कर्मचारियों का सहयोग सराहनीय है। सस्था के कमचारी परिवार की भावना से काम करते हैं तथा सघ के काम आशा के अनुरूप गति पाते हैं कर्मचारियो को आर्थिक दृष्टि से सतोष देने के लिए वेतन वृद्धि दी गई है। काम करने के लिए प्रेरणा प्राप्त हो, ऐसा वातारण बनाये रखने का प्रयास किया जाता है। आशा है भविष्य में ये सतोषजनक ढग से कार्य करते रहेंगे।

ध्वनि प्रसारण की व्यवस्था मे श्री गोपीचद जी चोरडिया के सहयोग के लिए धन्यवाद प्रस्तुत किया जाता है।

इस सघ के सचालन मे प्राप्त प्रत्यक्ष एवम् अप्रत्यक्ष सहयोग के लिए सबके प्रति कृतज्ञता के साथ आप सब लोगो का महा समिति एवम् सघ को सहयोग मिलता रहे, सघ विकसित हो, सघ में एकता एवम् सुदृढ सगठन हो, इसी मगल कामना के साथ जय मणिभद्र।

सघ सेवा मे तत्पर रहते हुए महा समिति से जाने एवम् अनजाने मे हुई किसी भी त्रुटि के लिए मिच्छामि दुक्कडम् के साथ अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ। ☐

श्री वर्द्धमान आयम्विल शाला की स्थायी मितियाँ
1-4-87 से 31-3-88 तक

1	श्री केशवलाल एम शाह	501 00
2	श्रीमती शान्ति बाई चुन्नीलालजी चूलीवाले हस्ते पारसमलजी कटारिया	501 00
3	धम पत्नी केशरीसिंहजी पोखरना वान्दनवाडा	501 00
4	डा मन्नुलाल सोमचन्द शाह हस्ते सरस्वती बहन	501 00
5	श्री शखेश्वरमलजी लोढा	151 00
6	समरथ बहन नन्दलाल शाह	151 00
7	विजय राजजी लल्लूजी	151 00
8	सौभाग्यचन्द्र बाफना	151 00
9	हीराचन्दजी चौरडिया	151 00
10	पारसमलजी शान्तिमलजी भण्डारी	151 00
11	स्व आनन्द चन्दजी लोढा की स्मृति मे राजकुमारजी लोढा आगरा, हस्ते रवि चौरडिया	302 00

Shri Jain Shwetamber Tapagach Sangh,
Gheewalon Ka Rasta, Jaipur.

Auditors' Report

I (Form No. 10B)

(See Rule 17b)

Audit Report Under Section 12 A(b) of the Income Tax Act 1961 In the case of Charitable or Religious Trusts or Institutions.

We have examined the Balance Sheet of SHRI JAIN SHWETAMBER TAPAGACH SANGH, Ghee Walon Ka Rasta, JAIPUR as at 31st March, 1988 and the Income and Expenditure account for the year ended, on that date which are in agreement with the books of account maintained by the said trust or institution.

We have obtained all the information and explanations which to the best of our knowledge & belief were necessary for the purpose of audit. In our opinion proper books of account have been kept by the said Sangh, subject to the comment that old immovable and movable properties have not been valued and included in the Balance Sheet.

In our opinion and to the best of our information and according to information given to us, the said accounts subject to above give a true and fair view :—

(i) In the case of the Balance Sheet of the state of affairs of the above named trust/institution as at 31st March, 1988 and

(ii) In the case of the Income and Expenditure account of the profit or loss of its accounting year ending on 31st March, 1988.

The prescribed particulars are annexed hereto.

For CHATTER & CO.
Chartered Accountants

(R. K. Chatter)
Prop.

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

चिट्ठा

कर निर्धारण

गत वर्ष की रकम	दायित्व		चालू वर्ष की रकम
5,41,562 82	सामान्य कोष		5,89,870 57
	पिछला शेष	5,41,562 82	
	जोड़ो इस वर्ष की बचत	48,307 75	
88,680 00	स्थायी मिति आयम्बिल शाला		
	पिछला शेष	88,680 00	
	इस वर्ष की आवक	3,212 00	91,892 00
2,668 00	स्थायी मिति जोत		2,668 00
1,860 00	श्री सम्वत्सरी पारना कोष		1,860 00
3,844 00	श्री नवपदजी पारना		3,844 30
16,120 05	श्री श्राविका संघ खाता		16,120 05
2,500 00	श्री ज्ञान स्थायी कोष		2,500 00
678 94	श्री रमेशचन्दजी भाटिया		678 94
1,980 62	श्री बरखेड़ा (साधारण)		
1,653 00	श्री नित्यानन्द मावल वर्क्स		

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1-4-87 से 31-3-88 तक

वर्ष 1988-89

गत वर्ष की रकम	सम्पत्तियां		चालू वर्ष की रकम
	श्री स्थायी सम्पत्ति		
26,748.45	जायदाद (दुकान)		26,748.45
14,946.50	**श्री विभिन्न लेनदारियां**		
	श्री उगाई खाता	2,419.50	
	श्री अग्रिम खाता	30,000.00	
	श्री राजस्थान स्टेट		
	इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड	727.00	33,146.50
12,323.79	**श्री बरखेड़ा (मन्दिर खाता)**		
	पिछला बाकी	12,323.79	
	इस वर्ष का खर्च	3,605.45	
		15,929.24	
	घटाया : इस वर्ष की आय	2,014.55	
		13,914.69	13,914.69
	श्री बरखेड़ा (साधारण)		
	जोड़ा पुराना बाकी	1,980.62	
	इस वर्ष की आमद	11,293,95	
	घटाया : इस वर्ष का खर्च	13,641.35	366.78
	श्री बैंकों मे जमा व रोकड़ बाकी		
5,11,148.60	(क) स्थायी जमा खाता		
	1-स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर		
	जौहरी बाजार	5,22,265 60	
	2-देना बैंक, एम. आई. रोड	37,342.50	
		5,59,608.10	5,59,608.10

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ,

बिट्ठा

कर निर्धारण

गत वर्ष की रकम	दायित्व	चालू वष की रकम
6,61,547 73		7,09,433 86

नोट उपरोक्त चिट्ठे मे सस्था की पुरानी चल व अचल सम्पत्ति जैसे वर्तन, मन्दिर की पुरानी जायदाद व जेवर वगैरह शामिल नही है जिनका कि मूल्याकन नहीं किया गया है।

शिखरचन्द पालावत
अध्यक्ष

सुशीलकुमार छजलानी
सघ मन्त्री

मोतीलाल कटारिया
अर्थ मन्त्री

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1-4-87 से 31-3-88 तक

वर्ष 1988-89

गत वर्ष की रकम	सम्पत्तियां		चालू वर्ष की रकम
1,435.04	(ख) **चालू खाता**		1,435.04
	स्टेट बैंक ग्राफ वीकानेर एण्ड जयपुर		
81,769 28	(ग) **बचत खाते**		
	1-वैंक ग्राफ वड़ौदा	1,295.19	
	2-वैंक ग्राफ राजस्थान	2,436 36	
	3-स्टेट वैंक ग्राफ वीकानेर एण्ड जयपुर	55,827.70	59,559.25
13,176 07	(घ) **रोकड़ शेष**		14,655.05
6,61,547.73			7,09,433.86

Sd/- आर० के० चतर
वास्ते चतर एण्ड कम्पनी
चार्टर्ड ग्रकाउन्टेन्ट्स

सौभाग्यचन्द्र बाफना
हिसाब निरीक्षक

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ,

आय-व्यय खाता

कर निर्धारण

गत वर्ष का खर्च	व्यय	इस वर्ष का खर्च
—	श्री शासन देवी खाते खर्चा	—
13,965 81	श्री जनता कॉलोनी मन्दिर खर्चा	9,391 44
21,457 80	श्री जनता कॉलोनी मन्दिर निर्माण खर्चा	82,172 47
—	श्री जनता कॉलोनी साधारण खर्चा	6,161 40
3,697 22	श्री आयम्बिल शाला जीर्णोद्धार खर्चा	744 00
21,419 23	श्री भोजन शाला सार्धमिक भक्ति खर्चा	32,674 51
—	श्री वैयावच्च खर्चा	16,803 18
—	श्री उपाश्रय निर्माण खाते खर्चा	75 273 90
1,03 280 35	शुद्ध बचत सामान्य कोष मे हस्तान्तरित	48,307 75
4,18,631 00		5,14 497 58

शिखरचन्द पालावत
अध्यक्ष

सुशीलकुमार छजलानी
सघ मन्त्री

मोतीलाल कटारिया
अर्थ मन्त्री

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1–4–87 से 31–3–88 तक

वर्ष 1988–89

गत वर्ष की आय	आय	इस वर्ष की आय
1,445.93	श्री शासन देवी खाते आमद	1,114.33
6,531.35	श्री जनता कॉलोनी मन्दिर आमद	552.50
59,341.00	श्री जनता कॉलोनी मन्दिर निर्माण खाते आमद	36,345.00
—	श्री जनता कॉलोनी साधारण खाते आमद	3,648.00
3,333 00	श्री आयम्बिल शाला जीर्णोद्धार खाते आमद	12,221.00
30,647.76	श्री भोजन शाला सार्धमिक खाते आमद	32,685.86
—	श्री वैयावच्च खाते आमद	6,804 00
—	श्री उपाश्रय निर्माण खाते आमद	1,21,126.30
26.00	श्री सात क्षेत्र खाता आमद	39.00
659.42	श्री आरती द्रव्य खाता	—
4,18,631.00		5,14,497.58

सौभाग्यचन्द्र बाफना
हिसाब निरीक्षक

Sd/- आर० के० चतर
वास्ते चतर एण्ड कम्पनी
चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स

आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल
विगत वर्ष (१९८७-८८) का विवरण

☐ धनपत छजलानी (मंत्री)

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल की निर्वाचित कार्यकारिणी का वर्ष भर का कार्य-कलाप बड़े ही उत्साह-वर्धक ढंग से सम्पन्न होता रहा है।

कार्यकर्ताओं एवं विशिष्ट व्यक्तियों का बहुमान —

परम्परानुसार विगत भगवान महावीर जन्म वाचना दिवस पर मण्डल द्वारा मण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता सर्वश्री अशोक जैन (शाह), अजय शाह, दर्शन छजलानी एवं दिनेश भण्डारी का बहुमान किया गया। जैन समाज के प्रमुख समाज सेवी एवं संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमान् कस्तूरमलजी सा० शाह एवं संघ के भूतपूर्व मंत्री श्री हीराचन्दजी सा० वैद का उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए अभिनन्दन एवं बहुमान का कार्य संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमान् हीराचन्दजी सा० चौधरी के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

संघों के कार्यक्रमों में योगदान —

जैसा कि आपको विदित है कि यह मण्डल श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ के अन्तर्गत युवकों का वह भाग है जो संघ के विभिन्न आयोजनों की सफल क्रियान्विति में अपना योगदान करता रहा है। साथ ही जयपुर में स्थित विभिन्न संघों के आयोजनों में भी अपनी सेवाएँ अर्पित करता है। तपागच्छ संघाधीन आयोजित होने वाले पर्युषण पर्व, ओलीजी, श्री सीमंधर स्वामी जिनालय, जनता कॉलोनी, आदिश्वर भगवान का जिनालय, बरखेड़ा श्री शान्तिनाथ स्वामी जिनालय, चन्दलाई के वार्षिकोत्सव, आगरे वाला के मंदिर में उपाश्रय निर्माण के शिला स्थापना समारोह में मण्डल ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। श्री चन्द्राप्रभु स्वामी जिनालय, आमेर के वार्षिकोत्सव में भी बस व्यवस्था एवं स्वामी वात्सल्य के कार्यक्रम में भी मण्डल के कार्यकर्ताओं ने अपनी सेवायें अर्पित कीं।

यात्री संघ —

विगत वर्षों की तरह गत वर्ष भी मण्डल द्वारा यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें नाकोड़ा, जैतारण, बिलाड़ा, कापरड़ा एवं जोधपुर आदि की यात्रायें विशेष उल्लेखनीय हैं।

नाकोड़ा तीर्थ :—

सम्वत् 2043 के प्रारम्भ में परमपूज्य श्रीमद्विजय सद्गुणसूरीश्वरजी म० सा० की पावन निश्रा में नाकोड़ा तीर्थ हेतु एवं मार्ग के बीच में पड़ने वाले तीर्थ स्थलों एवं आचार्य भगवंत एवं मुनि मण्डल के दर्शनार्थ मण्डल द्वारा संघ यात्रा का आयोजन किया गया। मण्डल द्वारा आयोजित की जाने वाली यात्राओं के प्रति साधर्मियों के लगाव एवं अटूट विश्वास को दृष्टिगत रखते हुए प्रारम्भिक अनुमान यह था कि इस यात्रा में भी काफी संख्या में यात्रीगण सम्मिलित होंगे और उसी के अनुरूप भगवान् महावीर जन्म वांचना दिवस पर यात्रा के आयोजन की घोषणा के साथ ही अपना स्थान सुरक्षित करवाने हेतु जो उत्साह प्रगट हुआ उसकी कल्पना भी नहीं थी। लम्बी दूरी की यात्रा के कारण पांच बसों तक तो यात्रियों को सम्मिलित किया गया फिर विलम्ब से निर्णय करने वाले इस लाभ से वंचित रह गये। दिनांक 4 सितम्बर, 1987 की रात्रि को 10 बजे जौहरी बाजार से यात्रियों ने प्रस्थान किया एवं प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व जैतारण पहुंच कर आचार्य भगवंत श्री सुशीलसूरीश्वरजी म० सा० की 75वी वर्षगाँठ के निमित्त कार्यक्रम में सम्मिलित हुये एवं वहाँ पर स्थित जिनालयों के दर्शन एवं सेवा पूजा का लाभ लिया, तत्पश्चात् आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित हुये। आचार्य भगवंत को मण्डल की ओर से सूरीमंत्र की हाथी दांत की पट्टिका भेंट की गई। इस अवसर पर पुस्तक विमोचन समारोह भी हुआ जिसमें जयपुर श्रीसंघ के ट्रस्टीगण एवं आगेवान भी उपस्थित थे। इस अवसर पर जैतारण श्रीसंघ की ओर से अध्यक्ष श्री शीतलशाह एवं मंत्री धनपत छजलानी का बहुमान किया गया। साधर्मी वात्सल्य में शामिल होकर वहाँ से प्रस्थान कर बिलाड़ा दादावाडी के दर्शनार्थ पहुंचे। वहाँ से आगे बढ़ते हुये कापरड़ा के भव्य ऐतिहासिक मंदिर के दर्शनार्थ पहुंचे। यहाँ पर मण्डल की ओर से साधर्मी वात्सल्य का आयोजन किया गया। रात्रि को नाकोड़ा पहुंच कर रात्रि विश्राम किया। प्रातःकाल नाकोड़ा तीर्थ मे प्रभु पूजा मे सभी यात्रीगण सम्मिलित हुये। यहाँ की गई सेवा-पूजा का आनन्द यात्रियो को चिरस्मरणीय रहेगा। प्रातःकालीन नवकारसी एवं दोपहर का भोजन कर सायं जोधपुर पहुंचे। मेहता बाग धर्मशाला, जोधपुर में यात्रियों के लिए मण्डल की ओर से साधर्मी वात्सल्य का आयोजन रखा गया था। यहां पर सार्वजनिक सभा हुई जिसमें संघपतियों सर्वश्री हीराचन्दजी चौधरी, बाबूलाल तरसेमकुमार जैन, इन्दरचन्दजी गोपीचन्दजी चोरड़िया, प्रमोदकुमारजी चोरड़िया एवं श्री विजयराजजी लल्लूजी का बहुमान किया गया। इस अवसर पर मण्डल के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री भरत शाह एवं ललित दूगड़ की सेवाओं की विशेष रूप से सराहना की गई। श्री अशोक शाह (उपाध्यक्ष) इस यात्रा के संयोजक थे।

वैसे तो इस विशाल यात्रा के सफल आयोजन में मण्डल के सभी सदस्यों ने भगीरथ प्रयत्न किया, साथ ही समाज के सेवाभावी सहयोगियों एवं यात्रियों के सहयोग को भी नहीं भुलाया जा सकता जिनके प्रेम विश्वास एवं सहनशीलता से ही यह महान् कार्य भली प्रकार और बिना किसी विघ्न बाधा के सम्पन्न हो सका। मण्डल इसके लिये बिना नामोल्लेख किये सभी कार्यकर्ताओं और सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता है और विश्वास करते हैं कि भविष्य में भी इसी प्रकार का सहयोग और यात्रियों का विश्वास प्राप्त करता रहेगा।

सामूहिक गोठ का आयोजन —

तीर्थ यात्रा की सफल पूर्णाहुति निमित्त मोहनबाड़ी मे मण्डल की ओर से एक गोठ का आयोजन किया गया जिसमे तपागच्छ संघ के आगेवान एव खरतरगच्छ संघ के आगेवान उपस्थित थे। ऐसी यात्राओ का आयोजन होता रहे ऐसी प्रेरणा इस आयोजन मे मिली।

आमेर मे साधर्मी वात्सल्य का आयोजन —

आचार्य भगवन्त श्री इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म० सा० के शिष्य पन्यासप्रवर नित्यानन्दविजयजी म० सा० के दिल्ली से पाली चातुर्मास विहार के समय जयपुर आगमन के उपलक्ष में आमेड़ में साधर्मी वात्सल्य का आयोजन रखा गया। इस अवसर पर जिन मंदिर मे स्नात्र पूजा का आयोजन भी हुआ, तत्पश्चात् पन्यासश्री का प्रवचन हुआ एव तदनन्तर साधर्मी वात्सल्य का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसमे तपागच्छ संघ के सभी आगेवान उपस्थित रहे एव ऐसे आयोजन हो ऐसी प्रेरणा देता यह आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ। मण्डल के सक्रिय सदस्य श्री शान्तिकुमार सिंघी एव सुरेश मेहता की सेवायें प्रशसनीय एव प्रेरणास्रोत हैं

शिक्षण सेवा —

मण्डल परिवार की ओर से जरूरतमंद छात्र-छात्राओ के लिए स्कूल की फीस, पोशाक, पुस्तकें आदि की व्यवस्था की जाती रही है। यह क्रम इस वर्ष भी जारी रहा। साथ ही आर्थिक स्थिति से कमजोर परिवारजनों की आर्थिक सहायता का क्रम भी जारी रहा।

धन्यवाद —

इस प्रकार मण्डल परिवार अपने सेवाभावी कार्यक्रमो को सचालित करने मे अनवरत सलग्न रहा है। वर्ष भर के क्रियाकलापों मे प्राप्त सहयोग के लिए मैं सभी भाई बहिनो के प्रति हार्दिक आभार और कृतज्ञता ज्ञापित करता हू और श्रीमान् मोतीलालजी भडकतिया का विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हू जिनका मार्ग-दर्शन समय-समय पर मण्डल परिवार को प्राप्त होता रहता है और यह अटूट विश्वास है कि इसी प्रकार का प्रेम और विश्वास प्राप्त होता रहेगा।

साथ ही मैं आशा करता हू कि श्रीसघ के वर्तमान अध्यक्ष एव सघमत्री का पूर्ण सहयोग सदैव की भांति मिलता रहेगा।

आत्म-सिद्धि से पूर्व आत्म-शुद्धि जरूरी है !
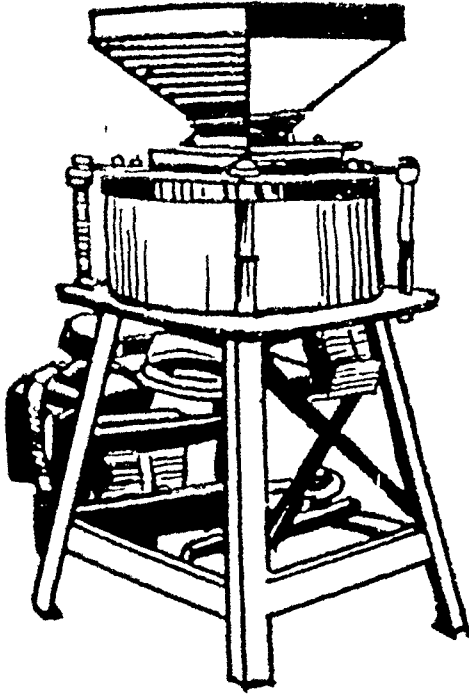
Best Compliments on
Holy Paryushan Parva

पर्वाधि
हमारी

पर्वाधिराज

पर्युषण पर्व पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :
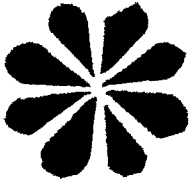
रतनचन्द सिंघी

राजीव सिंघी

नवीन सिंघी

अशोक सिंघी

दूसरा चौराहा

कुन्दीगर भैरूंजी का रास्ता

जयपुर

दूरभाष : 40918 ऑफिस

41175 निवास

पर्युषण महापर्व पर
हमारी हार्दिक शुभकामनायें

मोपेड हाउस

करीम मन्जिल, एम. आई. रोड
जयपुर – 302 001

लूना, हीरो मैजेस्टिक इत्यादि सभी प्रकार की
मोपेड की एसेसरीज
एवं सामान के विक्रेता
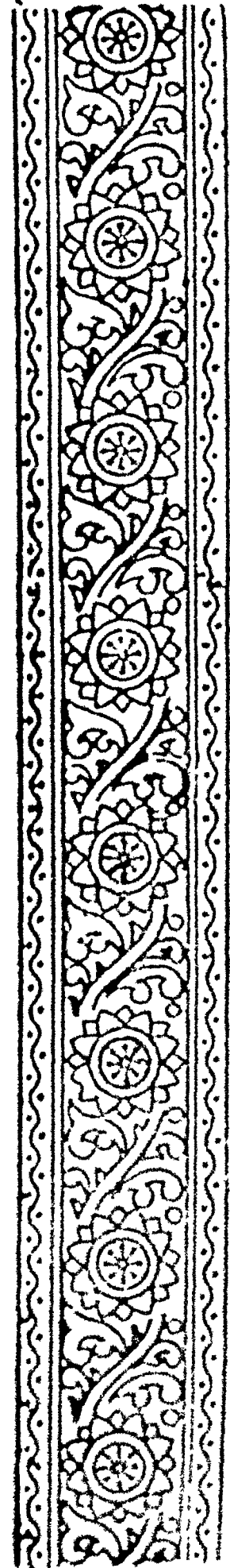
With best compliments from :

Phone : 65964

India Electric Works
J. K. Electricals

Authorised Contractor of :
GEC/KIRLOSKAR/VOLTAS/PHED/ETC.
Specialist in :
☐ Rewinding of Strip Wound Rotors & Motors ☐ Starters
☐ Mono-Blocks ☐ Transformers & Submersible Motors Etc.
Address :
PADAM BHAWAN,
STATION ROAD, JAIPUR-302 006

With best compliments from :

Phone : 47286

CRAFT'S

B. K. AGENCIES

MFG & EXPORTERS OF TEXTILE HAND PRINTING
& HANDICRAFTS

Borji Ki Haweli, Purohitji Ka Katla,
JAIPUR-302 003 (Raj.)

BED SPREADS ★ DRESS MATERIALS ★ WRAPAROUND
SKIRTS ★ CUSHION COVERS ★ TABLE MATS AND NAPKINS